राम दुलारी

वा

सदाचार की देवी

लेखक और प्रकाशक

बाबू सूरजभान साबिक़ वकील,

देवबन्द ज़िला (सहारनपुर)

(मन मोहनी नाटक, व्याही बहू, गृह देवी, जच्चा बच्चा,
विधवाकर्तव्य, जीवननिर्वाह, सतीसतवन्ती
आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता)

मुद्रकः—
त्रैलोक्यनाथ शर्मा,
जमुना प्रिन्टिंग वर्क्स,
मथुरा।

प्रथमावृत्ति १००० | १९२५ | मूल्य एक रुपया

* रामदुलारी *

सदाचार की देवी

१—सगाई की बात चीत।

स्त्री-वाह वह तो चालीस बरस का बुड्ढा है, उसके साथ तो मैं अपनी दुलारी को कभी भी न व्याहूं।

पुरुष-नहीं, चालीस बरस का तो नहीं है, हां ३० से ऊपर ज़रूर है।

स्त्री-अच्छा तीसही का सही, चाहे इससे भी कमती सही, पर क्या यह फूलसी नन्ही बच्ची ऐसे के साथ व्याहने जोग है।

पुरुष-फिर जब कोई अच्छा वरमिले ही नहीं तो क्या करें, जवान बेटी को कब तक घर में बिठा रक्खें, अबतो इसको आंख मीचकर कहीं धक्का ही देना होगा।

स्त्री-अच्छा जो धक्का ही देना है तो किसी ग़रीब के साथ व्याह दो, पर वर तो जोगम जोग हो। मेरी दुलारी को इस जेठ में १४ वां बरस लगा है, तुम बहुत से बहुत १६ बरस का वर ढूंढलो, १८ का ढूंढलो, हद से हद २० का ढूंढलो, इससे ज्यादा उमर के लोग को तो मैं अपनी बच्ची दूंगी नहीं।

पुरुष-बडे आदमियों के साथ रिश्ता जोड़ने से तो इज्ज़त बढ़ती ही है, कुछ घटती तो है नहीं, मैं तो यह समझूं हूं कि यह सम्बन्ध हो जायगा तो इन लड़कों की सगाई भी बीसों घरों से आने लग जायगी, नहीं तो आज कल हमें कौन पूछता है

स्त्री-मेरे लड़के कुंवारे भी रह जांयगे तो रहजाने दो, पर मुझे अपनी बेटी क़साई को सौंप कर इनका ब्याह कराना मंजूर नहीं है।

पुरुष-घर गृहस्थ की बातों में तिरिया हट से काम नहीं चला करता है।

स्त्री-मैं हट नहीं करती हूं, सच कहती हूं कि अगर किसी के बहकाये में आकर तुमने मेरी दुलारी की सगाई इस बुड्ढे से करदी तो एक छुरी तो मैं अपने पेट में घुसेड़ लूंगी और एक इस लड़की के पेट में घुसेड़ दूंगी, तुम्हें तो मैं क्याही कहूं।

इस प्रकार की यह बातें रामप्रसाद और उसकी स्त्री में रात के दस बजे होरही थीं। रामप्रसाद के पिता गंगास्वरूप काशीपुर में एक अच्छे धनी मानी पुरुष थे, ज़मीदारी और लेन देन करते थे, सुन्दरी उनकी एक लड़की थी, जो बहुत बड़े अमीर घर ब्याही गई थी, उसही के विवाह में गंगास्वरूप को इतना धन लगाना पड़ा था कि आगे को उसका लेन देन का व्यापार ही जाता रहा था, इस समय गंगास्वरूप का तो देहान्त हो चुका है और रामप्रसाद के तीन लड़के और एक लड़की में से बड़े लड़के कामताप्रसाद का विवाह भी होगया है।

इस अपने बड़े लड़के के विवाह की बाबत रामप्रसाद तो यह ही चाहता था कि १८ बरस की उमर में ही करूं और

किसी ग़रीब की सगाई लेकर थोड़े ही ख़रच में ब्याह लाऊं परन्तु उसकी स्त्री ने उसकी एक भी नहीं चलने दी थी। अव्वल तो उसने ज़िद करके एक बहुत बड़े धनाढ्य घर की सगाई लेली, फिर लड़के को ग्यारहवां बरस लगते ही विवाह का तक़ाज़ा शुरू कर दिया, उधर बेटी वाले की तरफ़ से भी ऐसा ही तक़ाज़ा शुरू होगया, जिससे लाचार होकर रामप्रसाद को तेरहवें ही बरस कामताप्रसाद का विवाह करना पड़ गया। ख़रच के बारे में भी रामप्रसाद की कुछ नहीं चल सकी थी अपनी स्त्री से लाचार होकर उसको तो अपनी इच्छा के विरुद्ध, बहुत ही ज़्यादा खरच करना पड़ा था, जिससे वह इतना ज़्यादा क़रज़दार होगया था कि विवाह को पांच बरस गुज़रने पर भी अब तक वह क़रजा बेबाक़ नहीं होसका था; बल्कि अबतो क़रज़ वाले ने डिगरी कराकर उसकी सारी जायदाद ही नीलाम पर चढ़ा रक्खी थी। यह ही कारण था कि राम-प्रसाद की हवा उखड़ गई थी और सोच ही सोच में उसकी आत्मा भी ऐसी ज़्यादा पतित होगई थी कि गुमानीलाल जैसे पुरुष के साथ अपनी लड़की की सगाई करने को तैय्यार हो रहा था।

बाबू गुमानीलाल काशीपुर से १५ मील के फ़ासले पर धरमपुर के रहने वाले बहुत बड़े धनाढ्य और ज़मींदार थे, साठ सत्तर हज़ार रुपये साल की आमदनी थी और इस समय ३९ साल की उनकी उमर थी। अभी एक ही महीना हुवा कि उनकी स्त्री का देहान्त होगया है तब ही से सैकड़ों आदमी उनके पीछे फिर रहे हैं कि किसी तरह हमारी ही कन्या की सगाई लेलें, परन्तु गुमानीलाल की इच्छा रामप्रसाद की लड़की रामदुलारी को ही ब्याहने की होरही है; कारण कि वह

उसके रूप सौंदर्य की बहुत कुछ तारीफ़ सुन चुका है। यह ही कारण है कि उसके आदमी तरह २ की बातें बनाकर रामप्रसाद को फुसला रहे हैं। यदि रामप्रसाद अपनी बेटी को बेचना चाहता तब तो कभी का यह सौदा बन गया होता, पर यहां तो इस बात का ज़िकर भी नहीं होसका है; इसही वास्ते जल्दी तै नहीं होपाया है।

रामप्रसाद और उसकी स्त्री में सगाई की यह बातें होते समय रामदुलारी जाग रही थी और चुपके ही चुपके यह सब बातें सुन रही थी, और बहुत ही ज़्यादा सोच में पड़ गई थी, जिससे उसको रात भर नींद भी नहीं आई थी। सुबह उठते ही वह अपने कुटुम्ब के चाचा की बेटी कमलावती के पास गई और सारा हाल सुनाकर कहने लगी कि तू चाची के द्वारा चाचा को कहला कर यह सगाई न होने दे।

कमला–ना बहन, उसके साथ तो मैं तेरी सगाई कदाचित भी नहीं होने दूंगी, वह तो बहुत ही खोटा आदमी है। हां धन बहुतेरा है, सो धनको लेकर क्या कोई फूंके, मैं तो उसही नगर में ब्याही हूं और उसकी सारी ही बातें जानती हूं। उसकी पहली बहू आठ आठ आंसू रोया करती थी और सूख कर कांटासी बनी रहा करती थी, आखिर रंज रंज कर उसने तो अपनी जान ही देदी।

दुलारी—उसको क्या दुख था ?

कमला–यह थोड़ा दुख था कि वह तो निरादरी सी घर में पड़ी रहा करती थी और बाहर उसका मालिक खुल्लमखुल्ला रंडियां बुलाता था, शराबें पीता था और जो चाहे कुकर्म किया करता था।

दुलारी-(कांप कर) अच्छी बहन मुझे ना सौंपियो ऐसे पापी के हाथ।

कमला-वह बेईमान तो मिट्टी भी खाता है, और भले घरों की स्त्रियों को बुला २ कर उनका धर्म भी भ्रष्ट करता है; आधा नीचे और आधा ऊपर धरती में गड़वाने लायक़ है वह पापी तो। नाशगये चंडाल ने दूसयों दासियां भी तो रख रक्खी हैं जो लोगों के घरों में जाजाकर स्त्रियों को फुसलाती फिरा करती हैं। मेरे यहां भी तो आने लगीं थी यह उसकी कुटनियां, पर मुझसे तो ज्योंही उन्होंने खुलना शुरू किया मैंने उनको एक दम धक्के देकर निकाल दिया, मेरे यहां तो फिर वह आई नहीं।

दुलारी-मैं तो साफ़ साफ़ कहे देती हूँ कि जो तुम लोगों ने मुझे उसही के हाथ सौंपनी चाही तो मैं तो अपनी जान खोदूंगी पर उसके यहां नहीं जाऊंगी।

कमला-नहीं ताऊ जी ऐसे नहीं हैं जो तुझे उस पापी के हाथ सौंप दें।

दुलारी-नहीं! बहन अब वह पहले जैसे नहीं रहे हैं, अव्वल तो जब से करज़ा उनके सिर होगया है तब ही से उनकी बातों में फ़रक़ आगया है और अब जब से जायदाद नीलाम पर चढ़ गई है तब से तो वह बिल्कुल ही बदल गये हैं।

कमला-अच्छा तो वह कैसे ही बदल गये हों पर यह सगाई तो मैं किसी तरह भी न होने दूंगी।

दुलारी-नहीं मानेंगे तो मुझे मरना तो आता है, फिर ब्याह सगाई किस की कर देंगे।

कमला—क्यों पागलों वाली बातें करती है, जा मुझ पर भरोसा कर के निश्चिन्त होकर बैठ।

मौक़ा पाकर तीसरे पहर कमलावती ने यह सब बातें अपनी मां से कहीं और ज़ोर देकर कहा कि पिता जी को कहकर जिस तरह भी हो सके यह सगाई न होने दे।

मां—सगाई तो न होने दूं पर मुझे तो यह डर है कि कल को दुलारी की मां हमको उलाहना देने लग जावेगी कि इनको मेरी बेटी का ऐसे बड़े घर ब्याहा जाना न भाया इसही से यह सम्बन्ध न होने दिया।

कमला—नहीं मां वह तो आप ही यह सगाई होना नहीं चाहती है।

मां—हां अब तो नहीं चाहती है पर पीछे हमारे ऊपर टोना धरने का तो उसको मौक़ा मिल जावेगा।

कमला—जो किसी की जान बचाने के वास्ते ताने भी सहने पड़े तो क्या हरज है और फिर दुलारी तो अपनी ही जान जिगर है।

मां—तू भी आज बच्ची ही बन गई है जो उस ज़रासी लड़की की बातों में आगई है, भला कहीं ब्याह सगाई के मामलों में बच्चों की सुनी जाती है और सच पूछो तो अब तो कलजुग ही आगया है जो ऐसी ज़रा २ सी लड़कियां भी अपने ब्याह सगाई के मामले में दख़ल देने लग गई हैं और जान पर खेल जाने का डरावा दिखाती हैं।

कमला—अच्छा दुलारी की बातों को जाने दे, पर तू ही बता कि क्या ऐसे महादुराचारी को लड़की देनी जोग है।

मां-बेटी इन मर्दों का दुराचार क्या और बेदुराचार क्या, यह तो सब ही ऐसे होते हैं।

कमला-पर मां उस जैसा तो कोई भी न होगा, वह तो बड़ा ही खोटा है।

मां-उनसे तो बुरा न होगा जो भङ्गनों और चमारियों तक को भी नहीं छोड़ते हैं और फिर भी बिरादरी के पंच बने रहते हैं, बेटी इन मर्दों की दूर बला, इन्हें कोई कुछ नहीं कह सक्ता है।

कमला-तो मर्द कैसे ही सही पर यह सगाई तो मैं होने नहीं दूंगी।

मां-क्यों, तुझे क्या ज़िद पड़ गई है इस बात की।

कमला-ज़िद क्या मैं तो साफ़ २ कहे देती हूँ कि जो दुलारी वहां ब्याही गई तो न तो मैं उसे बुलाउंगी और न उस के यहां जाऊंगी, कल को कोई मुझे उलाहना देने लगे, मैं पहिले ही से खोलकर कहे देती हूँ।

मां-क्यों ऐसा क्या बिगाड़ आगया है उनमें।

कमला-यह थोड़ा बिगाड़ है कि उसकी दासियां भले घरों की औरतों को फुसलाती फिरती हैं।

मां-फिर तू कोई दुनियां की ठेकेदार है, जो चाहे करैं।

कमला-अच्छा कुछ हो, पर मुझे उनका अपने यहां आना मंजूर नहीं है।

मां-क्यों कभी कोई तेरे पास भी आई थी क्या। साफ़ २ क्यों नहीं कहती है।

कमला—तुझे साफ़ २ तो कह दिया अब और क्या कहूं ।

मां—तो जूते न लगवाये अपने मर्दों से उन नाशगइयों को ।

कमला—क्यों उसको जूते न लगने चाहिये जिसने उनको भेजा था ।

मां—तो क्या इतना ढेठ हो गया है उस मूड़ी काटे का, देख लेना कोढी होकर मरा करते हैं ऐसे आदमी । ना जी मैं नहीं होने दूंगी यह सगाई, आज ही कहती हूं तेरे बाप से, वह तो ऐसा फटकारेगा दुलारी के बाप को कि धरती ही कुरेदता रह जावेगा, इस पचास बरस के बुड्ढे को लड़की देकर क्या हमें अपने घर को दाग़ लगाना है ।

२—कमला का पिता ।

रात को सब के सोजाने पर कमला की मां ने अपने पति से इस प्रकार बात छेड़ी ।

स्त्री—तुमने भी सुना तुम्हारी दुलारी धरमपुर वाले किसी करोड़पति सेठ से ब्याही जाने वाली है ।

मर्द—गुमानीलाल से, वह क्यों लेने लगा है हमारे घर की सगाई उसके साथ सगाई करनेको तो बड़े २ लखपती हाथ जोड़ते फिरते होंगे, तब रामप्रसाद की तो हक़ीक़त ही क्या है । और जो उसने यह सगाई ले भी ली तो उसकी टक्कर को कौन झेलेगा, वह तो राजा आदमी है, कोई ठट्ठा थोड़ा ही है ।

स्त्री—कुछ तो इन्तज़ाम कर ही लिया होगा उसकी टक्कर के झेलने का तुम्हारे भाई ने, पर कोई गुप चुप ही इन्तज़ाम किया होगा तबही तो तुम तक ख़बर नहीं होने दी है ।

मर्द-नहीं रामप्रसाद ऐसा आदमी नहीं है, बेशक वह क़रज़ में ज़रूर दब गया है, तोभी वह लड़की पर तो रुपया लेने वाला नहीं है।

स्त्री-वह तो तय्यार बैठा है, पर जेठानी कुछ गर्दन हिला रही है।

मर्द-अच्छा तो फिर होने दो हमें क्या ?

स्त्री-तुम को क्यों नहीं, साथ में तुम्हारी आबरू भी तो जावेगी।

मर्द-क्यों तुझे क्यों इतनी फिकर होगई है, साफ़ २ क्यों नहीं कहती।

स्त्री-सुना है उसका चाल चलन अच्छा नहीं है, रंडियां रखता है और घर क्रिस्तनों को भी बुलाता रहता है, ऐसे के साथ ब्याहे जाने से क्या सुख भोगेगी हमारी दुलारी।

मर्द—तो एक दुलारी क्या किसी से भी उसकी सगाई न होने दो तब बात है तुम्हारी तो। और एक वह ही क्या सब ही दुराचारियों की सगाई बन्द करा दो।

स्त्री—मेरा बस चले तो मैं तो कहीं भी सगाई न होने दूं ऐसे मूंडी काटों की।

मर्द-मर्द नहीं मानेंगे तो औरतें तो मानेंगी तुम्हारी सलाह को उनही की एक पंचायत कर धरो और हुकम चढ़ा दो कि जो कुशीला हो उसको कोई अपनी बेटी न ब्याहे।

स्त्री-तुम्हें तो सूझ रही है मज़ाक और मैं कह रही हूं सतभाव में, सच कहती हूं वह बड़ा दुष्ट है, उसके साथ दुलारी की सगाई मत होने दो, नहीं तो पछताओगे।

मर्द-मैने तो मज़ाक की कोई भी बात नहीं कही, मैं भी तो सत्‌भाव में ही कह रहा हूं कि स्त्रियों की पंचायत करके एक दम हड़ताल कर दो और मर्दों की शकल तक देखना बंद करदो, क्यों कि मर्द तो बहुत करके कुशीले ही निकलेंगे, अब तो भंगी चमार तक हड़ताल करने लग गये हैं, तुम भी करलो, तुम क्यों चुप बैठी हो, यह तो कलजुग है इस कारण अबतो ऐसे ही ऐसे काम होने हैं।

स्त्री (हंसकर) यह कलजुग हुवा कि सतजुग जो हम यह चाहती हैं कि मर्द भी सब सुशीले ही होजावें और जो कुशीले हों उनको कोई भी अपनी लड़की न व्याहवे ।

मर्द-और यह भी तो कहदो कि कुशीले पुरुषों की स्त्रियां भी अपने मर्दों को छोड़ देवें।

स्त्री--चाहिये तो ऐसा ही, जब मर्द अपनी कुशीली स्त्री का मुंह देखना नहीं चाहते तब स्त्रियां ही क्यों अपने कुशीले मर्द का मुंह देखें।

मर्द--और मार भी क्यों न डालें यह भी तो कहदो ।

स्त्री--तुम्हें तो हंसी हंसी की बातों में गुस्सा आने लग जाता है ।

मर्द--तो पागल गुस्से की तो तू बात ही कर रही है, कहीं मर्द औरत बराबर हो सक्ते हैं, मर्द अपनी ठौर हैं और स्त्री अपनी ठौर, दोनों का एक नियम कैसे होसक्ता है,

स्त्री--शील का नियम तो दोनों के वास्ते एक ही होना चाहिये ।

मर्द--(गुस्से में भरकर) तभी तो कहता हूं कलयुग आगया है, एक वह भी समय था जब स्त्रियां अपने पति की चितापर बैठकर जीती जल मरती थीं और एक यह भी समय है कि मर्दों को कुशील का दोष लगाकर जीते ही की शकल देखना नहीं चाहती हैं।

स्त्री--तुमने तो कहीं की बात कहीं लेडाली, अब मैं कोई सारी दुनियां का प्रबंध बांधने थोड़ा ही बैठी हूं, मैं तो इस अपनी दुलारी की बात कहती हूं कि उसकी सगाई उस नीच से मत होने दो।

मर्द--हम नहीं समझते वह किस बात में नीच होगया है, बड़े २ इज़्ज़तदार तो सुबह उठकर उसके आगे सिर निवाते हैं, अगर ऐसे आदमी भी नीच होजावेंगे तो फिर भलामानस ही कौन रहजावेगा। सच मानो ऐसे भागवान पुरुषों के तो दर्शन से ही बेड़े पार होजाते हैं तब वह नीच कैसे हो सक्ते हैं। वह तो महा पुन्यवान, बिरादरी का सर्दार और ज़िले भर की चादर है, रही ऐश इशरत की बात, सो अमीर लोग कियाही करते हैं, धन है काहे के वास्ते।

स्त्री--ऐश करने को कौन मना करता है, बाग़ लगावें, महल चिनावें, अच्छे से अच्छा खावें पहने, मुलकों २ की सैर कर आवें, खुशियां मनावें, पर रंडियां रखना और भले घरों की बहू बेटियों को फुसलाते फिरना, यह कोई ऐश थोड़ाही है, यह तो महा नीचों का काम है।

मर्द--किस सती सतवन्ती को फुसलाता फिरता है वह, जो कुचाल हैं वह ही आती होंगी उसके फुसलाये में, और

आती क्या होंगी मुफ्त, उसके रुपये के लालच में आती होंगी, अब तू ही बता कि नीच वह औरतें हैं जो यों अपना काला मुंह कराती हैं या वह है जो उन को भरपूर रुपये देता है।

स्त्री—वह औरतें भी नीच हैं जो इस तरह लालच में फंस जाती हैं और वह मर्द भी नीच हैं जो उन्हें रुपया देकर फंसाते हैं।

मर्द—तब ही तो कहता हूं कि स्त्रियों की पंचायत करके जो जो मर्द कुशीले हों सब को काला मुंह करके निकलवादो, यह उलट फेर तो होना ही है इस कलजुग में, पहले मर्दों का राज था तो अब औरतों का होना चाहिये।

स्त्री—नहीं मालूम मर्दों को चिड़ क्यों लगती है ऐसी बातों से, हम तो साफ़ कहती हैं कि जो स्त्री कुशीली हो उस को भी नाक चोटी काटकर घर से निकाल दो और जो मर्द कुशीला हो उस के वास्ते भी कोई ऐसा ही दंड तजवीज़ हो।

मर्द—तो यही मतलब हुआ ना कि औरत मर्द दोनों बराबर हो जावें।

स्त्री—पाप पुन्य तो दोनों को बराबर ही लगता है, परमात्मा के दरबार में तो अंधेर हो नहीं सकता है इस वास्ते वहां तो दंड भी दोनों को बराबर ही मिलना होगा, फिर यहां भी कुशीली स्त्री और कुशीले पुरुषों से बराबर घृणा क्यों न की जावे।

मर्द—तो कल को यह भी कहने लग जाना कि जिस प्रकार मर्द अपनी स्त्री के मरने पर दूसरी ब्याह लाते हैं इसी प्रकार स्त्रियां भी किया करें।

स्त्री—ऐसा तो होने ही लगा है।

मर्द—तो फिर यह भी करने लगो कि जिस प्रकार मर्द एक स्त्री के जीतेजी दूसरी तीसरी ब्याह लाता है इसी प्रकार स्त्रियां भी एक साथ कई कई पति कर लिया करें।

स्त्री—नहीं, मर्दों की तरह स्त्रियां कुशीली नहीं हैं जो ऐसा करने लगें, किन्तु वह तो यह ही कहती हैं कि जिस प्रकार स्त्री एक पति के जीते जी दूसरा पति नहीं कर सकती है इसी प्रकार मर्द भी एक स्त्री के जीतेजी दूसरी स्त्री न कर सके।

मर्द—क्या कहने हैं तुम्हारे, आज तो तुमने बड़े २ पंडितों को भी मात देदी।

स्त्री—यह मज़ाक़ की बातें तो होलीं, अब तुम मेरी बात पर ध्यान दो और जिस तरह भी होसके दुलारी की सगाई वहां मत होनेदो।

मर्द—अच्छा तो असली बात बता, तुझे क्यों इतनी लग हो रही है इस बात की।

स्त्री—हमारी कमला बहुत ख़याल कर रही है इस बात का, वह तो यहां तक कहती है कि जो वह ब्याह होगया तो न तो मैं दुलारी को अपने यहां बुलाऊं और न उसके यहां जाऊं।

मर्द—तो कुछ सबब भी इस बात का।

स्त्री—सबब क्या होता, नाश गया डोरे डालता फिरै है भले घरों की बहू बेटियों पर, इनके यहां भी तो अपनी कुटनियां भेजी थीं, पर इसने तो धक्के देकर निकालदीं।

मर्द--अच्छा तो इतना बढ़गया है वह हरामज़ादा। अपने मर्दों को खबर न करी इसने, नहीं तो वह तो ऐसे ज़हरी हैं कि साले की सारी अमीरी एक दम में निकाल देते, अब भी देख लेना जो उस बेईमान के बच्चे को बीच बाज़ार भंगियों से जूतियों न पिटवाया तो हमें ही क्या जानेगा।

स्त्री--अब गई बीती बात को कुरेदना क्या कुछ अच्छा है, तुम कमला के मर्दों से ज़िकर करोगे वे न मालूम क्या से क्या समझ जावें और क्या से क्या कर बैठें, इस वास्ते इस बात पर तो अब मिट्टी डालो, पर दुलारी की सगाई वहां न होने दो।

मर्द—नहीं दुलारी की सगाई अब वहां नहीं हो सकती है।

अगले ही दिन कमला का पिता माधोलाल रामप्रसाद से मिला और कहा:—

माधोलाल—भाई लड़की जवान हो गई इसके ब्याह का भी कुछ फ़िकर किया कि नहीं।

रामप्रसाद—मुझे तो अभी तक कोई वर मिला नहीं, कोई तुम्हारी निगाह में हो तो बताओ।

माधोलाल—मैं भी तलाश करूंगा, पर हां यह कैसी चर्चा हो रही है कि तुम उसकी सगाई गुमानीलाल से करने वाले हो।

रामप्रसाद—नहीं करने वाला तो नहीं हूं पर लोग ज़ोर ज़रूर दे रहे हैं कि वहां करदो।

माधोलाल—नहीं मालूम क्या मिलता है इन पाजियों को किसी भले आदमी को बदनाम करने में। देखो यह हरामज़ादे

तुम को तो यह सलाह देते हैं कि वहीं सगाई करदो और बाहर लोगों में यह उड़ाते फिर रहे हैं कि राम प्रसाद ने सात हज़ार रुपये ठहरा लिये हैं। सच मानो मेरी तो लड़ाई होगई होती कई आदमियों से।

रामप्रसाद—लड़ने की क्या ज़रूरत है, बकनेदो उन बेई-मानों को, जब मैं वहां सगाई ही नहीं करूंगा तो वे आपही झूठे पड़ जावेंगे।

माधोलाल—हां यह ही मेरी सलाह है, वहां हर्गिज़ सगाई नहीं करनी चाहिये नहीं तो हम ख्वामख्वाह बदनाम होजावेंगे, तुम जानो यह दुनिया है किस किस का मुंह पकड़ते फिरेंगे।

३--सगाई के वास्ते जाल।

अब माधोलाल ने अपनी स्त्री से जाकर कह दिया कि वहां सगाई नहीं होगी मैंने राम प्रसाद को रोक दिया है, कमला-वती ने जब यह बात सुनी तो वह तुरन्त ही दुलारी के पास जाकर यह खुशखबरी सुना आई, और अन्य भी अनेक स्त्रियों से कहती फिर गई कि गुमानीलाल का चाल चलन खराब होने के कारण मैंने उस से दुलारी की सगाई नहीं होने दी है, फिर दो चार दिन पीछे जब सुसराल गई तो वहां भी यह ही बात गाई। होते २ यह बात गुमानीलाल के भी कानों तक पहुंच गई।

गुमानीलाल उन दिनों नगर का औनरेरी मजिस्ट्रेट था, यह बात सुनते ही उसने एक बदमाश को बुलाकर कमलावती

के पति राधेलाल से उसकी बेतू करादी और उस बदमाश के बदन पर लाठियों की मार के निशान कराकर राधे लाल और उसके नौकर पर फ़ौजदारी में दावा करा दिया, मुक़दमे का समन पहुचने पर राधेलाल और उसके पिता को बड़ा भारी फ़िकर हुआ और वह घबराये हुए गुमानी लाल से मिलने को दौड़े परन्तु उसने दूर से ही टकासा जवाब देदिया कि जबतक यह मुक़दमा है तब तक तो मैं दोनों तरफ़ वालों में से किसी से भी नहीं मिलूंगा।

अब दूसरी बात सुनो कि जिस डिगरी में रामप्रसाद की जायदाद नीलाम पर चढ़ रही थी वह डिगरी भी गुमानीलाल ने ख़रीद करली और मामला तै करने के वास्ते रामप्रसाद को बुला भेजा, न्यादरसिंह कारिन्दा जो रामप्रसाद को बुलाने आया वह जिस तिस प्रकार सैर तमाशे के बहाने से रामप्रसाद के साथ उसके दोनों छोटे बच्चों को भी लिवा लेगया। सगाई की बाबत रामप्रसाद अपनी स्त्री की तो तसल्ली कर गया कि अव्वल तो वहां इस बात का ज़िकर ही नहीं आवेगा और जो आवेगा भी तो साफ़ इनकार कर दिया जावेगा परन्तु दुलारी का मन नहीं मानता था। वह बहुतेरा अपने मन को समझाती थी पर उसके हृदय के अंदर से यहही आवाज़ आती थी कि अबतो पिताजी बिना सगाई करे नहीं आ सक्ते हैं, इस वास्ते कभी तो उसके मन में आता कि कूये में डूब कर सारा ही खटका मिटा दूं कभी मन को समझाती कि नहीं अभी नहीं मरना चाहिये किन्तु जब उसकी बारात आले और फेरों के वक्त दोनों तरफ़ के आदमी इकट्ठे होलें तब उनके सामने ही पेट में चाक़ू देकर मरना चाहिये जिस से कुछ तो इन पुरुषों को शरम आवे और अपने अत्याचारों से बाज़ आवें। फिर उसको

ख़याल आता है कि पुरुष तो ऐसे पाषाण हृदय हो रहे हैं कि चाहे हज़ारों और लाखों स्त्रियां भी अपनी जान खोदें तो भी ज़ुल्म करने से न हटें, हां, यदि इन पुरुषों की छाती में हृदय होता, यदि इन में मनुष्यपने का कुछ भी भाव रहता तो क्या मृतक पति के साथ स्त्रियों को जीती जलमरती देखकर पुरुषों को कुछ भी लज्जा न आती, किन्तु, वह तो स्त्री के मरने पर बेखटके दूसरी ब्याह लाते हैं और कुछ भी नहीं लजाते हैं। अब भी जब से सती होना सर्कार ने बन्द कर दिया है, स्त्रियां तो बाल विधवा होकर भी पति के नाम पर धूनी रमा कर बैठ जाती हैं और सारी उमर रंडापे में ही काट कर दिखाती हैं, और पुरुष यह सब कुछ देखते हुए साठ साठ सत्तर सत्तर बरस का बुड्ढा होने पर भी स्त्री के मरते ही दूसरी ब्याह लाते हैं और कुछ भी नहीं शरमाते हैं, यहांतक कि घर में बेटे, पोते की जवान बहू वा बेटी पोती तो रंडापा काट रही हैं और बुड्ढे बाबा मौर बांधकर एक छोटी सी कन्या ब्याह लाते हैं और कुछ भी नहीं लजाते हैं।

ऐसी दशा में इन हृदय शून्य पुरुषों के सामने कटारी मार कर मर रहना तो अंधे के आगे रोने और अपने नैन खोने के समान बिल्कुल ही निरर्थक है। मुझको तो अब इस स्वार्थी संसार को लात मार कर और किसी निर्जन स्थान में जाकर राम नाम की धूनी ही रमा लेनी चाहिये। फिर जोश में आकर सोचती कि नहीं अपनी इन करोड़ों बहनों को इन निर्दई पुरुषों के हाथों महा त्रास भुगतते छोड़ जाना भी तो स्वार्थ साधन ही होगा। इस कारण मुझको तो अपना जीवन स्त्री जाति के उद्धार के वास्ते ही अर्पण करदेना चाहिये और निर्भय

होकर इस ही में लग जाना चाहिये। इस प्रकार दुलारी के चोट खाये दिल में अनेक संकल्प उठते थे और बिलाय जाते थे।

रास्ते में न्यादरसिंह ने रामप्रसाद से बातें करते हुए गुमानीलाल की तारीफ़ों का ऐसा पुल बांधा, ऐसा नेक सदाचारी और धर्मात्मा उसको सिद्ध करके दिखाया कि रामप्रसाद को भी यक़ीन आगया और जो जो बुराइयां उसकी सुनी थीं उन सब को झूठ मानने लग गया। चलते २ आख़िर यह लोग गुमानीलाल के मकान पर पहुंच गये। रास्ते में न्यादरसिंह ने रामप्रसाद को इस बात का भी यक़ीन दिला दिया था कि अपने यहां कोई बच्चा न होने से गुमानीलाल दूसरों के बच्चों को देखकर बहुत ही ज़्यादा खुश होता है और लाड़ प्यार करने लग जाता है। इस कारण रामप्रसाद अपने बच्चों समेत ही गुमानीलाल के पास गया, जिनको देखकर गुमानीलाल बहुतही प्रसन्न हुआ, बहुत ही प्रेम दिखाया और बहुत कुछ मेवा मिठाई मंगायी। फिर डिगरी की बात छिड़ी जिसपर रामप्रसाद ने अपनी सारी ही व्यथा सुनाई। गुमानी लाल ने भी बहुत कुछ करुणा जताई और अन्त को बहुत कुछ बात चीत होने पर यह बात तै पाई, कि रामप्रसाद पच्चीस बरस तक अपनी जायदाद की आधी आमदनी गुमानीलाल को देता रहे, इसही से डिगरी बेबाक़ हो जावे।

इतने में हाथी तय्यार होकर आगया और गुमानीलाल रामप्रसाद के बच्चों को साथ लेकर सैर को चल दिया और सब से पहिले उनको एक अंग्रेज़ी दूकान पर लेजा कर उनके वास्ते अंग्रेज़ी पोशाकें ख़रीदीं, और वहीं उनको पहिनादीं। फिर दूसरी दूकान पर जाकर बढ़िया २ खिलौने मोल ले दिये और

कम्पनी बाग़ और नहर की झाल दिखा कर घरले आया।

अब कमलावती के घर की सुनिये कि इन बेचारों के यहां तो सोच फ़िकर में चूल्हा भी नहीं चढ़ता था, सारा कुटुम्ब इस ही तदबीर में फिरता था कि किसी तरह राज़ीनामा हो जाय। यह लोग तो उस नालिश करने वाले बदमाश की मिन्नत खुशामद भी करते थे और सौ दोसौ रुपया भी देना चाहते थे, पर वह एक नहीं सुनता था और मुक़दमा लड़ाने का ही डर दिखाता था। आखिर जब उसपर बहुत दबाव डाला गया तो उसने साफ़ साफ़ खोल दिया कि यह नालिश तो गुमानीलाल ने ही कराई है और उसही को फ़ैसला करने का अख़्तियार है। इन लोगों ने तो उसकी यह बात झूठ ही समझी पर जब कमलावती ने सुनी तो वह सहम गई और बुड़ बुड़ा २ कर कहने लग गई कि हो नहो यह तो दुलारी की ही सगाई का सारा फ़िसाद है। पर इस में हमारा क्या मतलब है, दुलारी की सगाई उसके मां बाप करेंगे या हम। मेरे तो बाप से भी उनको छे सात पीढ़ी का फ़रक है, न सलाह न मशवरा न बात न चीत, भला फिर बेमतलब हमें क्यों फांसा?

बहू की यह बातें सुनकर उसकी सास ने अपने पति से साफ़ २ कह दिया कि यह तो सारे बीज इस बहू के ही बोये हुऐ हैं। इस ही को बैठे बिठाये नचनची उठी थी और सारे में कहती फिर गई थी, कि गुमानीलाल तो दुराचारी है इस ही कारण मैंने दुलारी की सगाई उससे नहीं होने दी है।

रतनलाल-(राधेलाल का बाप) दुलारी कौन?

स्त्री-कोई रामप्रसाद है इसका ताऊ, कुन्बे में बहुत दूर

पार, दुलारी उसकी लड़की है जिसकी सगाई गुमानीलाल से होती थी। बस बीच में यह टमक पड़ी और उसको बदमाश, रंडीबाज़ और ख़बर नहीं क्या २ बताकर सगाई न होने दी।

रतनलाल-हो हो ऐसा ढेठ इस बहू का जो ऐसे बड़े इज्ज़तदार में भी ऐब निकाल दिये। इतनी बेशर्मी, ऐसी निर्लज्जता हाः भले घरों की बहू बेटियों की यह बातें, (सिर में दुहत्थड़ मारकर) फूट गई हमारी क़िस्मत तो जो ऐसी बहू आई, भला पूछो तो ज़रा इससे, कौनसा ऐसा साधू सन्त वर ढूंढा है इसने अपनी बहन के वास्ते। गुमानीलाल जैसा लायक़ वर तो इसकी बहन को सात जनम में भी नहीं मिलैगा, ऐसा नेक तो आदमी ही होना मुश्किल है। आज दिन जो इज्ज़त गुमानीलाल की है वह किसको नसीब होसकती है, पुन्यवान जीव है, भगवान की सब तरह दया है, अच्छे २ धुजाधारी सुबह उठकर प्रणाम करने आते हैं और पैर चूमकर जाते हैं।

स्त्री-यों तो है ही, वह तो राजा आदमी है, और वह बेचारा तो धर्म कर्म में भी सब कुछ लगाता है। देखलो कैसा भारी मंदिर बनवाया है, सदाव्रत भी लगा रक्खा है जहां हज़ारों कंगला रोटी खाता है। अब सुना है मंदिर की प्रतिष्ठा भी करावेगा, उसमें भी लाखों ही लगावेगा। यह ही हुवा करता है मर्दों का धरम करम तो, और क्या मर्दों से कहीं शील पल सक्ता है, यह तो औरतों ही के वास्ते फ़रमाया है।

रतनलाल-राधे की बहू अब मर्दों को ही शीलवान बनावेगी। उनको तो लँहगा पहनाकर घर में बिठावेगी और उनकी पगड़ी स्त्रियों के सिर पर धरकर बाहर लेजावेगी।

स्त्री-आज कल की बहू बेटियों की ज़बान अपने बस में थोड़ा ही होती है, यह, तो जो मन में आया बकने लग जाती है और फिर पीछे पछताती हैं। अब तो वह भी आठ आठ आंसू रो रही है और अपने किये को पछता रही है। भगवान हमारे लड़के को बचादे इस आफ़त से, हमतो इतना चाहते हैं और हमें क्या मतलब है, कोई भला होगा तो अपने वास्ते और बुरा होगा तो अपने वास्ते।

रतनलाल-उसका तो कुछ फ़िकर नहीं है, जो क़िस्मत में होगा हो रहेगा पर इसने तो हमें भले मानसों में मुंह दिखाने जोग नहीं रक्खा, और किसी के बुरा कहने से क्या ऐसों की ब्याह सगाई रुक सक्ती है। वह चाहें तो दिन के दिन सौ ब्याह करासक्ते हैं।

स्त्री-ब्याह की तो यूं लो कि हमारे यहां बिलासपुर में वह है नहीं, हीरालाल हीरालाल जो सदा रंडी के यहां पड़ा रहता है, वहीं खाता है, वहीं पीता है, कोई कहै वह मुसलमानी है, कोई कहै भंगन है, कोई कहै चमारी है। घर की औरत बेचारी अपने बाप के यहां पड़ी रहती थी जो पार साल ही तो मरी है, पर यह देख लो कि उस औरत के मरते ही बीसयों ही जगह के लोग सगाई करने को ढूक पड़े थे। कई ने तो मुझे आ आ कर कहा था कि हमारी ही लड़की की सगाई करादे। आखिर बीजापुर वाले कृपाराम की लड़की को सगाई रक्खी गई। अब देख लो कैसा बड़ा घर है कृपाराम का जिसने ऐसे के साथ सगाई करी, सो मर्दों में यह ऐब थोड़ा ही देखे जाते हैं। बेटी वालों को तो जैसे तैसे वर मिलते भी मुश्किल हो जाते हैं, पर

ख़ैर निकल गया इस बहू के मुंह से, अभी बच्ची ही तो है, वह क्या जाने इन बातों को।

इस प्रकार की बातें होकर रतनलाल बाहर आया और कमला के पिता माधोलाल को भी यह सब हाल सुनाया जो मुक़द्मे की बात सुनकर ही यहां आया था। यह बातें हो ही रही थीं कि रामप्रसाद भी इधर आ पहुंचा और मुक़द्मे की बात पूंछने लगा।

रतनलाल–मुक़द्मा बाबू गुमानीलाल की कचहरी में है जो एक देवता आदमी है, इस ही वास्ते कुछ ज़्यादा फ़िकर की बात नहीं है।

रामप्रसाद–वह तो सचमुच ही देवता है।

माधौलाल–यहां तो मैं भी जिधर जाता हूं, उसही की तारीफ़ सुनता हूं और पछता रहा हूं कि क्यों मैंने तुमको दुलारी की सगाई उसके साथ करने से रोका। ऐसा वर हमारी लड़की को कहां मिल सकता है, पर अब तक क्या वह ख़ाली रहा होगा?

रामप्रसाद–नहीं सगाई तो उसने अभी तक कोई नहीं ली है।

माधौलाल–तो भाई चूकोमत, जो लड़की के भाग से वह हमारी सगाई लेले तो बहुत ही अच्छी बात हो।

रतनलाल–ऐसा उत्तम वर तो चिराग़ लेकर ढूंढने से भी नहीं मिल सका है। हमारी समझ में तो कोशिश कर देखो,

जो लड़की का नसीब ज़ोर करैगा तो मंजूर भी कर ही लेगा। कहो तो बिध लगाऊं इसकी, मेरा तो बेचारा बहुत ही लिहाज़ करता है।

रामप्रसाद-अभी मैं कुछ नहीं कह सक्ता हूं इस मामले में।

माधौलाल-बेशक जल्दी करना तो ठीक नहीं होता है, पर जो उसने कहीं की सगाई लेली तो फिर कुछ भी नहो सकेगा।

रामप्रसाद-बात यह है कि अमीर के साथ सगाई करने में लोग बिन कारण भी कलंक लगाने लग जाया करते हैं।

माधोलाल-ऐसी तैसी उन सालों की, हलक़ में से जीभ निकाल डालूं जो कोई सांस भी निकाले। भाई साहब जहां चिहँट होती है वहीं मक्खी बैठती है। जब हम पाक साफ़ हैं तो फिर हम को कौन दोष लगा सक्ता है।

रामप्रसाद-अच्छा जब तुम्हारी यह ही मर्ज़ी है तो मुझे ही क्या उज़र हो सक्ता है, पर एक बार घर चलकर सब से सलाह करलो पीछे जो चाहे सो करो।

इस तरह इन में यह बात हो ही रही थीं कि कमलावती ने रामप्रसाद को अन्दर बुला भेजा और राज़ी खुशी पूछने के बाद दुलारी की सगाई का ज़िकर छेड़ा।

कमला-ताऊजी दुलारी की सगाई तो जो इस गुमानीलाल से होजाय तो बहुत अच्छा हो जो यहां पीपल मुहल्ले म रहता है, पर नहीं मालूम वह हमारी सगाई क़ुबूल भी करै कि नहीं।

रामप्रसाद--बेटी तेरी ताई तो तेरा ही नाम लेकर उसमें सौ ऐब निकालती है ।

कमला--उस वक्त मैं एक दूसरे आदमी को समझ गई थी जो सीतला मुहल्ले में रहता है, वह तो बहुत ही बुरा आदमी है। पर यह पीपल मुहल्ले वाला तो बेचारा बहुत ही नेक है । राज करेगी हमारी दुलारी जो उन्होंने सगाई मंजूर करली तो, वह तो सच पूछो साधू ही है, चाल चलन भी ऐसा अच्छा है जैसे सोने में सुहागा, ऐसा वर तो ताऊजी ढूंढा भी नहीं मिलेगा। जो तुम कहो तो मैंतो आज ही उसकी बूआ के पास जाकर सारी बात ठीक कर आऊं ।

रामप्रसाद--तेरी ताई से पूछे बिन मैं अभी कुछ नहीं कह सकता हूं ।

कमला-पर जो उन्होंने कहीं की सगाई लेली तो हम देखते ही रहजावेंगे ।

इस प्रकार की बातें कर करा कर जब रामप्रसाद डेरे पर आया तो देखा कि उसके दोनों लड़के अंग्रेज़ बच्चे बने बैठे हैं । आगे उनके बढ़िया २ खिलौने रक्खे हैं, वह यह सब मामला देखकर हैरान होही रहा था कि चट न्यादरसिंह बोल उट्ठा कि देखो मैं कहता नहीं था, कि गुमानीलाल को बच्चों के साथ कैसा प्रेम है । वह जिस किसी के भी बच्चे को साथ ले जाता है ख़ाली नहीं आने देता है । भाई सच तो यह है कि अमीर तो बहुतेरे देखे पर इस जैसा नेक नहीं देखा । अमीर लोग रंडियां रखते हैं, नाच मुजरा कराते हैं, शराब पीने लग जाते हैं और भी सौ तरह की शैतानी मचाते हैं, पर इस के

यहां क्या मजाल है जो कोई नाम भी लेदे इन बातों का, यह तो सच मानों साधु है किसी जन्म का।

रामप्रसाद—तो मुन्शी जी मुझसे ऐसा क्या वास्ता था जो बच्चों को इतनी चीज़ें ख़रीद दीं ?

न्यादरसिंह—तुम से क्या वास्ता होता, उस को बच्चों के साथ प्रेम है इस वास्ते लेदीं, और यह तो उसके घर आये थे वह तो रस्ते चलतों को लेदेता है सब कुछ।

घर आकर रामप्रसाद ने अपनी स्त्री को यह सब हाल सुनाया और गुमानीलाल का बहुत ही बड़ा जस गाया। बच्चों ने भी खुश हो होकर अपना सब सामान दिखाया। इन सब बातों से स्त्री के दिमाग़ ने भी चक्कर खाया, यहां तक कि अब वह उलटा रामप्रसाद को ही उलाहना देने लग गई कि जब तुमने अपनी आंखों देख लिया है कि वह देवता आदमी है तो तुम सगाई क्यों न कर आये, और फिर कमला के ससुर क्या कोई ग़ैर हैं जो खोटी सलाह देते, तुमने बहुत भूल करी जो उनका भी कहना नहीं माना।

४—सर्जूपांडा।

रामदुलारी अब छिप छिप कर अपने माता पिता की बातों को नहीं सुनती फिरती है और न इस बात की कुछ परवाह ही करती है कि मेरी सगाई की बाबत अब क्या हो रहा है। उसने तो निश्चय कर लिया है कि आजन्म कुंवारी रहूंगी

और स्त्रियों को पुरुषों के अत्याचार से बचाऊंगी, अब तो वह हर वक्त इस ही विचार में रहती है और पागल सी हो गई है। इन ही विचारों में मग्न होकर वह एक दिन छत पर घूम रही थी कि उसके कान में किसी स्त्री के चिल्लाने की आवाज़ आने लगी "अरे हायरे मार डाला रे बेदर्दी ने, हाय, हाय, हाय, अरे मेरी तो जान ही निकल जायगी रे, अरे कोई छुड़ाओ रे लोगो इस कसाई से"। इस आवाज़ के सुनते ही दुलारी छत ही छत दौड़ी गई और वह स्त्री एक पुरुष के हाथों पिटती हुई नज़र आई। गली मुहल्ले के लोग भी इस आवाज़ को सुनकर दौड़े आते थे। पर यह देखकर कि स्वयम पति ही अपनी स्त्री को पीट रहा है वापस लौट जाते थे। कोई कहता था कि औरत की कोई बद-माशी देखी होगी जिससे ऐसा बेदर्द होकर पीट रहा है। दूसरा कहता था नहीं औरत तो बहुत नेक है, यह तो मर्द ही भंगड़ जंगड़ है, कमाता धमाता कुछ है नहीं, औरत बेचारी ने घर के ख़र्च के वास्ते छेड़ दिया होगा, जिससे चिड़कर मारने लग गया होगा। तीसरा कहता कि नहीं जी ख़र्च के वास्ते वह बेचारी क्या कहती इस पाजी को, वह तो चक्की पीस-कर और तेरी मेरी टहल करके आप ही उसको खुलाती है साला भंग चरस के वास्ते उससे कोई ज़ेवर मांगता होगा और वह नहीं देती होगी तब ही पीट छेत रहा होगा॥

चौथा-ज़ेवर ही तो नहीं रहा है उस बेचारी के पास जिससे मार खा रही है।

इस प्रकार की बातें करते हुये यह लोग चले जाते थे और उस स्त्री के बचाने का कोई भी उपाय नहीं करते थे। परन्तु दुलारी से कब चुप रहा जासक्ता था, पागलसी तो वह हो ही

रही थी, धमसे कोठे पर से कूद कर उनके बीच में आपड़ी और उठकर ललकार कर बोली कि मैं आपहुंची हूं इसकी रक्षा के वास्ते, ख़बरदार अब इसको कोई नहीं मार सक्ता है।

सर्जूपंडा-हटजा लड़की, हटजा बीचमेंसे, नहीं तो इसके साथ तेरा भी भुर्ता हो जावेगा, देखो आज सुबह से बिल्कुल भी नशा पानी नहीं हुवा है जिससे जानसी निकली जारही है। पर इस बेईमान की बच्ची को देखो कि चार आने के पैसे भी निकाल कर नहीं देती है। अच्छा तो कन्या तू ही दे दे चार आने के पैसे। तू तो साक्षात देवी ही है और मेरी जान बचाने के वास्ते ही आकाश से उतर कर आई है।

इतने हीमें वहां बहुत लोग इकट्ठे होगये जिनके द्वारा दुलारी ने दूध और हलदी मँगाकर उस स्त्री को पिलाई।

पांडेजी-देवी, इन धर्म की मूर्तियों से मुझे भी एक ठनकता हुवा रुपया लेदे जिस से आजका नशा पानी होजावे, और मेरी जान बचजावे। मैं भी असली शुक्ल ब्राह्मण हूं और देवता का इष्ट रखता हूं, जो चाहूं सो करा सक्ता हूं।

इतने में नगर भर में धूम मच गई कि सर्जू पांडे के घर आकाश से उतर कर देवी आई है। इस ख़बर के सुनते ही सारा शहर टूक पड़ा और वहां मेलासा जुड़गया।

दुलारी-लोगो यह सती सतवन्ती पांडे की स्त्री अपने इस दुष्ट पति के हाथ से कैसे २ त्रास भोग रही है और तुम लोगों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती है, तुम लोग कुछ भी उपाय इसकी रक्षा का नहीं करते हो और इसको बिल्कुल ही एक मामूली सी बात समझते हो।

कई पुरुष-देवी, इसमें हम क्या उपाय कर सक्ते हैं, पति पत्नी के बीच में हम क्या दख़ल देसक्ते हैं ?

दुलारी-तो क्या पति को यह अधिकार है कि वह क़सूर बिन क़सूर इस प्रकार बेदर्दी के साथ अपनी स्त्री को मार सके और कोई भी उसको किसी प्रकार की रोक टोक न कर सके ?

एक-अधिकार तो कुछ भी नहीं है। हमारे ही गांव की बात है, एक आदमी ने इस ही तरह अपनी औरत को बेदर्दी से पीटा था, थानेदार ने उसका चालान कर दिया। हाकिम के सामने औरत ने भी बहुतेरा कहा कि यह मेरा पति है जिसको मारने का अधिकार है और अब तो मुझे मेरे ही भारी दोष पर मारा है जिससे वह तो किसी तरह भी क़सूरवार नहीं है। परन्तु हाकिम ने उसकी एक भी न सुनी और उसके मालिक को बहुत कड़ी सज़ा करदी।

दूसरा-धन्य है स्त्री जाति को जो ऐसी मार खाती हैं, और फिर भी पति को सज़ा से बचाना चाहती हैं।

दुलारी-और लानत है उन पतियों पर जो स्त्रियों पर हाथ उठाते हैं और विशेष कर लानत है उन हृदय-शून्य पुरुषों पर जो अपनी आंखों स्त्रियों को पिटती देख कर भी रक्षा नहीं करते हैं और चाहे क़सूर पीटने वाले ही का हो तब भी नहीं छुड़ाते हैं।

मर्द-पति-पत्नी के बीच में हम क्या दख़ल देसकते हैं।

दुलारी-किसी स्त्री की तरफ़ से कोई अनुचित कार्य होने पर तो तुम सारी ही स्त्री जाति को बुरा भला कहने लग जाते हो, परन्तु पुरुषों के क़सूर पर बिल्कुल ही अनाधिकारी हो जाते हो। यदि किसी की स्त्री दुराचारिणी हो जावे तो क्या तुम सब ही उस को धिक्कारने को उद्यत नहीं हो जाओगे और उस से घृणा नहीं करने लग जाओगे ? यहांतक कि उसका अपने घरों में आना जाना तक बन्द कर दोगे, परन्तु पुरुष के दुराचारी हो जाने पर तो तुम कुछ भी नहीं करते हो। इस सर्जू पांडे के ही दुराचार को क्या तुम सब नहीं जानते हो, परन्तु इससे तुम घृणा तो क्या करते यह तो बेखटके तुम्हारी स्त्रियों में जाता है। झाड़ा फूंकी करके और गंडे तावीज़ बनाकर उनसे अपनी पूरी पूरी पूजा कराता है और कोई भी कुछ नहीं कहता है।

एक-सर्जू पांडा तो शिवजी का भगत है, हर वक्त शिव शिव ही रटता है और दिन रात शिवाले में ही रहता है। वह दुराचारी कैसे हो सक्ता है।

दूसरा-क्यों गंठे के छिलके छिलके उघड़वाते हो, कौन है जो उसके कुकर्मों को नहीं जानता है चमारियों तक के साथ तो वह पकड़ा गया है, एक पैसे तक की चीज़ किसी की छोड़ता नहीं है, इस प्रकार चोरी और जारी इन दोनों ऐबों के होते हुए भी अगर वह दुराचारी नहीं है तब तो मानो कोई भी दुराचारी नहीं हो सक्ता है।

तीसरा-भाई साहब यह सब अनहोते के खेल हैं, जब आदमी के पल्ले कुछ नहीं होता है, तो नीयत विचल हो ही जाती है रही दुराचार और व्यभिचार की बात, सो जो कोई

बिल्कुल पाक साफ़ हो वह मुझे बताओ। सच तो यह है कि ग़रीब की सब बात खुल जाती है और अमीर की छिपी रह जाती है।

चौथा--वह तो हट्टा कट्टा जवान है, तब कमाता क्यों नहीं है जिससे नीयत विचल न करनी पड़े।

पांचवां--अब तुम क्या यह चाहते हो कि ब्राह्मण का बेटा होकर भी वह टोकरी उठाने लगजावे वा घास खोदकर लावे?

छटा--तो ब्राह्मण के बेटे को यह भी नहीं सोभता है कि दूसरों का माल तकता फिरे--इससे तो घास खोद कर बेचना लाख दर्जे अच्छा है।

सातवां--कलजुग है भाई यह कलजुग है, इस में तो ब्राह्मणों और सर्जू पांडे जैसे शुद्ध ब्राह्मणों को भी टोकरी उठाना और घास खोदना बताया जावेगा। तुम्हारा क़सूर नहीं है इस में ठाकुर साहब, यह सब इस कलजुग का ही प्रभाव है।

सर्जू पंडा--यह इतनी भीड़ खड़ी है, दिलवा दो कुछ नशे पानी को। देखते नहीं हो, जंभाई पर जंभाई आ रही है और जान सी निकली जा रही है।

दुलारी--लोगो जिस प्रकार तुम स्त्री के वास्ते शील का होना ज़रूरी समझते हो, इस ही प्रकार मर्दों के वास्ते क्यों ज़रूरी नहीं समझते हो और क्यों अपना सुधार नहीं करते हो?

कुछ देर बिल्कुल ही सन्नाटा रहता है और कोई कुछ नहीं बोलता है।

एक-बोलो भाई बोलते क्यों नहीं हो, देवी पूछ रही है तब जवाब क्यों नहीं देते हो ?

दूसरा-तुम ही आगे बढ़कर क्यों जवाब नहीं दे डालते हो।

दुलारी-मैं जानती हूं, तुम कुछ जवाब नहीं दोगे। गिरते २ तुम्हारी आत्मा तो ऐसी पतित होगई है कि अब तुम स्वयम नहीं उठ सके हो, गहरे गढ्ढे में पड़ा रहना ही पसन्द करते हो, परन्तु अब तुम अधिक नहीं सोने पाओगे। कोड़े मार मार कर जगाये जाओगे। इस ही महान कारज के सिद्ध करने के वास्ते मेरा जन्म हुवा है और मैंने प्रण कर लिया है कि मैं ब्याह नहीं कराऊंगी, किन्तु जन्म भर कुंवारी रह कर स्त्री जाति को उठाऊंगी और उन ही के द्वारा पुरुषों को, भी शील-वान बनाऊंगी।

याद रक्खो कि स्त्रियों में तुमसे कुछ कम साहस नहीं है। तुम तो दो पैसे के लालच से ही फ़ौज में भरती होते हो, अपना सिर कटाते हो और दूसरों का काटने लग जाते हो, परन्तु स्त्रियां सदा अपने धर्म की रक्षा के वास्ते ही जान देती रही हैं और अपना शील बचाती रही हैं। उस ही स्त्री जाति को मैं जगाऊंगी। उनका धर्म बताऊंगी। और शील की रक्षा करना सिखाऊंगी, याद रक्खो, अब ऐसी निर्लज्ज स्त्रियां नहीं रहेंगी जो अपने पति के कुशीले होजाने पर भी उसकी संगति करती रहैं और चूं तक न करने पावें। थोड़े ही दिनों में तुम देखोगे किस प्रकार वह अपने पतियों को सीधा करती हैं और उनको शीलवान बनाती हैं।

सरजू पांडा-तुम्हारी जय रहै, मेरा भी उपकार होजाय

और कुछ नशे पानी के वास्ते मिल जाय। यह सुनकर सब लोग हंस पड़े और इतने में रामप्रसाद भी वहां आपहुंचा और दुलारी को ज़बरदस्ती घर खींच ले गया।

५–ब्याह की फ़िकर।

घर पहुंच कर रामप्रसाद और उसकी स्त्री में दुलारी की इस दशा की बाबत यह ही बात ठहरी कि किसी देवी देवता वा भूत प्रेत का असर होगया है वा किसी वैरी, दुश्मन ने कुछ जादू मंतर करा दिया है, इस कारण किशनपुर की बणी में रहने वाले मोटे बाबाजी को या इस्लामनगर के लम्बेपीरजी को बुलाना चाहिये।

अगले दिन सुबह ही माधोलाल अपनी लड़की कमलावती और गुमानीलाल की एक दासी को साथ लेकर आपहुंचा, और आते ही यह सब रामप्रसाद के घर गये, दुलारी की मांने कमलावती से पूछा कि अभी तो तू गई थी ऐसी जल्दी कैसे आगई।

कमला–यहां घर में मेरे हाथों कुछ चीज़ रक्खी हुई थी, माँने बहुतेरा ही टटोली पर उसको न मिल सकी बस वह ही निकाल कर देने आई हूं, कल चली जाऊंगी।

दुलारी की मां–और यह तुम्हारे साथ दूसरी कौन है।

कमला–गुमानीलाल के यहां की दासी है, इसे रामगढ़ जाना है। बस यहां तक तो हमारी गाड़ी आती ही थी, उसही में बैठली, यहां से दूसरी गाड़ी किराये करा देंगे।

गुमानीलाल का नाम सुनकर दुलारी की माँ चौंक पड़ी और दासी को देख देख कर हैरान होने लगी, क्योंकि वह तो सिर से पैर तक सुंदर २ बहु मूल्य वस्त्राभूषण पहने हुये थी और किसी बड़े घर की स्त्री मालूम होती थी।

दुलारी की माँ-(दासी से) क्या अब भी तुम उनके यहां नौकर हो ?

दासी-नहीं जी अब तो हम उनके यहां नहीं हैं, जब से बहूजी का देहान्त होगया है अलग होगई हैं। दस दासियां थीं उनकी, दसों बेकार बैठी हैं।

मां-क्यों बेकार क्यों बैठीं हैं, किसी दूसरे के यहां नौकरी करलें।

दासी-मांजी न तो हमें ऐसी मालकन मिलैगी और न हम नौकरी करैंगी। सचमुच वह तो राजा की रानी ही थीं। तुम देखो मैं जो गहने कपड़े पहने हूं वह सब उनही के दिये हुए हैं। जहां ज़रासी बात पर खुश हुई और भरपूर इनाम देडाला, कोई दिन ऐसा खाली नहीं जाता था जो किसी न किसी को इनाम न मिलजाता हो। बाबूजी की भी यह ही ताकीद रहती थी कि अपनी बहूजी को राज़ी रक्खो और जो चाहो सो लो। सच तो यह है कि रामने अच्छी जोड़ी मिलाई थी हंस हंसनी की। वह उसको देखकर जीता था और वह उसको। अब नहीं मालूम बेचारे को कैसी मिले और कैसी निभै।

इतनी बात सुनकर दुलारी की मां ने अन्दर ही अन्दर सांस खैंची और कमलावती ने दासी को इशारा किया जिससे

वह तुरन्त ही उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई चली गई कि मैं तो जाती हूं और गाड़ी का इन्तज़ाम कराती हूं। पीछे कमला ने अपनी ताई से कहा कि मुझ से बड़ी भूल हो गई जो दुलारी की सगाई न होने दी। उस वक्त मैं कोई दूसरा ही आदमी समझ गई, जो मैं जानूं कि यह पीपल मुहल्ले वाला गुमानी लाल है तो इसके साथ सगाई करने को तो मैं आप ही ज़ोर देती, ऐसा वर तो चिराग़ लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलता है।

दुलारी की माँ–बेटी यह सब क़िस्मत के चक्कर हैं, पर अब ही क्या बिगड़ा है, जो तुम्हारी सब की यह ही मर्ज़ी है तो सगाई करदो।

माधोलाल–हमारी सब की तो मर्ज़ी है ही, पर नहीं मालूम तुम लोग क्यों देरी कर रहे हो, जो उसने कोई दूसरी सगाई लेली तो फिर देखते ही रह जाओगे।

रामप्रसाद्–हमारी तरफ से कुछ देरी नहीं है, जो सब कुन्बे वालों को मंजूर हो तो चाहे आज ही सगाई करदो।

यह सुनकर माधोलाल उठकर चल दिया और सब कुटुम्ब वालों को रज़ामन्द करके साथ ले आया। इस प्रकार दुलारी की सगाई गुमानीलाल से होगई और एक महीने पीछे का विवाह निश्चय होगया।

रामप्रसाद–(अपनी स्त्री से) सगाई तो करदी और ब्याह भी ठहर गया पर इसका पूरा किस तरह पटैगा। मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं है और न कहीं से कुछ कर्ज़ ही मिल सका है

स्त्री-मेरे पास ही क्या रहा है जो दे दूं, जो था वह सब लड़के के ब्याह में निकाल कर दे ही दिया था और गहना भी सब बहू को ही डाल दिया था।

रामप्रसाद-तो फिर बहू से ही कुछ गहने ले।

स्त्री-लाजी, तुम जानते नहीं हो आज कल की बहू बेटियों को, वह थोड़ा ही दिवाल है एक छल्ला भी।

रामप्रसाद-अच्छा वह नहीं सुनती है तो लड़का तो सुनेगा, उसही से कहो।

स्त्री-हां कहूंगी तो ज़रूर, बिन कहे थोड़ा ही गुज़ारा होता है। पर आजकल के लड़के तो तुम जानों अपनी बहुओं के ही गुलाम होते हैं।

रामप्रसाद-तो क्या वह भी ऐसा नालायक़ होजावैगा जो ऐसे वक्त में भी काम नहीं आवेगा?

स्त्री-नहीं वह बेचारा तो सब लायक़ है, पर आजकल की बहू बेटियां ही कुछ ऐसी होगई हैं कि पति को कुछ ख्याल में ही नहीं लाती हैं और ज़ेवर तो भला वह क्यों देने लगी हैं।

रामप्रसाद-तो फिर क्या करें मुझे तो कर्ज़ भी मिलता नज़र नहीं आता है।

स्त्री-ज़रूरत में तो अपने ही काम आया करते हैं, जो ननँद और फ़ुफस ही कुछ कर्ज़ के तौर पर देदें तो क्या हम उनका रखलेंगे?

रामप्रसाद-तो क्या मैं उनसे मांगने आऊं ?

स्त्री-नहीं तुम क्यों जाओ, लड़के को भेजकर उनको ही बुलवालो, जब वह अपनी आंखों सब हाल देखेंगी तो आपही देंगी, और अब ब्याह के ही कितने दिन रहगये हैं। आखिर उनको बुलाना तो है ही, दो दिन पहिले बुलालो, जिससे सब बातों में उनकी सलाह भी होती रहे।

रामप्रसाद-क़िस्मत जो करावेगी वह ही करना पड़ेगा, अब हम इस लायक़ होगये कि लड़कियों से क़र्ज़े लेते फिरें।

स्त्री-उन्हें बुला तो लो, या इस ब्याह में उन्हें बुलाना भी नहीं है।

अगले दिन मुन्शी न्यादरसिंह आपहुंचे और कहने लगे कि बाबू गुमानीलाल के पांच गांव इधर पहाड़ की तरफ़ हैं, वहां घी बहुत होता है, यहां आठ छटांक बिकता है तो वह बारह छटांक मिलता है और हम तो १६ ही छटांक लेते हैं। इस वास्ते तुम घी यहां मत ख़रीदना, मैं वहां से भिजवा दूंगा और ब्याह पीछे हिसाब करके सब दाम लेलूगा।

रामप्रसाद-यह तो ठीक है, पर मुन्शी जी एक बात मैं भी हाथ जोड़ कर कहता हूं कि बेटी की तरफ़ का कोई अंश मेरी तरफ़ न आवे, मैं हूं तो ग़रीब आदमी पर ऐसी बातों का बहुत ख़याल रखता हूं।

न्यादरसिंह-हरे हरे, यह क्या फ़रमाया आपने, हम क्या बेटा बेटी वाले नहीं हैं। हम भी तो कुछ थोड़ा बहुत धर्म कर्म

रखते हैं। हमें तो खुद ही इस बात का बहुत बड़ा ख़याल है। इसकी तो आप बिल्कुल भी फ़िकर न करें।

इससे अगले दिन एक आदमी गुमानीलाल के गुमाश्ते कुंवरसेन की चिट्ठी लेकर आया जिसमें लिखा था कि आप के नगर से ७ मील के फ़ासले पर रामगढ़ में जो पनचक्की है उसका ठेकेदार अपना ही आदमी है। आप को आटा मैदा जितना दर्कार हो वहां से ही मंगावें, वह सब रुपया हमारा ही बरतता है, इस वास्ते भाव भी सस्ता ही कट जावेगा और रुपया भी जब चाहे दिया जावेगा। खांड़ के वास्ते भी हम रामनगर अपने आड़ती को चिट्ठी लिखने वाले हैं, बहुत ही सस्ता परता पड़ेगा। आपको जितनी दर्कार हो लिख भेजें सब इकट्ठा आजावेगी। दाम भी दीवाली पर हिसाब होने पर ही भुगताये जावेंगे और फिर आपसे लेलिये जावेंगे।

फिर दो दिन पीछे एक और आदमी आया और कहा कि मुनीमजी ब्याह के वास्ते कपड़ा लेने दिसावर को जाने वाले हैं आपको भी बुलाया है जिससे इकट्ठा ही ले आवें। रुपया अभी साथ ले जाने की ज़रूरत नहीं है, सालभर में जब दिसावर का हिसाब होगा दे दिया जावेगा। इस प्रकार रामप्रसाद मुनीमजी के साथ दिसावर को गया, जहां बाबू गुमानीलाल के वास्ते भी बहुत सामान खरीदा गया और बहुत कुछ कपड़ा लत्ता गोटा ठप्पा सोना चांदी आदि रामप्रसाद को भी ले दिया गया।

६--नया गुल खिला ।

पाठक, आओ इस बीच में गुमानीलाल की भी ख़बर ले आवें। वह देखो वहां तो एक आदमी गुमानीलाल से एकान्त में कुछ बातें कर रहा है।

उत्तमचन्द-बस एक बार मेरी लड़की को आंख भर कर देखलो और जो साक्षात ही स्वर्ग की परी हो तो दस थेली देकर ब्याह लो।

गुमानीलाल-मगर मैं तो सगाई लेचुका हूं।

उत्तमचन्द-मुझे ख़बर है आपने रामप्रसाद की लड़की की सगाई ली है, पर मेरी लड़की तो उससे पैर भी न धुलवावे। चांद की चांदनी पड़ने से तो उसका बदन मैला होता है और दस हज़ार की तो उसकी एक आंख है।

अच्छा फिर मिलूंगा में आपसे, यह कह कर गुमानीलाल तो कचहरी चला गया और पीछे उनका नौकर बारू उत्तमचन्द से बोला।

बारू-कहो लाला तुम्हारा दस हज़ार का सौदा बिक गया कि नहीं।

उत्तमचन्द-चुप रह कमीन ज़ात, तू भी हम से ठट्ठा करता है।

बारू-कमीन ज़ात तो बेशक हूं, पर तुम्हारे जैसे ऊंची ज़ात वालों की तरह अपनी छोकरियां नहीं बेचता फिरता हूं,

और साथ ही इसके यह भी सुनाये देता हूं कि जब तक मेरे पैर न पूज लोगे तब तक तुम्हारी लड़की इस घर तो बिक नहीं सकेगी। बाजार की रंडियां तक तो गुमानीलाल की सेज पर पैर रख नहीं सकी हैं जब तक यहां चढ़ापा नहीं चढ़ालेतीं हैं फिर तुम्हारी तो हक़ीक़त ही क्या है।

उत्तमचन्द–तो सर्दार साहब, चौधरी साहब, इस में नाराज़ होने की कौन बात है, हमको क्या तुमसे कुछ इनकार है?

बारू–मैं तो साफ़ कहे देता हूं कि जितने पर सौदा हो उस की तिहाई ले लूंगा तब बात चलने दूंगा।

उत्तमचन्द–तुम काम क्या करते हो इनके यहां?

बारू–मैं उनकी टांगें दबाता हूं, पंखा हिलाता हूं, रंडियों बुलाकर लाता हूं और घर घिरस्तनों को भी मिला देता हूं और बाबूजी की बदौलत मूछों पर ताव देकर मज़े उड़ाता हूं।

उत्तमचन्द–अच्छा तो तब जानें जो रामप्रसाद की लड़की की सगाई तो ऊक चूक होजाय और हमारी चन्द्रमुखी ब्याही जाय।

बारू–ऐसा भी हो सक्ता है पर तब तो हम आधा ही बटवालेंगे।

उत्तमचन्द–दस्तूरी का तो दसवां हिस्सा हुवा करता है सो ही हमने बड़ी लड़की के मामले में दिया था, जो सुहागपुर ब्याही गई थी।

बारू-अच्छा तो तुम वह उत्तमचन्द हो जिसने मुझे बेणी-प्रसाद को एक रंडी की छोकरी दिखाकर मोह लिया था और फिर ब्याह दी थी अपनी काली कलूटी।

उत्तमचन्द-भला कहीं ऐसा भी हो सका है, जैसा तुम कहते हो, परमेश्वर से डर कर बात करो।

बारू-अच्छा तो वह नसीबन रंडी तो मौजूद है जिसको तुमने साड़ी पहना कर बेणीप्रसाद को दिखाई थी, कहो तो और भी कुछ बतादूं।

उत्तमचन्द-तुम तो फिर सब बात जानते ही हो।

बारू-तो अब के भी वैसा ही ढांचा बाधा है क्या, हमसे छिपाने से काम नहीं चलेगा।

उत्तमचन्द-नहीं अबके वह बात नहीं है, यह छोटी लड़की तो आप ही बहुत सुंदर है, रात में उजाला कर देने वाली पटबीजना है यह तो। जो किसी अमीर के मन चढ़ गई तो बीस हज़ार भी तो गिन देगा इसे देखते ही। पाठक इस बात के जानने के बड़े उत्सुक होंगे कि यह उत्तमचन्द कौन है जो ऊंची ज़ात का हो कर भी ऐसी नीचता की बातें करता है। बात यह है कि इसका पिता महावीर प्रसाद बहुत ही उत्तम और श्रेष्ठ पुरुष था। पांच सौ रुपया महीने की आमदनी थी, और यह ही एक अकलौता बेटा था। दोनों मियां बीबी इस लाड़ले उत्तमचन्द को देख देख कर जीते थे और चाहे कुछ हो इसका मन मैला नहीं होने देते थे जिससे यह बहुत ही उद्धत और सिर चढ़ा होगया था।

फिर जब ज़रा बड़ा हुवा तो दुराचारी लड़कों की संगति में रहकर बिल्कुल ही निर्लज्ज और भ्रष्ट होगया। ११ बरस की उमर में इसका ब्याह होगया और १३ वें बरस गौना भी कर दिया। ब्याह इसका बहुत ही उच्च घराने में हुआ था, स्त्री भी इसकी बहुत ही नेक और सुशीला थी, परन्तु पूज्य पति देव उस बेचारी को ऐसे मिले थे जो भगवान करै कभी किसी को भी न मिले। अव्वल तो यह महा पुरुष घरमें ही कम आते थे, रात दिन महा नीच दुराचारी लड़कों के साथ ही फिरते रहा करते थे, और जो कभी घर में आते भी थे तो बकते झकते और छीनते झपटते ही आते थे। देवी स्वरूपा अपनी स्त्री को अश्लील गालियां सुनाना तो उसकी बहुत ही मामूली बात थी। वह तो अपनी माँ को भी गंदी गंदी गालियां सुनाता था और डरा धमका कर जो चाहे लेजाता था। कुछ दिन पीछे इसके पिता का देहान्त होगया। फिर क्या था, अबतो उसके घर पर ही चंडाल चौकड़ी रहने लगी और खुल्लम खुल्ला शैतानी होनी शुरू होगई, उत्तमचन्द का रुपया पानी की तरह बहता था और लुच्चों गुंडों का मज़ा उड़ता था। होते होते थोड़े ही दिनों में कुल रुपया पैसा खर्च होगया और फिर यहां तक नौबत आगई कि क़र्ज़ मिलना भी बंद होगया, तब दस दस रुपये लेकर सौ सौ रुपये का काग़ज़ लिखना शुरू किया, और जब यह भी न चला तो घरका अस्बाब बेचने लगा। ग़रज़ थोडे ही दिनों में रहने का मकान भी न रहा और बिल्कुल ही भूखा कंगाल होगया। उसका दुराचार देखते २ उसकी सुशीला स्त्री भी अब अपने चरित्र से गिर गई थी और वैसी ही निर्लज्ज होती जाती थी जैसा उसका पति था। उत्तमचन्द को कोई हुनर तो आता ही नहीं था जिसके द्वारा वह इस समय दो पैसे

कमा सका और ऊंची जाति का आदमी होने के कारण वह मिहनत मज़दूरी भी नहीं कर सका था जिससे अपना पेट पालता। लाचार वह तो अब अमीरों ही के यहां जा पड़ा, उनके नाच मुजरे के वास्ते रंडियां आदि बुलाकर और अन्य भी इस ही प्रकार की सेवा करके कुछ पैसे झटक लाता और अपने घर का ख़र्च चलाता।

इसही बीच में मथुरादास नामी साठ बरस के बुड्ढे धनवान को स्त्री के मरजाने के कारण ब्याह कराने की ज़रूरत हुई, परन्तु बहुत कुछ कोशिश करने पर भी कोई कन्या न मिल सकी तब उत्तमचन्द इस बात के लिये मुक़र्रिर किया गया कि वह दूर दूर फिर कर कहीं से उसका जोग मिलादे। इस कार्य के लिये वह देश विदेश घूमा और सबही बेटी बेचने वालों में मिला, आख़िर एक जगह आठ हज़ार पर सौदा होगया और पांचसौ रुपया उत्तमचन्द को मिल गया, जो फिर दोही महीने में लुटा दिया गया, परन्तु इस भ्रमण में उसे बेटी बेचने वालों के व्योपार का ख़ूब अनुभव होगया था, यहां तक कि, उसको यह भी मालूम होगया था कि बहुत लोग ग्राम ग्राम फिर कर सब ही जाति की छोटी २ लड़कियों को चुरा लाते हैं और उनको ऊंची जाति के ऐसे लोगों के हाथ बेच देते हैं जो बेटी बेचने का ही काम करते हैं। वह इनको अपनी बेटी प्रसिद्ध करके पाल लेते हैं और जवान होने पर ऊंची जाति के बुड्ढों से ब्याह कर ख़ूब ही रक़म उठाते हैं। इसही प्रकार यह लोग अनेक लड़कियां अकाल पीड़ित कंगलों से, भंगी, चमार और डोम आदि अछूत जातियों से, व्यभिचारिणी स्त्रियों से और अन्य भी अनेक रीति से दस पांच रुपये में ख़रीद लेते हैं और अपनी बेटी बनाकर ऊंची जाति वालों को ब्याह देते हैं।

इस व्यापार को सहज समझ कर अब उत्तमचन्द भी इस ही में लग गया और ऊंची जाति के बुढ्ढों के घर बसाने लगा। उसकी स्त्री भी उसको उसके इस नवीन व्यापार में खूब सहायता देती थी और इससे भी ज़्यादा नीच और निर्लज्ज बन गई थी। इसकी बड़ी लड़की भी जो बेणीप्रसाद से ब्याही गई थी वास्तव में इसकी लड़की नहीं थी, किन्तु इसही प्रकार से आई हुई थी, परन्तु यह दूसरी लड़की जिसको वह गुमानी लाल से ब्याहना चाहता है वास्तव में उसही की बेटी है, परन्तु ऐसे घर में पैदा होने और पलने से वह भी महा नीच और निर्लज्ज ही होगई है।

पाठक कब तक आप इस महानीच उत्तमचन्द की कहानी सुनते रहेंगे? अन्त की बात यह है कि बारू नौकर ने उसकी लड़की को खूब अच्छी तरह परख लिया और फिर गुमानीलाल को बहका फुसलाकर इस बात पर राज़ी कर दिया कि रामप्रसाद की लड़की के साथ ब्याह होने के पीछे इस लड़की को भी ब्याह लिया जावे, और दस हज़ार रुपया उत्तमचन्द को दिया जावे जिसमें से तीन हज़ार रुपया दल्लाली का बारू ने अपना पक्का कर लिया।

७—देवी का मेला।

अब दुलारी की सुनिये, वह तो एकान्त में बैठी मन ही मन स्त्री सुधार की तदबीरें सोचती रहती थी और किसी से भी नहीं बोलती थी। माता पिता को उसकी इस दशा का बड़ा

सोच था परन्तु ब्याह की तय्यारियों में लगे रहने से कुछ भी उपाय नहीं कर सके थे। इन ही दिनों देवी का मेला निकट आगया, जो यहां से २० मील की दूरी पर भरता था। काशीपुर से भी अनेक स्त्रियां मेले में जाने वाली थीं, जिन्होंने दुलारी की माँ को भी समझाया कि दुलारी जो अपने आपको देवी बताती है, ऐसा न हो उस पर देवी ही का असर हो। इस वास्ते अब तू इसको मेले में ले चल और देवी के चरणों में डालकर प्रार्थना कर कि मेरी बच्ची को छोड़दे, आशा है कि देवी इसको बख़्श देगी और जो कोई क़सूर हुआ होगा तो बता देगी, और जो किसी भूत प्रेत का असर हुवा तो उसको भी हटा देगी। स्त्रियों की यह सलाह दुलारी की माँ को पसन्द आई और वह भी बाल बच्चों और पुरोहतानी समेत छकड़े में बैठ कर मेले में चल दी। रास्ते में अन्य भी अनेक छकड़े मिलते गये जिससे छकड़ों का एक ताँतासा बँध गया।

छकड़ों के हांकने वाले बैलों को अश्लील गालियां दे दे कर ही हांकते थे जो दुलारी को किसी प्रकार भी सहन नहीं होता था। उसने अपने बहलवान को कई बार टोका, रोका और समझाया, परन्तु उसको तो कुछ ऐसा अभ्यास हो रहा था कि ख़याल रखने पर भी उसके मुंह से कोई न कोई अश्लील शब्द निकल ही जाता था, जिससे तंग आकर आख़िर को दुलारी गाड़ी से नीचे उतर पड़ी और साथ की स्त्रियों को ललकार कहने लगी कि ऐसे महा गंदे अश्लील शब्दों के सुनने में क्या तुम को लज्जा नहीं आती है जो चुप चाप सुनती चली आरही हो और कुछ भी रोक टोक नहीं करा चाहती हो।

मां—बेटी यह गाड़ी वान तो सब ही इस तरह गालियां दे दे कर ही बैलों को हांका करते हैं।

दुलारी-तो क्या स्त्रियों को भी इनके यह अश्लील शब्द सुनते रहना चाहिये।

मां-नहीं सुनते तो नहीं रहना चाहिये, पर क्या करें दुनिया भर से किस तरह लड़ाई बांधे, यह पुरुष तो सब ही ऐसे हो रहे हैं जो हर वक्त गंदे ही बोल बोलते रहते हैं और कुछ भी ख़याल नहीं करते हैं।

दुलारी-उनसे नहीं लड़ा जासक्ता है तो उनकी संगति से तो अपने आप को बचाया जा सक्ता है। मर्द ऐसे पतित होगये हैं तो स्त्रियें तो अभी ऐसी पतित नहीं हुई हैं। वह तो अभी तक शील को ही अपना सर्वस्व जानती हैं और लज्जा को ही अपना धर्म कर्म मानती हैं। उनको तो अपनी लाज शरम थामने के वास्ते अवश्य ही इन अश्लील बोलने वाले पुरुषों से अलग हो जाना चाहिये। नहीं तो साफ़ २ यह ही कहदेना चाहिये कि हम भी मर्दों की तरह डूब गई हैं, अपनी लज्जा कज्जा सब खो बैठी हैं।

पुरोहतानी-सच तो कहती है लड़की, बहू बेटियों के सामने इस गाड़ीवान का इस तरह गंदी २ गालियां बकते चलना क्या कुछ अच्छा है। इसही को क्यों नहीं गाड़ती हो जो अपनी जीभ क़ाबू में रक्खे।

दुलारी-स्त्रियों में आत्म सन्मान हो तो सब ही कुछ होजावे, परन्तु स्त्रियों ने तो अपने को ऐसी तुच्छ और हीन अति हीन वस्तु समझ लिया है मानो उनको तो अपनी लज्जा की रक्षा का भी अधिकार नहीं है, यदि स्त्रियां कुछ भी हिम्मत करें और अश्लील बोल बोलने वाले पुरुषों से दूर हटती रहें तो

पुरुष तो इतने ही में सीधे होजावें, और अश्लील बोलना भूलजावें।

माँ-नहीं गाड़ी वाले की क्या मजाल है जो कुछ बोले, तू निश्चिन्त होकर गाड़ी में बैठ। यह कहकर गाड़ी वान को धमकाया और दुलारी को गाड़ी में बिठाया।

आगे चलकर दुलारी ने देखा कि आस पास के गांव की कुछ चमारियां सड़क पर जा रही थीं, उन को यात्रियों में से कुछ आदमियों ने अश्लील वाक्यों द्वारा छेड़ा और चमारियों ने भी बदले में उनको खूब ही गंदी गंदी मां बहन की गालियां सुनाई जिस पर वह लोग हँस हँस कर उनको और भी अधिक २ छेड़ने लगे और अधिक २ गालियां सुनने लगे। यह देखकर दुलारी अपनी गाड़ी में खड़ी होकर ज़ोर २ के साथ चिल्ला कर कहने लगगई कि बेशरम मर्दो अगर तुमको गाली सुनने में ही मज़ा आता है तो उसके लिये तुमको इन स्त्रियों को छेड़ने का क्या अधिकार हो सक्ता है।

माँ-बेटी तुझे क्या पड़ी है जो रस्ते चलती चमारियों का झगड़ा अपने सिर ले और साथ के यात्रियों से लड़ाई बांधे, (अपने पति से) अजी तुम ही समझाओ इस लड़की को, नहीं तो यह तो कोई न कोई फ़िसाद खड़ा किये बिदून न रहैगी।

रामप्रसाद (जो गाड़ी के पीछे २ पैदल आ रहा था) यह किसी के समझाये समझती तो यहां ही लाने की क्या ज़रूरत थी।

दुलारी-यात्रा की स्त्रियो! देखो रस्ते चलती स्त्रियों को यह

नीच पुरुष छेड़ रहे हैं। क्या अपनी आंखों के सामने भी तुम स्त्री जाति पर यह जुल्म देखती रहोगी और कुछ नहीं करोगी ?

एक मर्द-यह तो बहुत ही उद्धत लड़की है। क्या इसके साथ में कोई भी इसको रोकने वाला नहीं है ?

दूसरा-लड़की तेरा इन चमारियों से क्या वास्ता है जो इतना झगड़ा बांध रही है ?

दुलारी-मर्दों यदि तुम में इस बात की ग़ैरत नहीं रही है कि तुम्हारी आंखों के सामने लोग पराई स्त्रियों को छेड़ें और तुम कुछ भी न बोलो, यदि तुम लोग बिल्कुल ही निलज्ज और नामर्द होगये हो तो क्या स्त्रियां भी स्त्री जाति की रक्षा न करें ? ऐसा होने पर तो बिल्कुल ही अंधेर होजायगा और कोई भी स्त्री सुरक्षित न रह सकेगी।

यह कह कर वह गाड़ी से उतर पड़ी और सबही गाड़ियों को रोकने लग गई, रामप्रसाद ने उसको बहुतेरा मना किया, पकड़ा और धमकाया परन्तु दुलारी ने एक न सुनी, गाड़ियां रुकजाने पर उसने स्त्रियों को लल्कार कर कहना शुरू किया कि पुरुष तो प्रायः सब ही अपने शील को खो बैठे हैं और मनुष्यत्व से बहुत ही ज़्यादा नीचे गिर गये हैं, इस कारण वह तो इस प्रकार के जुल्मों को रोकने की बिल्कुल भी चेष्टा नहीं करेंगे, परन्तु तुम तो अपनी जान देकर भी शील की रक्षा करने वाली हो तुम तो चुप मत बैठो, साहस करके इन बेशर्मों को पकड़वाओ और ऐसा दंड दिलाओ, जिससे आगे को इन पुरुषों को ऐसा ढेठ ही न होने पावे और स्त्री जाति की पूरी पूरी रक्षा हो जावे।

स्त्रियां--हम किस तरह इनको दंड दिला सक्ती हैं।

दुलारी--तुम सब अपने २ पुरुषों को दबाओ और ज़िद करके बैठ जाओ कि जब तक इन चमारियों का न्याय नहीं होगा और अत्याचारियों को दंड नहीं मिलेगा तब तक हम अपने को भी सुरक्षित नहीं समझेंगी और आगे नहीं चलेंगी। देखें फिर किस तरह दंड नहीं मिलता है, और किस तरह इन मर्दों की सब उदंडता दूर नहीं होजाती है।

स्त्रियां--सब स्त्रियां थोड़े ही तुम्हारी यह बात मान सक्ती हैं, अभी देखलो, गज़ गज़ भर की जीभ निकाल कर कैसी २ बातें बना रही हैं।

दुलारी-- इज्ज़तदार स्त्रियों को ऐसी स्त्रियों की रीस नहीं करनी चाहिये, बल्कि चाहे सारी ही स्त्रियां एक तरफ़ होजावें तो भी इज्ज़तदार स्त्रियों को तो अपनी और पराई सबही स्त्रियों की इज्ज़त बचाने की कोशिश से नहीं चूकना चाहिये।

स्त्रियो ! तुमने अपना सब कुछ खोदिया है, यहां तक कि तुम बांदी गुलामों और ढोर डंगरों से भी नीचे गिर गई हो, परन्तु अभी तक तुम्हारा शील रत्न और लज्जा धर्म तुम्हारे पास बाक़ी है, तुमने अपनी जान तक गंवादी है परन्तु अपने इस अमूल्य रत्न को नहीं जाने दिया है, याद रक्खो कि यदि अपनी बेपरवाही से तुमने इसको भी खो दिया तब तो तुम साक्षात ही सूरी कुत्ती के समान हो जाओगी और अब से भी ज्यादा अपनी बेइज्ज़ती और अपमान कराओगी। तुम्हारी इन सब बातों की रक्षा तो तब ही हो सकती है जब तुम सब ही

स्त्रियों की रक्षा को ज़रूरी समझो और किसी भी स्त्री पर पुरुषों की ज़्यादती न होने दो।

दुलारी की इस बात का स्त्रियों पर बड़ाभारी असर पड़ा। सबने उसको धन्य २ कहा और अपने २ पुरुषों को दबाया कि यदि इतने मर्दों के होते हुवे भी लुच्चे गुंडे लोग रस्ते चलती स्त्रियों को छेड़ सक्ते हैं तब तो मानो जग प्रलय ही आगई है, और स्त्रियों के शील और लज्जा की कुछ भी रक्षा नहीं रही है।

एक मर्द-(जोश में आकर) लोगो, क्या यह डूब मरने की बात नहीं है जो हम ऊंची जाति का घमंड रखते हुए भी चमारियों को छेड़ें और उन से मां बहन की गंदी २ गालियां खाकर खुश होवें।

दूसरा-भाई साहब हम लोगों की तो कुछ आदत ही ऐसी बिगड़ गई है कि बिना अश्लील शब्दों के तो कोई बात ही ज़बान से नहीं निकलती है, यहांतक कि ऊंची जाति के बड़े २ इज्ज़तदार भी भंगी चमार और कुत्ता बिल्ली तक पर नाराज़ होते हुवे उनको साला सुसरा कहते हैं मां बहन और धी बेटी को महा गंदी ऐसी गालियां देते हैं मानो उनके बहनोई वा जमाई बनना चाहते हैं और ज़रा नहीं लजाते हैं।

तीसरा-भाई पुरुषों की क्या पूछते हो, यह तो ईंट पत्थर लाठी, जूता, रुपया पैसा, रोटी पानी, आदि जिस भी किसी चीज का ज़िकर करते हैं तो उसे ही साली सुसरी कहने लग जाते हैं और मां बहन की गालियां देकर ही किसी चीज़ का ज़िकर कर पाते हैं।

चौथा-तो क्या यह शरम की बात नहीं है और क्या इस

अपनी नीचता को दूर करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये ?

पांचवां-ज़रूर करनी चाहिये परन्तु सब से पहले हम तो यह पूछते हैं कि पुरुषों को पराई स्त्रियों के छेड़ने का अधिकार कैसे मिल गया है यदि ऐसा कोई अधिकार नहीं मिला है। तो जिन लोगों ने इन रस्ते चलती चमारियों को छेड़ा है उनको क्या दंड दिया गया है।

छटा—दंड देने का हम को ही क्या अधिकार है ?

पांचवां-और कुछ नहीं तो उनको अपने से अलहदा करके उनका बाइकाट करदेने का अधिकार तो किसी ने नहीं छीन लिया है।

इस प्रकार की बात होकर आख़िर यह तै पाया कि अब का मामला तो क्षमा किया जावे और आगे को जो कोई इस प्रकार की बदमाशी करे उसका बाइकाट करदिया जावे।

८-डिप्टी साहब की स्त्री।

चलते २ यह लोग अमरपुर गांव में पहुंच गये जहां से मेला आठ मील रह गया था। यहां सब गाड़ियां ठहर गईं और सब लोग कुछ देर आराम करने को उतर पड़े। इसही बीच मे उस इलाक़े के डिप्टी साहब की स्त्री भी रथमें सवार वहां आ-पहुंची। साथ के सिपाही कुछ देर पीछे आये जिनपर वह बहुत तड़की भड़की। उन बेचारों ने बहुतेरा कहा कि हम तो भागे हुवे आरहे हैं, परन्तु रथ के साथ किसी प्रकार भी नहीं भाग

सकते हैं। इस ही वास्ते पीछे रहगये हैं। पर उसने उनकी एक न सुनी और बकती झकती ही रही, जिस पर लाचार वह लोग पीठ फेर कर बैठ गये और आपस में कहने लगे कि यह चुड़ैल तो यूंही बका करती है और डिप्टी साहब का भी नाक में दम रखती है।

डिप्टन के साथ उसके छोटे छोटे दो बच्चे भी थे। जो बहुत ही नट-खट थे। वे चाट के वास्ते पैसे मांगने लगे। डिप्टन ने उनको बहुतेरा ही बहकाना चाहा कि यहां चाट नहीं बिकती है, पर उन्होंने एक न सुनी, आप ही उसकी संदूकची में से दाम निकाल कर भाग गये, और दूर जाकर दिखाने लग गये कि देखो हमने यह चवन्नी निकाली है और हमने यह अठन्नी उठाली है। डिप्टन उनपर बहुत ही भभकी, बहुत ही धमकाया डराया पर बच्चों पर इसका कुछ भी असर न हुवा। वह तो दूर खड़े हंसते ही रहे और दूबदू जवाब भी देते रहे।

डिप्टन-धरती में गाड़ दूंगी तुम्हें दोनों को जीतों को।

लड़का-तुझे ही नहीं गाड़ देंगे जीती को।

डिप्टन-चूल्हे में धर दूंगी जो किसी घमंड में फिरता हो।

लड़का-तुझे ही नहीं धर देंगे चूल्हे में।

डिप्टन-क्योंरी कान्ता तू भी कहना नहीं मानेगी। तेरी तो हड्डी २ तोड़ कर धरदूंगी, हां तुझे तो कोई छुडाने को भी नहीं आवेगा। आ इधर नहीं तो गला घोट दूंगी तेरा तो।

कान्ता-अच्छा भाई को भी बुलाले तब आऊंगी।

डिप्टन-भाई की रीस नहीं किया करती हैं लड़कियां, आजा मेरी मुन्नी तू तो बड़ी अच्छी लड़की है। मां का कहना मानती है।

लड़का-ना, कान्ता इसके पास मत जाना, जावेगी तो मारेगी।

कान्ता-हम तो नहीं आते, तू तो मारेगी।

डिप्टन-(सिपाही से) अच्छा जा इन बच्चों को दो दो पैसे की चाट लेदे। खबर नहीं इन्हों ने कितने २ पैसे निकाल लिये हैं, देखना कहीं खो न दें, चौकसी रखना। खो दियें तो तेरे से लिये जावेंगे।

सिपाही-मेरे हाथ में पैसे दिलादो तो मैं ज़िम्मेदार हो सक्ता हूं।

डिप्टन-जा क्यों बकवाद मारता है, इन बच्चों को चाट लेदे। डिप्टी साहब के सामने तो तुम कभी चूं भी नहीं करते हो, पर मेरी सारी ही बातों को काटने खड़े हो जाते हो।

सिपाही-डिप्टी साहब ऐसी बात भी तो नहीं कहते हैं जो काटनी पड़े।

इस पर डिप्टन बहुत ही ज़्यादा बकी झकी जिसके लिखने की यहां ज़रूरत मालूम नहीं होती है। डिप्टन की बकवाद सुनकर मेले की अनेक स्त्रियां वहां आकर खड़ी होगईं और डिप्टन भी उनके साथ बातों में लगकर घमंड के साथ कहने लग गई कि हमारे डिप्टी साहब को इतना इख़्तियार है कि चाहे

जिसको क़ैद करदें। बड़े २ धुआधारी ज़मीदार और सेठ साहूकार भी उनके आगे हाथ बांधे खड़े रहते हैं। तहसीलदार और थानेदार तक उनका पानी भरते हैं, पर उनको घर घिरस्त की अक़ल रत्ती भर भी नहीं है, जो वह चाहते तो इन ही लोगों से लाखों रुपया कमा लेते, पर वह तो एक कौड़ी भी नहीं लेते हैं और दौरे तक में भी रसद के दाम अपने पास से देते हैं। वह तो मैं अपनी तरफ़ से थानेदारों को कहला कर, जलाने के वास्ते लकड़ी, ढ़ंगरों के वास्ते घास और घी दूध मंगाती रहती हूं, नहीं तो वह तो इन चीज़ों को भी मोल से ही मंगाने को कहते हैं और मुझे झिड़कते ही रहते हैं, पर मैं कब सुनती हूं उनकी यह बातें। बाल बच्चों का घर ठहरा, इस में तो सत्तर चीज़ें इधर उधर से आती रहैं तब ही गुज़ारा चलता है। सो मैं तो लोगों की डालियां भी लेकर रख लेती हूं और किसी न किसी चीज़ के वास्ते लोगों को कहला कर भी भेजती ही रहती हूं, न कहूं तो क्या करूं, वह तो अपने फूटे मुंह से बच्चो कभी किसी को किसी चीज़ के वास्ते कहने लगे हैं। वह तो उलटा मुझे ही झिड़कने लग जाते हैं।

स्त्रियां-हां जी मर्दों को घर के मामलों की क्या खबर, वह तो बाहर के ही मृग ठहरे ना।

डिप्टन-भला मैं उनकी किस किस बात को मानूं, वह तो मुझे यहां देवी पर आने को भी मना करते थे, पर मुझे तो जात देनी थी तब मैं कैसे रुक सकती थी। मुझे तो तुम जानो अपने बच्चे पालने हैं, इस वास्ते मैं तो देवी की भी जात दूंगी और पीर पैग़म्बर भी मनाऊंगी।

स्त्रियां-हां जी बच्चे वाली को तो सबही को मनाना पड़ता

है, क्या जाने किसकी कृपा से यह बच्चे जीते बचते रहें।

डिप्टन-जीने बचने की तो यह लो कि अब तक मेरे सात बच्चे हो चुके हैं, जिन में से पांच तो राम को प्यारे हुवे। यह दो बच्चे रह गये हैं, इन सबकी बीमारी में भी यह ही झगड़ा रहता था, वह तो कहते थे कि हकीम डाक्टर का इलाज करावें और मैं कहती थी स्याने चट्टे को बुलावें। आखिर आते थे हकीम डाक्टर भी। पर आओ देख जाओ, मैं उनकी दवाई कब दे सकती थी, इधर आई और मैंने खिडाई। कह दिया पिलादी, चल छुट्टी हुई। हां स्यानों की बताई दवा भी देती थी और उनकी झाड़ फूंक भी कराती थी। इस प्रकार मैंने तो बच्चों के मामले में अब तक इनकी एक भी नहीं चलने दी है, रही जीने मरने की बात सो यह तो किसी के भी बस में नहीं है, उनके भाग में जीना होता तो जी जाते, ना जीना हुवा तो चल बसे इसमें मेरा क्या बस।

स्त्रियां-ख़ैर जी, भगवान करे यह दोनों ही जीते रहें, यह ही सब कुछ हैं।

दूर खड़ी दुलारी भी डिप्टन की यह सब बातें सुन रही थी और मन ही मन दुखी हो रही थी कि देखो यह पुरुष स्त्रियों को दासी गुलाम बना कर घमंड के मारे अंग में तो फूले नहीं समाते हैं परन्तु यह नहीं समझते हैं कि डला पत्थर समझी जाने वाली महा अपमानित और दुर दुर पर सुनने वाली नीच कन्यायों ही को तो वह अपनी अर्द्धांगिनी बनाते हैं। अपने घरबार की सब बाग डोर उनके हाथों में सौंप कर उनही के द्वारा अपनी घिरस्ती चलाते हैं, और अपने सब हा कामों की साझेदार और सलाहकार बनाते हैं। तब उनकी

मूर्खता और नीचता तो उन्हें भी नीच ही बनावेगी और उनके सब कामों को बिगाड़ कर उनकी इज़्ज़त खाक में मिलावेगी। ऐसी दशा में पुरुषों की यह शेखी किस काम आरही है, इससे तो उनकी घिरस्ती ही खराब नहीं हो रही है बल्कि बाल बच्चों की भी जान पर बन आरही है। अपनी स्त्रियों की नीचता और मूर्खता के कारण पुरुष तो अपने बच्चों की बीमारी का भी उचित इलाज नहीं कर सक्ते हैं। अपनी आंखों के सामने ही उन्हें यमदूत के हाथों सौंप देते हैं और टकटक देखते रह जाते हैं। दासी गुलाम के समान जूते के नीचे रक्खी जाने वाली तुम्हारी स्त्रियों के द्वारा ही तो ऐ मर्दो तुम्हारे बच्चे पलते हैं, दासी गुलामों वाले ही उनके स्वभाव बनते हैं और महाउद्धत नटखट और निर्लज्ज ही वह उठते हैं। आश्चर्य है कि अपनी इस सारी मुसीबत को तो तुम रोते रहते हो, परन्तु स्त्रियों की दशा सुधारने की कुछ भी चेष्टा नहीं करते हो। उनको नीच से उच्च बनाने को, और बराबरी का दर्जा देने को बिल्कुल भी तय्यार नहीं होते हो, ऐसी तो बात भी सुनना नहीं चाहते हो। परन्तु याद रक्खो जब तक तुम अपने झूठे घमंड को नहीं तोड़ोगे, स्त्री पुरुष को बराबर नहीं समझोगे, बचपन से ही कन्याओं का लालनपालन भी लड़कों के समान नहीं करने लग जाओगे, उनको बुद्धिमान नहीं बनाओगे, सन्मान देकर उनको आत्म सन्मान नहीं सिखाओगे, उनके भाव उच्च नहीं बनाओगे तब तक तो इन तुम्हारी बांदी गुलाम स्त्रियों के द्वारा तुम्हारा घर मटियामेट ही होता रहैगा और तुम भी किसी लायक़ नहीं बन पाओगे।

दुलारी यह सोचही रही थी कि उसके कान में किसी पुरुष के द्वारा किसी स्त्री को गंदी २ गालियां देकर धमकाये

जाने की आवाज़ आई, जिसको सुनकर वह तुरन्त ही उधर दौड़ी गई और देखा कि डिप्टन के साथ का एक सिपाही एक ग़रीब चमारी को धमका रहा है कि तू अपनी यह घास की गठरी डिप्टी साहब के घोड़े के वास्ते लेचल। चमारी बेचारी हाथ जोड़ २ कर और पैरों में पड़ पड़ कर यह कह रही है कि मेरा मालिक एक महीने से बीमार पड़ा है और एक फूटी कौड़ी भी नहीं कमा सका है, मैं भी उसकी सेवा में लगी रहने से मिहनत को नहीं जासकी हूं और तीन दिन से तो बिल्कुल ही पेट मसोसकर बैठी हूं और इन बच्चों का भी पेट नहीं भरसकी हूं। आज मेले के कारण ही यह घास खोद कर लाई थी कि तुरन्त ही बिक जायगी और इन बच्चों के पेट में भी कुछ पड़ जायगा, सो राम के वास्ते मुझ पर दया करो और मेरी घास छोड़ दो।

चमारी तो इस प्रकार बिनती कर रही थी, और पास में हाड़ों के ढांचे के समान उसके दो बच्चे नंग धड़ंग खड़े रो रहे थे। उस सिपाही को उनपर ज़रा भी दया नहीं आती थी बल्कि वहतो चटाचट गालियां ही बकता जाता था, डंडा भी उठाता था और यह भी कहता जाता था कि चल घास तो डाल तुझे पैसे भी दिला देंगे। दुलारी ने वहां पहुंचते ही सिपाही को डांट कर कहा कि तू क्यों इस ग़रीब औरत पर ज़बर-दस्ती कर रहा है?

सिपाही–कौन है तू लड़की जो सर्कारी मामले में दख़ल देती है?

दुलारी–यह सरकारी मामला नहीं है, बल्कि तुम्हारी ही ज़बरदस्ती का मामला है। किसी भली औरत को इस तरह

गैरी २ गालियां देने का और ज़बरदस्ती करने का तुम को कोई इख़्तियार नहीं हो सकता है, तुम मनुष्य नहीं हो किंतु हृदय शून्य पत्थर की मूर्ति वा फाड़ खाने वाले जंगल के भेड़िये हो जो इसके इस प्रकार गिड़गिड़ाने पर भी ज़बरदस्ती करने से बाज़ नहीं आते हो।

सिपाही-देखो लोगो, यह लड़की बेमतलब मुझसे झगड़ा लेती है और सरकारी काम में दख़ल देती है। इस को समझा लो नहीं तो मैं बुरी तरह पेश आऊंगा।

इतने में वहां बहुत से स्त्री पुरुष इकट्ठे हो गये और दुलारी को समझाने लग गये कि तुझे क्या पड़ी है जो एक नीच चमारी के वास्ते ज़लील होती है और सरकारी झगड़ा मोल लेती है।

दुलारी-यह ग़रीब चमारी हर्गिज़ भी नीच नहीं होसकती है। यह तो महा पतिव्रता पूजने योग्य स्त्री है जो अपने पति के बीमार पड़जाने पर मज़दूरी करने भी नहीं गई है, भूखी प्यासी रहकर उस ही की टहल करती रही है। धन्य है ऐसी महान स्त्रियों को जो अपना धर्म निभाती हैं और स्त्री जाति का मुख उज्वल कर जाती हैं, इस से ज़्यादा सन्मान के योग्य और कौन हो सकता है, परन्तु पुरुषों ने तो आज कल उलटी ही चक्की चला रक्खी है, अर्थात् महा व्यभिचारिणी कुल कलंकनी वेश्याओं की तो क़दर करते है, उनके तो दर्शनों से ही अपने को धन्य धन्य मानने लग जाते हैं और इन पतिव्रता स्त्रियों को नीच समझकर घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इन ही नीच समझी जाने वाली चमारियों में से यदि कोई अपने पतिव्रत धर्म को छोड़ कर वेश्या होजावे तो वह भी तुम लोगों की निगाह में उच्च बन जावे। उसका इतना भारी सन्मान होने लगजावे कि

फूंस की झोपड़ी की जगह तो उसको बढ़िया पक्का मकान रहने को मिल जावे, फटे चीथड़ों की जगह रेशम और ज़री के कपड़े प्राप्त होजावें और भूखों मरने वा गला सड़ा अनाज खाने के स्थान में सत्तर प्रकार के भोजन तय्यार होने लगजावें परन्तु उच्च जाति के पुरुषो इस नीच चमारी को तुम्हारा सन्मान प्राप्त करना मंजूर नहीं है। तुम उसको हज़ार बार नीच कहकर और घृणा की दृष्टि से देखकर बड़े हो लो परन्तु परम पिता परमेश्वर की निगाह में जितनी उच्च यह चमारी है उतने तुम नहीं होसकते हो। तुम्हारे नीच कहने से वह नीच नहीं होसकती है किंतु नीच वह ही हैं जिनकी गर्दन अपने पापों के कारण परमेश्वर के दर्बार में ऊपर को नहीं उठसक्ती है।

सब लोग-देवी, तू हम पर क्यों क्रोध करती है ? हम तो सर्कारी मामला होने के कारण ही तुझे हटाते थे, नहीं तो इस चमारी को थोड़ा ही हम कुछ बुरी बताते थे।

दुलारी-पुरुषो ! पुरुष होकर तुम ऐसे कायर मत बनो, जो अपना कर्तव्य बिल्कुल ही छोड़ बैठो। याद रक्खो, जो कोई किसी ग़रीब कमज़ोर पर जुल्म होता देखकर चुप हो रहता है वह किसी तरह भी पुरुष कहलाने के योग्य नहीं होसक्ता है और अपनी इज़्ज़त भी नहीं बचा सक्ता है। यह ही कारण है कि गांव के नम्बरदार और ज़मीदार बेखता भी मामूली सिपाहियों से जूतियों पिटते हैं और शहरों के बड़े २ साहूकार और दूकानदार बेक़सूर ही छोटे मोटे चपरासियों से गालियां खाते हैं और चूं तक नहीं कर पाते हैं।

इतना कह कर दुलारी बहुत बड़े साहस के साथ उस

चमारी के सामने जा खड़ी हुई और लल्कार कर बोली, देखती हूं कौन मेरे ज़िन्दा रहते इस पर जुलम कर सका है और इसकी घास छीन सकता है, फिर उसने सब स्त्रियों को पुकार कर कहा कि ग़ैरतदार स्त्रियों, पुरुषों में तो इतनी हिम्मत नहीं है कि पतिव्रता स्त्री की इज़्ज़त बचा सकें और उन पर किसी प्रकार का जुल्म न होने दें, इस कारण अब तो तुमहीं आगे आओ और स्त्री जाति की लाज निभाओ। दुलारी की यह पुकार सुनकर अनेक स्त्रियां इकट्ठी होगईं और सिपाही को धिक्कार कर कहने लग गईं कि क्या तुझे और कहीं घास नहीं मिलती है जो इस ग़रीब चमारी को ही सता रहा है। ऐसा अंधेर तो इस राज्य में हो नहीं सक्ता है, इस पर वह सिपाही वहां से टल गया और बेचारी की घास पांच आने में बिक गयी।

इतने में डिप्टी साहब भी आपहुंचे, वह अच्छी तरह बैठने भी नहीं पाये थे कि उनकी स्त्री ने घास का झगड़ा छेड़ दिया और दुलारी और चमारी की बुराइयां कर करके बहुत ही भड़-काना शुरु किया, परन्तु जब उन्होंने अर्दली से पूंछा तो उसने साफ़ २ कह दिया कि मैंने घास के वास्ते चार आने के पैसे बहूजी से मांगे थे परन्तु उन्होंने पैसे न दिये और यहही कह दिया कि किसी घास वाली को पकड़ कर घास डलवालो और दो चार पैसे दिलवा दो। मैं तो यह बात सुनकर चुप हो रहा, पर तहसील का सिपाही घास वाली को पकड़ कर लाने लग गया। इसपर एक लड़की ने उस को ज़बरदस्ती करने से मना किया और जब वह नहीं माना तब उस लड़की ने बहुत से लोग इकट्ठे करके उसकी घास बचा ली और पांच आने में बिकवा दी।

इतना सुनते ही डिप्टी साहब अपनी स्त्री पर बरस पड़े

और गधी, सूरी, सूवर की बच्ची, हरामज़ादी आदि खोटे खोटे बोल बोलकर धमकाने लग गये, कि तू हर रोज़ ही मेरी पगड़ी में ख़ाक डलवाती है, मुझे ज़लील और ख्वार कराती है और अपनी नीचता से बाज़ नहीं आती है। यह ही तेरी बातें रहीं तो एक दिन तू मुझे नौकरी से भी मौकूफ़ करावेगी और हथ कड़ियां डलवा कर जेलख़ाने भिजवावेगी।

स्त्री—सच कहा करते हैं कि भलाई करते बुराई पल्ले बंधती है। मुझे क्या, मेरी तरफ़ से तुम चाहे सारा घर लुटाया करो मेरी जूती को ग़रज़ पड़ी जो आगे को मैं किसी बात में भी दख़ल दूं। यह कहकर उसने तालियों का गुच्छा डिप्टी साहब की तरफ़ फेंक दिया और कहा कि बस संभालो अपनी जमा पूंजी, आगे को तुम ही ख़र्च किया करो और मुझे कुछ भी न कहा करो।

नित्य के अभ्यास के अनुसार इस प्रकार पति पत्नी में थोड़ी देर बक बक होकर दोनों ही चुप हो रहे और किसने किसको क्या कहा था इस को बिल्कुल ही भूल भुलय्यां करके फिर पहले की तरह घुल मिल गये।

९—मेले का दृश्य

शाम को सब गाड़ियां मेले में पंहुच गईं, सबने अपना २ ठिकाना करके रात को आराम किया, सुबह ही देवी के दर्शन किये फिर मेले में घूम फिर कर अनेक प्रकार की वस्तु ख़री-दीं, दोपहर को खाना खाकर आराम किया। तीसरे पहर अनेक

डेरों पर किसी किसी स्त्री के सिर भूत प्रेत वा देवी देवता आने शुरू हो गये। वह अपने बाल बखेर कर सिर हिला हिला कर, उछल कूद दिखाकर,देह को तोड़ मरोड़ कर अनेक प्रकार की बेतुकी बातें कहती थीं। उनके सब साथी हाथ जोड़ जोड़ कर उनके चारों तरफ़ बैठ जाते थे, और मेले के अन्य बहुत लोग उनका तमाशा देखने खड़े हो जाते थे, पागल सी होकर वह स्त्रियां अपने कपड़े भी फाड़ डालती थीं और नंगे होकर जो मुंह आया बकने लग जाती थीं। घर वालों को खूब ही गालियां सुनाती थीं और उनका सत्यानाश कर डालने का डर भी दिखाती थीं, बेचारे घर वाले बैठे बैठे कांप रहेथे और लज्जा के मारे पानी पानी हुए जाते थे, ऐसी बेशरमी के अखाड़े जगह जगह जुड़ रहे थे और मेले के लोग ख़ुश हो होकर उनका तमाशा देखते फिर रहे थे।

रात को वह सब स्त्रियां मन्दिर के चौक में लाई गई। डोरू डन्के बजने लगे, मोरछल उनके सिर पर को फिराई जाने लगी और मन्दिर के पुजारी उनके चारों तरफ़ घूम २ कर, कोड़े पटखा २ कर और अनेक प्रकार के उकसावे और हुङ्कार दे देकर उनको कुदाने लग गये। मेले के हज़ारों आदमी वहां इकट्ठे हो रहे थे और सारे चौक मे खचा खच भर रहे थे। दुलारी के मां बाप दुलारी को भी वहां लाये और पुजारियों ने अन्य स्त्रियों के समान उसको भी कुदाना चाहा जिस पर उसने शेरनी की तरह गरज कर कहा कि मैं तुम्हारे नचाये नाचने वाली नहीं हूँ, मैं तो तुम्हारे इस माया जाल को तोड़कर स्त्रियों की इस निर्लज्जता और मूर्खता को हटाऊंगी और उनको आदमी बनाऊंगी।

पण्डे-लड़की, यह महा शक्तिशाली जगत् माता का मंदिर है जिसकी जागती जोत चारों खूंट संसार भर में फैली हुई है। यहां तो बड़े बड़े घमन्डी और भुजाधारी आते हैं और सिर नवाकर ही जाते हैं, तुझ ज़रा सी बच्ची की तो हक़ीकत ही क्या है।

दुलारी-मेरी कुछ हक़ीक़त हो या न हो पर मैं खुले दहाने कहती हूँ कि यह सब स्त्रियां जो तुम्हारे कुदाये कूद रही हैं और पांच पांच आदमियों के भी क़ाबू में नहीं आती हैं इनका नाचना कूदना मैं एक दम बन्द कर सकती हूं और तुम्हारी सारी क़लई खोलकर धर सकती हूं।

पंडे-लड़की तू देवी के थले पर बैठकर ऐसे घमंड के बोल मत बोल। महाशक्तिशाली देवी पल भर में कुछ से कुछ कर सकती हैं, क्रोध आने पर सारे मेले को टांगकर धरसकती है।

दुलारी की मां-(पंडेके पैरों पड़ कर) महाराज जी तुम इस लड़की के कहने का ख़याल क्यों करते हो, इसको तो ओपरा असर हो रहा है। इस ही वास्ते तो मैं इस को तुम्हारे क़दमों में लाई हूं, जिस से देवी मय्या की कृपा होजाय और यह अपने आपे में आजाय।

पंडे-माई तू मत घबरा, देवी तो भगत प्रति पालनी है। तेरी अर्दास ज़रूर क़बूल होगी और तेरी बेटी की बुद्धी ठिकाने आजायगी।

दुलारी-मेरी बुद्धी तो ठिकाने आई हुई है, पर मुझे तो दुनिया भर की इन स्त्रियों की बुद्धी ठिकाने लानी है जो तुम जैसों के जाल में फंसकर अपने धर्म कर्म को बिल्कुल ही खो

बैठी हैं और स्त्री जाति को लजा रही हैं। देखो, सब से अधिक मल्ल की तरह कूदने वाली और सब से ज़्यादा निलज्जता दिखाने वाली यह इन सेठ साहब के बेटे की बहू है जिन्हों ने कल ही हज़ारों रुपये का माल देवी पर चढ़ाया है और अपनी बहू के आराम होजाने पर सवा लाख रुपये की लागत का मन्दिर बनवा देने का वादा किया है, जिस से तुम सब पंडे भी अधिक करके इस ही स्त्री को कुदा नचा रहे हो और सेठजी को बहकाने के वास्ते तरह तरह की बातें बना रहे हो। मैं भी अब सब से पहले इस ही का भांडा फोड़ती हूं और ललकार कर कहती हूं कि यह सब इस स्त्री का मकर फ़रेब है कोई किसी प्रकार का भी ओपरा असर इसको नहीं है, यदि सेठ साहब मुझको इस बात का इख्तियार दें कि मैं जो चाहे करूं, तो मैं अभी इस का सारा फ़रेब खोलकर दिखा सकती हूं, इसका सब नाचना कूदना बन्द करदे सकती हूं।

सेठ साहब तो पहले ही मेले वालों से दुलरी की बाबत सुन चुके थे कि वह भी बहुत शक्ति शाली लड़की है और साक्षात देवी ही मानी जाती है। इस कारण उन्होंने तो दिन में ही यह चाहा था कि दुलारी को चढ़ावा चढ़ाकर उससे भी अपनी बहू को चंगी करावें, परन्तु दुलारी के मां बाप ने उनकी इस बात को स्वीकार न करके दूर से ही टाल दिया था। अब जो दुलारी ने स्वयम ही उनकी बहू पर हाथ डालने की इच्छा प्रगट की तो सेठ साहब ने खुशी से मंजूर कर लिया और कह दिया कि तुमको इख्तयार है जो चाहो करो। तब दुलारी ने लाल मिर्चें मंगाकर और उनको आग पर डालकर उस की खूब गहरी धूनी बहू को सुंघाई, जिसकी धसकसे बेचैन होकर वह बड़े ज़ोर के साथ दूर भागने की कोशिश करने लगी, परंतु

दुलारी ने उसको सेठ के आदमियों से मज़बूत पकड़वा दिया और मिर्चों का बहुतसा धूंआ ज़बरदस्ती उसको सुंघाही दिया जिस की धसकसे लाचार होकर पहले तो बहू ने चिल्ला२ कर यह ही कहना शुरू किया कि ख़बरदार इसको धूनी मत सुंघाओ नहीं तो हम नाराज़ होजावेंगे और तुम्हारा सत्यानाश कर दिखावेंगे, परन्तु जब इस कहने पर भी दुलारी ने उसको न छोड़ा तो मिन्नत के साथ यह ही कहना पड़ा कि मुझे छोड़ दो, नहीं तोधसक के मारे दम घुट कर मेरे तो प्राण ही निकल जावेंगे।

पंडे-दूर हटजा लड़की, तू तो साक्षात ही चांडालनी है, और बहू की जान ही लेना चाहती है, परन्तु इस देवी मन्दिर में हम कदापि ऐसा नहीं करने देसकते हैं।

एक आदमी-कौन है जो इस महा बुद्धिमान लड़की को चांडालनी कहता है, मैं भी डाक्टर हूं और मिर्चों की धूनी न देकर दूसरी बहुत हलकी दवा के द्वारा ही इन सब स्त्रियों को होश में ला सकता हूं, एक दम सब भूत प्रेत दूर भगा सक्ता हूं।

पंडे-देवी मन्दिर में महा अपवित्र और अशुद्ध अंग्रेज़ी औषधियां कोई नहीं लासकता है।

डाक्टर-कोई अपवित्र दवा नहीं बर्ती जावेगी, ब्रोमाईडा पोटासियम नाम का एक खारा खारा नमक तो खिलाया जावेगा, और चूने और नौसादर से बनी हुई अमोनिया नाम की दवा सुंघाई जावेगी, अगर आप लोगों को विश्वास न हो तो चूना और नौसादर मंगाकर आपके सामने ही दवा बनादी जावेगी और खिलाये बिदून भी होश ठिकाने लादी जावेगी।

मेले के लोगों को तो इस बात के देखने का बहुत शौक होरहा था और सब को एक प्रकार का तमाशा सा होरहा था। इस कारण वह एक दम चिल्ला उठे कि डाक्टर साहब आप भी तो हिंदू धर्म हैं तब कोई अपवित्र दवा कैसे दे सक्ते हैं, आप तो बेखटके जो दवा चाहें खिलावें वा सुघावें और इन औरतों को होश में लावें। इस पर डाक्टर ने अपना बक्स मंगाकर उन सब स्त्रियों को अमोनिया सुंघाया और ब्रोमाईडा पानी में घोलकर पिलाया, जिससे थोड़ी ही देर में उनका सब नाचना कूदना जाता रहा और वह अपना कपड़ा ठीक करके चुप चाप नमानी सी होकर बैठ गई।

डाक्टर-अब पंडों से पूछो इनका भूत प्रेत कहां चला गया है और अगर नहीं गया है तो क्या कोई पंडा इतनी शक्ती रखता है जो इनको पहले की तरह उद्धत बनाकर नचा कुदा सके।

इस पर पंडे लोग अटकलपच्चू बातें बनाकर बहुत कुछ शोर मिचाने लग गये और अंग्रेज़ी पढ़े बाबू लोगों की बुराई कर करके और कलुयुग का दोष निकाल.२ करके महा अंधेर सिद्ध करने लग गये, परन्तु लोगों पर उनके इस शोर का कुछ भी असर न हुवा, सब को इन स्त्रियों का ही मायाचार निश्चित होगया।

डाक्टर-लोगो, यह सब नतीजा बाल विवाह और अनमेल विवाह का ही है, जिस कारिवाज आज कल बहुत ही ज़्यादा हो रहा है, अगर आप लोग खोज लगावें तो आपको साफ़ २ मालूम होजावे कि इन स्त्रियों के पति इनके जोड़ के नहीं है. इसही से यह ऐसी उद्धत और निर्लज्ज होगई हैं, इनमें से किसी

का पति तो इनसे उमर में, क़द में वा ताक़त में कम है, कोई इन से बहुत बड़ा है वा बिल्कुल ही बुड्ढा होगया है कोई व्यभिचारी है, कोई दुराचारी है, कोई छोटी उमर में विवाह होजाने से ही नामर्द वा कमज़ोर होगया है, किसी ने बालपन में ही अपने ब्रह्मचर्य को नष्ट कर दिया है, ग़रज़ पुरुषों के इस बिगाड़ने ही इन स्त्रियों को ऐसा मस्त बनादिया है, मैंने जो दवा इन स्त्रियों को पिलाई है वह नसों को ढीला करके मस्ती के दूर कर देने के सिवाय और कुछ भी असर नहीं रखती है जिस से साफ़ सिद्ध है कि इनको जवानी की मस्ती के सिवाय और कुछ भी ओपरा असर नहीं था, भूत प्रेत वा देवी देवता का बहाना तो झूठ मूठ ही किया जा रहा था।

सेठ पुत्र–डाक्टर साहब का कहना बिल्कुल सच्चा है। लोगो मैं इस स्त्री का अभागा पति हूं, मेरे माता पिता पांच करोड़ के धनी हैं ओर मैं ही एक अकेला उनकी सन्तान हूं। मेरी सास भी सात करोड़ की मालिक है और उसके भी एक यही लड़की है। मेरे माता पिता ने साफ़ साफ़ यह बात जानते हुए भी कि यह लड़की हमारे लड़के से दो बरस बड़ी है और रांड का सांड होने के कारण बहुत ही उद्धत और सिर चढ़ी हो रही है, इन सात करोड़ रुपयों के लालच में ही आंख मीच कर मेरे गले बांध दी है और मेरी सास ने भी यह सब बातें जानते हुए कि लड़का लड़की से उमर में क़द में ताक़त में बल में ग़रज़ सब ही बातों में हीना है, केवल अपने समान धनवान और प्रतिष्ठावान देखकर ही अपनी लड़की ब्याह दी है। ब्याह नहीं दी है किन्तु हम दोनों की जान मुसीबत में फंसा दी है। मैं अपनी स्त्री की इस निर्लज्जता से जो वह अपने ऊपर भूत चढ़ाकर लोगों को दिखाती है बहुत ही ज़्यादा लज्जित होरहा

हूँ। जीता ही धरती में गड़ा जा रहा हूँ, अपने जीवन को बिल्कुल ही निरर्थक और भार स्वरूप समझ रहा हूं, अब तुम ही बताओ कि मैं क्या करूं, मर जाऊं वा ज़िन्दा रहूं और ज़िन्दा रहूं तो किस तरह इस महा बेहयाई का जीवन बिताऊं।

दुलारी-ज़रूरत तो इस ही बात की है कि जिस धन के लालच में तुम्हारे माता पिता ने तुमको इस दुख सागर में डुबोया है, जिस धन के चमत्कार को देखकर तुम्हारी सास ने अपनी लड़की को यहां सौंपा है तुम उस धन को उन्हीं के वास्ते छोड़कर ब्रह्मचारी हो जाओ और देश २ घूमकर अनमेल विवाह की प्रथा को दूर कराओ, परन्तु तुम बहुत ही ज़्यादा लाड़ में पले हो, और बहुत ही ज़्यादा तुनक मिज़ाज़ और नाज़ुक हो रहे हो इस वास्ते तुम से घर छोड़ना और फ़कीरों की तरह रहना असम्भव ही प्रतीत होता है।

सेठ-(बात काटकर) मैं आप ही अत्यन्त लज्जित हूं कि मैंने लालच में आकर अपने बेटे का अनमेल ब्याह किया, उस को भी महा घोर दुखों में डाला और अपनी इज़्ज़त को भी धूल में मिलाया। अब यह लड़का मुझको जो चाहे सज़ा देले और यह सारा का सारा पांच करोड़ रुपया दुनियां से अनमेल विवाहों के उठा देने में लगा दे। जितने चाहे उपदेशक देश विदेश घुमावे पर आप घर से बाहर न जावे।

सेठानी-(हाथ जोड़ कर) यह सारा दोष तो मुझ मूरख डायन का ही है, मेरी ही ज़िद से यह सगाई ली गई थी और बड़ी बहू ब्याही गई थी। इस वास्ते इसका तो सारा दण्ड मुझ ही को मिलना चाहिये, मैं तय्यार हूं। मुझे चाहे सूली पर चढ़ा दो चाहे काला मुंह करके देशत्याग दिला दो, पर मेरा

यह बेक़सूर बेटा घर से बाहर न जावे। घर बैठा चाहे जितना धन लुटावे।

सास–मेरा सात करोड़ रुपया भी इस ही काम में लगादे पर घर से बाहर न जावे।

बहू--मैं पापिन भी अपना दोष स्वीकार करती हूं और आगे के लिये प्रतिज्ञा करती हूं कि न तो कोई मायाचारही चलाऊंगी और न कभी कोई भूत प्रेत ही बुलाऊंगी, किन्तु लज्जा और सन्तोष के साथ ही बिताऊंगी, परन्तु आप सब लोगों की दुहाई देकर यह प्रार्थना अवश्य करती हूँ कि चाहे मेरा पति मुझ से बात भी न किया करै, चाहे मेरी शकल देखना भी छोड़ देवे और चाहे मुझे झूठे टुकड़े ही खिलावे और फटा पुराना ही पहनावे और चाहे मुझ से घर का मैला ही साफ़ करावे, विष्टा ही उठवावे, अन्य प्रकार भी मुझको जो चाहे दंड दिलावे परन्तु स्वयम घर छोड़कर कहीं न जावे।

दुलारी–बस अब सब कुछ ठीक होगया है, तुम एक बरस तक घर ही रहो और पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करो, साल भर तक अपनी स्त्री की भी परीक्षा लो और अटूट धन लगाकर अनमेल विवाह की प्रथा को बन्द करने की भी कोशिश करते रहो, फिर साल भर पीछे जैसा उचित समझो करो।

सेठ पुत्र–मुझे देवी की आज्ञा शिरोधार्य है, अवश्य ऐसा ही करूंगा।

सब लोग– जय हो राम दुलारी देवी की जय हो।

सुबह ही मेला बिछड़ गया और सब लोग अपने अपने घर चले गये।

१०—आग लग रही है संसार में।

इस मेले के दृश्य से दुलारी के मन में बड़ी भारी चोट लगी थी। स्त्री जाति का ऐसा महा पतन देखकर उसका हृदय एक दम उबल उठा था और यही जी चाहता था कि तुरन्त घर से निकल पड़ूं और इनके उद्धार करने में ही लग जाऊं, देश विदेश घूमकर स्त्रियों को जगाऊं, आत्मबल देकर उनको मनुष्य बनाऊं। कष्ट सहने का उसको भय नहीं है, जान जोखम में पड़ने का उसको डर नहीं है, किन्तु एक मात्र यह ही सोच है कि किस विधि से इस महान कार्य को उठाऊं जिससे जल्दी ही सिद्ध कर पाऊं।

घर जाकर अब वह पहले से भी ज़्यादा एकान्त में बैठी रहती थी, अपने तन बदन की भी सुध भूल गई थी, इसकी बाबत अव्वल तो पहले ही से अनेक स्त्री पुरुषों का यह ख़याल हो रहा था कि वह देवी का अवतार है और अब मेले में जाने से तो उसकी यह प्रसिद्धि बहुत ही ज़्यादा हो गई थी और गांव२ फैल गई थी। इस ही प्रसिद्धी के अनुसार एक दिन एक गांव की स्त्री जिसकी उमर अनुमान ३५ बरस की होगी उसके पास आई और पैरों में सिर रखकर बोली कि देवी मैं बहुत दुखी हूँ। मुझ पर भी कृपा दृष्टि हो जाय। तेरी दया से मेरा भी बेड़ा पार होजाय, दुलारी तुरन्त ही उठकर उसको अपने सिराहने बिठाने लगी परन्तु वह न बैठी, और दुलारी के पैर पकड़ कर और आंखों में आंसू लाकर गिड़गिड़ा २ कर यह ही कहती रही कि देवी तेरे सिवाय अब मेरा और कोई भी ठिकाना नहीं रहा है मुझे निराश मत करना। उसकी यह दशा

देखकर दुलारी ने उसकी बहुत कुछ तसल्ली की और धीरज के साथ अपनी सब व्यथा सुनाने की प्रेरणा की।

स्त्री-देवी मेरे कोई पुत्र नहीं है। लड़की तो मेरे पांच हो चुकी हैं जिनमें ३ अब तक जीती हैं, पर लड़का एक भी नहीं हुआ है। तू मुझे एक लड़का देदे तो मेरे सब संकट दूर हो जांय।

दुलारी-लड़का न होने से तुमको क्या संकट होरहा है ?

स्त्री-देवी जी तुम तो अन्तरयामी हो इस कारण आप ही जानती होगी कि लड़का न होने से मैं कैसी निरादरी हो रही हूँ, दिन रात कैसे २ चोके सास ससुर के सहती हूँ। उठते बैठते चलते फिरते खाते पीते जैसी २ ज़हर भरी बोलियों के तीर मेरे हृदय में चलाये जाते हैं वह मैं ही जानती हूँ, या मेरा हृदय जानता है जो बिध २ कर छलनी होगया है और भुन २ कर कोयला बन गया है। मुझे तो जब से गर्भ रहता है तब से ही बड़ा भारी सहम चढ़ जाता है कि कहीं ऐसा न हो जो अब के भी लड़की हो जाय और मुझ पर दूनी आफ़त आय। पर क्या करूं मेरी तो क़िस्मत ही कुछ ऐसी है कि सदा लड़की ही पैदा हो जाती हैं, और उस ही वक्त से मुझ पर वाण वर्षा होने लग जाती है और मैं ज़च्चाख़ाने ही में निरादरी करके छोड़ दी जाती हूं। ननँद, फुफस, द्योरानी, जेठानी, गली मुहल्ले वाली, नायन, धोबन, कहारी, कुम्हारी, भंगन और चमारी जो आती है वह ही घाव पर नोन छिड़कती आती है। मुझे पत्थर जनने का दोष देकर लड़कियों को घूरे का कूड़ा आफ़त की जड़ और मुसीबत का पहाड़ ही सिद्ध करने लग जाती हैं। हा, वह मेरी सास जो मेरे गौने आने पर मुझे अपनी बेटी

के समान छाती मे लगाती थी और मुझ पर बार बार जाती थी वह ही इन लड़कियों के पैदा होने के कारण मेरी बैरन हो गई है। जेठ ससुर आदि सब ही से दुर्कार दिलाती है और नोच २ खाती है। मेरे प्यारे पति को तो उसने मुझ से ऐसा बिगाड़ा है कि बिना लात घूंसे और थप्पड़ जूते के बात ही नहीं करता है। इतना कहकर वह स्त्री रोने लगी।

दुलारी–माता रो मत, रोने से कुछ नहीं होता है। मनुष्य का काम रोने का नहीं है, किन्तु साहस के साथ उपाय करने का ही है।

स्त्री–देवी मैं सब उपाय कर चुकी हूं, दाई की बताई हुई बड़ी २ तीक्ष्ण औषधियां भी खा चुकी हूं, पीर पैग़म्बर और देवी देवता भी मना चुकी हूं। ब्राह्मणों से जप भी बहुत कुछ कराये हैं, पितरों की बलि भी दी हैं, जंतर मंतर और जादू टोनों की तो कुछ हद ही नहीं रही है। देवी तुमसे तो कोई बात छिपी हुई नहीं है, मैं तो स्यानों के कहने से घर वालों की चोरियों २ बड़े २ साहस के काम भी कर चुकी हूं। नंगी होकर आधी रात को स्मशान में मैं गई हूं, खून के थापे लोगों के दर्वाज़ों पर मैंने लगाये हैं, लोगों के छप्परों में आग मैंने लगाई है जिन में डंगर बंधते थे और सब जल मरते थे। द्योरानी जेठानी और बगड़ पड़ौस के लड़कों पर टोटके मैंने कराये हैं जिस से वह तो मर जायं और फिर मेरे गर्भ में आकर पैदा होजायं, और भी जो कुछ किसी ने बताया है, सबही कुछ किया है, पर किसी से भी कुछ नहीं हुवा है। सदा डला पत्थर ही पैदा होता रहा है। अब देवी मैं पापनी कलंकनी तेरे दर पर आई हूं अब या तो तू मुझे इस धरती से उठाले, नहीं तो एक पुत्र की मिहरबानी करदे।

हो हो, आग लग रही है संसार में तो, इसको जल्दी बुझाओ और स्त्री जाति को बचाओ। यह कहती हुई दुलारी उठकर चलदी और यह ही कहती हुई बाज़ारों बाज़ार चली गई। लोग उसके पीछे २ हो लिये और नगर भर में शोर हो गया कि देवी फिर भवन में आरही है और बाज़ारों बाज़ार दौड़ी जा रही है। यह सुनतेही लोग बाज़ार में आये और चौक में दुलारी को घेरकर देवी मैय्या की जय पुकारने लग गये, और हाथ जोड़कर बोले कि देवी शान्ति धारण करके जो आज्ञा हो कहो।

दुलारी–संसार के लोगो क्या तुम सृष्टी का मटियामेट करके महा प्रलय ही करना चाहते हो जो पुत्र ही पुत्र चाहते हो और पुत्रियों के पैदा होने पर रोने लग जाते हो। यदि तुम्हारी इच्छा के अनुसार पुत्रियों का पैदा होना ही बन्द हो जाय तब तो निश्चय है कि आगे को सन्तान का होना ही खतम हो जाय। अकेले पुरुषों से तो किसी प्रकार भी सन्तान नहीं हो सकती है किन्तु सृष्टी की समाप्ति होकर महा प्रलय ही हो जाती है। इसके सिवाय तुम्हारे तो यह बस में भी नहीं है कि पुत्र ही पुत्र उत्पन्न करो और पुत्रियां न पैदा होने दो। ऐसा तो सतयुग के शक्ति शाली पुरुष भी नहीं करसके थे जो कन्या के जन्मते ही उसका गला घोटकर मार डालते थे और ऐसा करना अपने पवित्र कुल की एक बड़ी भारी प्रतिष्ठा मानते थे। यह बात तो उनसे भी नहीं हो सकती थी कि कन्याओं का गर्भ में आना और जन्मना ही बन्दकरदें। तब तुम किसी स्त्री के पुत्री जन्मने पर क्यों उससे नाखुश हो जाते हो, क्यों उसका निरादर करने लग जाते हो?

पुरुषो तुमने स्त्रियों का निरादरकरके उन को महा निर्दया

राक्षसी और पशु समान मूर्ख बनाकर अपने घर को ही नरक कुण्ड बना लिया है। तुमने अपने ऊंचे कुल के झूठे घमण्ड में उनको जन्मते ही मार डालने की महा नीच प्रथा चलाई, पति के मर जाने पर जीती जल मरने का महा भयानक दस्तूर बनाया। एक पुरुष को अनेक स्त्रियां ब्याह कर स्त्रियों को सौतिया डाह में जलाया, अब भी तुम उनको बांदी गुलाम के समान मानकर अनेक प्रकार के त्रास देते हो, निर्जीव पत्थर कंकर के समान समझते हो, स्त्री के मर जाने पर आप तो तुरन्त विवाह करा लेते हो किन्तु उन को जन्म भर रांड़ बिठाकर धधकते अंगारों पर तड़पाते हो। छोटी २ कन्याओं को बुड्ढों के साथ ब्याह कर अपने हाथों उनको रांड़ बनाते हो और ऐसी ही ऐसी बातों में अपना ऊंचपना जताते हो। कन्या के पैदा होने पर शोक करने लग जाते हो, हर वक्त उसका मरना मनाते हो, रांड़ मरजानी आदि नामों से पुकार कर अपने हृदय की दाह मिटाते हो।

चिरकाल के तुम्हारे इस व्यवहार से होते २ सब ही स्त्रियों को यह चाह होने लग गई है कि हमारे उदर से पुत्र ही उत्पन्न हों, कन्या न हों, इस चाह में स्त्रियां गुप्त रीति से नाना प्रकार के उपाय करती हैं और धूर्त ठगों से बुरी तरह ठगाई जाकर बड़े २ राक्षसी कृत्य करने लग जाती हैं, परन्तु कभी तुमने यह भी विचारा है स्त्रियों के इन राक्षसी कृत्यों का फल क्या होता है। ज़रा सोचो और बुद्धि लगाओ तो तुमको मालूम हो कि अपने इन राक्षसी उपायों के कारण ही स्त्री जाति अब कोमल हृदय नहीं रही हैं, किन्तु वज्र के समान अत्यन्त ही कठोर क्रूर हो गई है। यह ही कारण है कि सगी दौरानी जेठानी को को भी आपस में एक दूसरी पर विश्वास नहीं होता है।

यह ही खटका लगा रहता है कि यह मुझ पर या मेरे पुत्र पर कोई किसी प्रकार का टोटका वा जादू मंत्र न करादे, इसही से बढ़ते २ स्त्रियों में द्वेष रखने का अभ्यास पड़ गया है और घर २ में नित्य लड़ाई झगड़ा और खैंचतान रहकर गृहस्थ का सब प्रबन्ध मटियामेट होगया है और दुखही दुख रहने लग गया है। इसके इलावा तुम यह भी जानते हो कि पुत्र की उत्पत्ति के लिये स्त्रियों को यह सब राक्षसी उपाय और निर्लज्जता के कार्य बहुत ही ज़्यादह छिपा छिपा कर करने पड़ते हैं, इस कारण उनको बड़ा भारी मायाचार रचना होता है। महा नीच और मक्कार स्त्री पुरुषों को अपना गुप्त भेदी बनाना पड़ता है और बड़े २ नीच प्रपंच जोड़ने होते हैं। इसही प्रकार के संस्कारों से स्त्रियां मायाचारिणी हो गई हैं। मनमें कुछ और बाहर कुछ ज़ाहिर करती हैं, सदा कपट भरी बात बनाती रहने से महा नीच और निर्लज्ज प्रकृति की बन गई हैं। इसही से तुम्हारा सारा गृहस्थ नरक स्थान बन गया है जिसमें सदा कलह और द्रोह की ही आग दहकती रहती है तुम सबही उस आग में जलते हो और नरकों का त्रास भोगते हो।

स्वार्थी पुरुषो तुम ज़रा अपने घरकी तरफ़ देखो कैसी भयानक आग लग रही है, कैसी आपा धापी पड रही है, घरों का सब प्रबन्ध मलियामेट होकर चारों तरफ़ एक मात्र दुख ही दुख खड़ा हो गया है, इस कारण सावधान हो जाओ और जितनी भी जल्दी होसके इस आग को बुझाओ, यदि दूसरों के घर की आग नहीं बुझाना चाहते हो तो अपने २ घर की तो बुझाओ इस तरह भी संसार भर की आग बुझ जायगी और सब ही जगह सुख शान्ति होजायगी, यदि तुम अपने ही अपने घरोंकी स्त्रियों की मूर्खता, स्वार्थ और द्वेष भावोंको दूर

कराकर आपस में सच्ची प्रति पैदा करादो तो तुम्हारा घर हिंसक पशुओं का जंगल वा कंजरों का टांडा न रहकर गृहस्थि॰ यों का घर बनजावे, और तुम्हारी सबकी ज़िन्दगी सुखशान्ति में ही बीतने लगजावे।

समझदार पुरुषो ज़रा सोचो तो कि जब कन्याओं को पैदा होते ही कूड़ा कवाड़ बताया जाता है सर्व प्रकार उनका निरादर किया जाता है, यहां तक कि उनके मुंह पर ही उनका मरना मनाया जाता है, तो क्या ऐसी दशा में उनके हृदय में किसी प्रकार का आत्म सन्मान वा आत्म गौरव आसकता है और कोई उच्च भाव पैदा हो सकता है, जब कन्यायें जन्म से ही नीच बताई जाती हैं तो वह तो अवश्य ही नीच बनजावेंगी और जहां व्याही जावेंगी वहां नीचता ही दिखावेंगी, इस ही से उच्च पुरुषों के घर भी नीच ही बनजाते हैं और उन उच्च पुरुषों को भी नीचता के ही नाच नाचने पड जाते हैं, इस ही से कहती हूं घर घर आग लग रही है इसे बुझाओ, बुझाओ और शीघ्र ही बुझाओ।

दुलारी यहां तक ही कहने पाई थी कि उसका पिता अपने कुटुम्बियों को साथ लेकर वहां घुस आया और उसको जबर- दस्ती घरले चला।

दुलारी-पिताजी! मैंने अपना काम शुरु करदिया है अब मुझे घर मत ले चलो।

माधोलाल-होश कर बेटी, अब तू बच्ची नहीं रही है, दस दिन में तो तेरा व्याह होने वाला है। अब तेरे ऐसी बात करने के दिन नहीं रहे हैं।

दुलारी-मैं ब्याह नहीं कराऊंगी, हर्गिज़ नहीं कराऊंगी। मैं तो जन्म भर क्वारी ही रहूंगी, और संसार का उद्धार करूंगी! आग लग रही है संसार में, सबके ही घर जल रहे हैं, सबही बिलबिला रहे हैं, पर बुझाने की चेष्टा बिलकुल भी नहीं करते हैं, मैं यह आग बुझाऊंगी और सुख शान्ति फैलाऊंगी।

रामप्रसाद-सीधी तरह से चलना हो चल नहीं तो हड्डियां तोड़ डालूंगा।

दुलारी-तो क्या किसी कन्या को यह अधिकार नहीं है कि वह क्वारी रहकर अपना जन्म धर्म अर्थ ही बितावे?

रामप्रसाद-यह सब अधिकार तुझे घर चलकर ही बताऊंगा।

इतना कहकर यह लोग ज़बरदस्ती दुलारी को उठाकर घर ले गये और वहां उसको रस्सियों से बांध जूड़कर स्त्रियों को ताकीद करने लगे कि इसको खोलना मत नहीं तो भाग जायगी, इसको तो भूत प्रेत आदि का कुछ भी असर नहीं है किन्तु किसी हमारे बैरी दुश्मन ने ही बहका रक्खा है।

दुलारी की मां-मैं तो चार दिन से चिल्ला रही हूं कि तकिये वाले पीर जी को बुलादो, पर तुम्हें तो ऐसी ज़िद हो रही है कि सुनते ही नहीं हो, अब जब मैं बेशरम होकर अपने आप बुलाकर लाऊंगी तब मानोगे।

रामप्रसाद-अच्छा तेरे पीरजी को भी बुलाकर लादेता हूं।

११--पीरजी की करतूत ।

यह पीरजी साठ बरस का एक बुड्ढा फ़क़ीर था और छोटे शाह के नाम से प्रसिद्ध था, गांव से बाहर सड़क के किनारे एक ठिकानासा बना रक्खा था जो फ़क़ीर का तकिया कहिलाता था, वहीं वह बैठा रहता था, रस्ते चलतों को हुक्का पिला देता था और आग का भी आराम मिल जाता था, जिस से वह पैसा धेला देजाते थे और इसका गुज़र चल जाता था, कभी कोई हिन्दू गंडा तावीज़ बनाने वा भूत प्रेत उतारने को बुलाले जाता था, तो दो चार रुपये भी झटक लाता था, रामप्रसाद भी अपनी स्त्री की अज्ञानुसार तकिये पर गया और सलाम करके सब हाल सुनाया।

पीरजी-लाला साहब लड़की को तो बहुत ही ज़बरदस्त जिन्न लिपटा है, पर कैसा ही हो अल्लाह चाहे तो पकड़ा ज़रूर जावेगा।

आस पास के दो चार मज़दूर भी हुक्का पीने पीरजी के पास आबैठते थे और उस समय भी बैठे हुवे थे।

एक-आपके सामने कौन जिन्न भूत ठहर सकता है, आप ने तो ऐसे २ जिन्नों को पकड़ा है जो किसी के भी क़ाबू में नहीं आते थे, वह थोड़ा ज़बरदस्त था जो क़ादिर की बहू के सिर आता था पर आपने तो उसको चुटकियों में ही पकड़ लिया था।

पीरजी-सब अल्लाह ही करने वाला है, अच्छा लालाजी अबतो हमारी नमाज़ का वक्त है कल आसकते हैं दोपहर बाद।

दूसरा–और अगर रात को ही शाहपुर से नव्वाब साहब का आदमी हाथी लेकर आगया तो ?

पीरजी–हां खूब याद दिलाया, वहां जाने का तो हम वादा कर चुके हैं।

इसपर रामप्रसाद पांच रुपये पीरजी के पैरों में डालकर अभी चलने के वास्ते मिन्नत करने लगा और पास बैठने वाले मज़दूरों ने भी पीरजी को कहा कि यह लाला बहुत दुखी मालूम होता है इस पर रहम करके ज़रूर चलना चाहिये।

इस पर पीरजी उन लोगों को साथ लेकर रामप्रसाद के साथ उसके मकान पर आया।

दुलारी–क्या तुम मेरे ऊपर से भूत उतारने आये हो, पर मेरे ऊपर तो कोई भी भूत प्रेत नहीं है।

पीरजी–हम सब जानते हैं तुम्हारी चालाकियों को, अच्छा जी एक चिराग़ लाओ तेल भरकर, यह ख़बीस वैसे थोड़ाही मानेगा।

दुलारी की मां तेल का चिराग़ लाई और पीरजी ने जेब में से काग़ज़ की एक बत्ती निकाल कर चिराग़ में लगाई और दियेसलाई से जलाई, बत्ती के थोड़ा सा जल जाने पर पटाख़ा सा छूटने की आवाज़ हुई।

पीरजी-अच्छा जी हमारा मवक्कल तो आगया अब बताओ तुमको मवक्कल से गिरफ्तार करावें या वैसे ही जाते हो, (दुलारी को अपनी छड़ी से छेड़कर) बोलो जल्दी बोलो, हम तुमसे पूछते हैं।

दुलारी-मैं तो पहले ही कह चुकी हूं, मेरे ऊपर कोई भूत प्रेत नहीं है।

पीरजी-हम समझ गये यह सीधी उंगलियों मानने वाला नहीं है, अच्छा लाला साहब, इतने यह फलीता जले, तुम दौड़ कर बाज़ार से छटांक भर छोटी इलायची, छटांक भर लौंग, छटांक भर अष्टगंध, छटांक भर गूगल, छटांक भर संदूर, सवासेर मिठाई, सवासेर बादाम, सवासेर छुआरे, पांच गज़ सुर्ख़ कपड़ा, और एक नाला रेशम का लेते आओ, और भई खुदा बख्श तुम हमारे डेरे से वह दोनों शीशे जिस में भूत उतारा करते हैं और हमारा जादू का सोटा उठालाओ, अब तो आगये हैं, इसका इलाज ही बनाकर जावेंगे।

इनको गये अभी पांच मिनट भी न हुये थे कि पीरजी ने राम प्रसाद के बड़े लड़के को देखकर कहा कि अहो हम लाला को इतर के वास्ते तो कहनाही भूल गये, जाओ तुम दौड़कर एक माशा इतर लेकर आओ।

फिर जब वह लड़का भी चला गया तो पीरजी ने दुलारी की मां से कहा कि देखो इन अपने छोटे बच्चों को दूर लेजाकर बैठो, यह जिन्नों और भूतों का मामला है, ऐसा नहो कि झपेट में आजायं और हां एक सात तार का नाला भी बांट कर लाओ नहाकर और पाक साफ़ कपड़े पहन कर ही बांटना, ऐसा नहो कुछ गड़बड़ करदो, तुम हिन्दू लोगों को पाकी नापाकी का कुछ ख़्याल नहीं होता है, यह सुनकर वह भी चली गई।

अब पीरजी ने अपने साथ के आदमी को भी इशारे से हटा दिया और फिर दुलारी से कहा।

पीरजी-देखो अब कोई भी यहां नहीं है, तुम्हारा जो जो मतलब हो वह बेखटके हमसे कहदो हम ज़रूर उसको पूरा करा देंगे, और तुम्हारी बात भी किसी से नहीं खुलनेदेंगे।

दुलारी-तुम्हारे जैसों से मैं कुछ भी कहिना नहीं चाहती हूं।

पीरजी-तुम जानों, बहुत पछताओगी, खैर इसही में है कि तुम हमसे खुल जाओ, नहीं तो हम तुम्हारे सब पतड़े खोल देंगे, और तुम्हारी खाल तक उड़वा देंगे।

दुलारी-झूठे मक्कारो तुम मेरे पतड़े क्या खोलोगे, मैं ही तुम लोगों के पतड़े खोलने के वास्ते दुनियां में आई हूं।

पीरजी-न मान पर तब तो मानेगी जब तत्ते तवे पर बिठाई जावेगी (एक बोतल दिखा कर जिसमें एक बहुत बड़ा बिच्छू पड़ा हुवा डंक हिला रहा था) देख ऐसे २ बिच्छुओं से कटाऊंगा और बड़े २ कानखजूरे तेरे बदन को चिमटाऊंगा, पर तू छोटी उमर की नादान लड़की है इस वास्ते तरस खाकर तेरे मन की बात पूछता हूं।

दुलारी-ओ पापी पेट के कुत्ते, तू मुझे क्यों डराता है, तेरे बताने की तो मेरे मनमें कोई बात ही नहीं है।

पीरजी-अच्छा तेरे मनमें कोई बात नहीं है तो हमारी ही बात मान, देख, जब हम मंतर पढ़कर भूत को धमकावें फूक देने का या शीशे में बन्द कर लेने का डरावा दिखावें तो तू यह कह देना कि मैं तो जाता हूं फिर कभी इस लड़की पर

नहीं आऊंगा, इतनी बात भी यह तेरी भलाई के लिये बताते हैं, नहीं तो नहीं मालूम हमको क्या क्या करना पड़े और क्या क्या दुख तुम को दिये जावें।

दुलारी-तुम अपनी सी सब कुछ करलो और जो चाहे दुख देलो पर मैं तुम्हारी बोली नहीं बोल सकती हूं।

इतने में दुलारी की मां तागा लेकर आगई।

पीरजी-बीबी-तुम्हारी बेटी को तो बहुत ज़बरदस्त भूत चिपटा है और यह मालूम हुआ है कि एक दिन भूतों का राजा अपनी सारी फ़ौज पलटन के साथ आसमान में उड़ा जारहा था, उस वक्त यह लड़की कोठे पर खड़ी थी। वह भूतों का राजा देखते ही इस पर आशिक़ हो गया और अब किसी तरह भी छोड़ना नहीं चाहता है।

मां-(पैरों में पड़कर) तुमही छुड़ाओगे मेरी बेटी को उससे।

पीरजी-चिल्ला खैंचना पड़ैगा, तब कहीं क़ाबू में आवेगा यह भूत तो।

मां-जो तुम बताओगे सोही करूंगी, पर मैं तो जानती नहीं कि चिल्ला क्या होता है ?

पीरजी-नहीं तुम को कुछ नहीं करना पड़ैगा, हमको ही चालीस रोज़ तक एक जगह बैठकर बड़ा भारी तप करना होगा।

मां-बीस दिन तो इसके ब्याह के ही रहगये हैं, अब तो जिस तरह होसके इसके ब्याह से पहले ही अच्छी करदो, मैं तुम्हारा बड़ा अहसान मानूंगी और कभी नहीं भूलूंगी।

पीरजी-अच्छा तो जल्दी तो तब आराम हो सकता है जब कुरबानी चढ़ाई जावे, पर तुम हिन्दू लोग तो नासमझ होते हो, किसी बात पर एतिक़ाद ही नहीं लाते हो।

मां-नहीं जी मेरा तो तुम्हारे ऊपर पूरा २ एतिक़ाद है, मैं तो जो तुम कहोगे सोही करूंगी।

पीरजी-अच्छा, तू तो बेचारी बहुत भली औरत मालूम होती है, जा २५) रुपये लादे। हम आप ही जीव की कुर्बानी चढा देंगे और तेरी लड़की को भली चंगी कर देंगे।

मां-अच्छा लाती हूँ, पर मेरी बेटी ब्याह से पहिले अच्छी हो जाय।

दुलारी-अम्मा होशकर, क्या कर रही है तू जो जीव हत्या कराने को तय्यार हो गई है।

मां-बेटी तेरी जान बचाने को ही यह सब कुछ करना पड़ रहा है।

दुलारी-मैं तो भली चंगी हूँ, मुझे क्या बचाना है और हत्या करने से तो किसी की भी जान नहीं बच सकती है बल्कि और ज़्यादा पाप में फंस जाती है।

पीरजी-बीबी तुम इस लडकी की मत सुनो, इसमें तो वही भूत बोल रहा है और धोका देकर टलाना चाहता है। तुम ही सोचो कि जान के बदले जान नहीं दी जावेगी तो तुम्हारी लड़की की जान कैसे बच सकेगी।

मां-नहीं जी मैं इसकी बात कब सुनती हूँ, जान के बदले जान तो देनी ही पड़ती है।

इतने में रामप्रसाद और उसका लड़का सब सामान लेकर आगये।

पीरजी--खुल गया लाला साहब सब मामला, जिन्नों का राजा आशिक होरहा है तुम्हारी लड़की पर तो।

रामप्रसाद-तो क्या करना होगा ?

दुलारी--पिताजी, अपनी बेटी के विषय में इस बुड्ढे पापी की इन निर्लज्ज बातों को सुनकर क्या आपको ग़ैरत नहीं आती है जो फिर भी उस ही से पूछते हो क्या करना होगा ?

पीरजी-देख भी ली लालाजी तुमने इस भूतों के राजा की दिलेरी!

रामप्रसाद-अच्छा तो आपने इसका उपाय क्या सोचा है ?

पीरजी-ज़रूरत तो चिल्ला खैंचने की थी, पर इसका ब्याह नज़दीक आगया है इस वास्ते अब तो हम अगली जुमेरात को बड़े पीर साहब की क़बर पर रोशनी करके उन्हीं को मनावेंगे, और उन्हीं के ज़रिये इस जिन्न को क़ाबू में लावेंगे। इसमें कुछ ज़्यादा ख़रच भी नहीं करना होगा।

रामप्रसाद-तो भी कम से कम कितना रुपया लग जायगा।

पीरजी-इस वक्त तो तुम सिर्फ़ दस रुपये दे दो ताकि इसलाम नगर से क़व्वाल बुलालें और फ़रश फ़रूश का सामान करलें, इतने तुम एक जोड़ी नक्क़ारों की तय्यार करालो।

दुलारी की मां-(अपने पति से) हाथ जोड़कर कहदो कि

नक्कारे भी वह ही तय्यार करालें, इनसे पूछकर उनके दाम भी दे दो और यह दस रुपये भी दे दो।

रामप्रसाद-मेरे पास तो इतने रुपये नहीं हैं जो दे दूं।

दुलारी की मां-नहीं होंगे, अच्छा पीरजो मैं दूंगी यह सब रुपये तुम अपना काम शुरू करो। जो सौ पचास के ख़र्चे से लड़की की जान बच जाय तो कौन बड़ी बात है, उसके व्याह के वास्ते जो यह हज़ारों का ख़र्च हो रहा है तो क्या उसकी जान बचाने को इतना भी न हो सकेगा? यह कहकर उसने बीस रुपये लाकर रामप्रसाद के हाथ पर रख दिये और कहा कि अब तो यह दे दो फिर जो कहेंगे दिये जावेंगे।

दुलारी-(मन ही मन) कहो पुरुषो तुम इन अपनी महामूर्ख स्त्रियों के ग़ुलाम हो या यह तुम्हारी ग़ुलाम हैं, और तुम्हारा सारा गृहस्थ इनकी नीचता और मूर्खता के अनुसार चलता है या तुम्हारी ऊंचता और बुद्धिमत्ता के अनुसार, भुगतो पुरुषो भुगतो, जैसा करो वैसा भुगतो। तुम तो स्त्री जाति को अपनी जूती के नीचे रखने के वास्ते कन्याओं को डला पत्थर बनाते हो और बुद्धिहीन रखना चाहते हो परन्तु फल इसका यह होता है कि तुमको स्वयम ही उनकी जूती के नीचे रहना पड़ता है और उन ही बुद्धिहीनों का नाच नाचना होता है। पर तुम तो फिर भी नहीं शर्माते हो और कन्याओं का उचित सन्मान करना नहीं चाहते हो। फिर दुलारी ने सन्मुख होकर कहा कि पिता जी मां तो नहीं समझती है पर तुम भी जान बूझकर क्यों यह रुपया बर्बाद करते हो?

रामप्रसाद-बेटी तेरी मां, मेरी कुछ नहीं चलने देती है,

इस वास्ते लाचार हूं। अपनी समझ की तो मैं कुछ भी नहीं कर सक्ता हूं।

पीरजी-अच्छा तो मैं जाता हूं।

मां-और यह जो इतनी सामग्री मंगाई है इस का क्या होगा?

पीरजी-इनसे तो मंतर पढ़ पढ़कर गंडा बनाया जायगा, जिस से तुरन्त ही संकट दूर होना शुरू हो जावेगा पर वह तो घंटों का काम है।

मां-अच्छा तो यह काम तो करते ही जाओ, मैं हाथ जोड़ूं हूं तुम्हारे आगे, अपनी बेटी समझकर करते जाओ।

पीरजी-नहीं अब हम नहीं ठहर सक्ते हैं, तुम्हारे मर्दों को एतिक़ाद नहीं है हम पर।

मां-(पैरों पड़कर) तुम इनके कहने पर मत जाओ, इनको क्या समझ इन बातों की।

पीरजी-नहीं अब हमारा ठहरना नहीं हो सक्ताहै।

मां-(अपने पति से) तुमही कहदो, यह काम तो करते ही जावें, खुशामद करके ठहरालो नहीं तो पछताओगे, और यह बीस रुपये तो देदिये होते, इन्हें हाथ में लिये क्यों खड़े हो। यह कहकर दुलारी की मां ने वह बीस रुपये अपने पति के हाथ में से झटक कर पीरजी को देदिये, और बुड़बुड़ा २ कर कहने लगी कि यह घर यूंहीं तो डूबा है, अगर यह ऐसे न होते तो हम इस हाल ही को क्यों पहुंचते। फिर हाथ जोड़कर

पीरजी से कहा कि तुमही दया करके इस डूबते बेड़े को थांभ लो और यह सब सामग्री घर लेजाकर गंडा बनादो।

पीरजी-अच्छा बीबी तू बहुत नेक औरत मालूम होती है। तेरे कहने से हम तेरा काम अपने घर पर ही करदेंगे। उठालो भाई खुदाबख़्श यह सब सामान (रामप्रसाद से) क्यों लाला साहब अगर आप कहें तो यहीं रहनेदें ?

मां-इन से क्या पूछो हो, इन्हें अक़ल होती तो यह घरही क्यों बिगड़ता।

दुलारी-पिता जी गुस्सा मत करना, जैसी उसकी बुद्धि है वैसा ही कह रही है। स्त्रियों को मूर्ख रखने में तो मूर्खता की ही बातें सुननी पड़ेंगी और घरके सब काम भी मूर्खता के ही होते रहेंगे। कांटेदार वृक्ष के लगाने से तो कांटे ही चुभेंगे, मीठे २ आम नहीं मिल सकेंगे।

इतने में पीरजी सब सामग्री लेकर चल दिया। दुलारी की मां उसके पीछे २ दरवाज़े तक गई और ख़ुशामद करने लगी कि तुम इनके कहने सुनने पर कुछ भी ख़याल मत करना, और मेरी लड़की के बचाने का पूरा पूरा उपाय करना और जितना ख़र्च चाहिये मुझ से मंगा लेना।

पीरजी-क़ुरबानी के २५) रुपये अभी तक तुमने नहीं दिये हैं, हमने तो जानबूझ कर ही तुम्हारे मर्दों के सामने नहीं मांगे हैं।

इस पर दुलारी की मां ने २५) रुपये भी लाकर उसको दे दिये।

१२—ब्याह की तय्यारियां।

पीरजी के चले जाने के बाद रामप्रसाद ने अपनी स्त्रीकोबहुत कुछ समझाया जिससे उसको भी यह ही निश्चय होने लग गया कि दुलारी को भूत प्रेत नहीं है बल्कि किसी ने बहका रक्खा है। इसही से अब वह रात दिन दुलारी को समझाती थी, रोरो प्यार जताती थी, भूखी प्यासी रहकर दिखाती थी और वार २ जाती थी, परन्तु दुलारी पर इसका कुछ भी असर नहीं होता था, वह तो कुछ भी जवाब नहीं देती थी और अपने ही ध्यान में लगी रहती थी। उसकी मां अब किसीको भी उसके पास नहीं आने देती थी, स्वयं कड़ा पहरा रखती थी। इस ही के साथ ब्याह की भी तय्यारियां होती रहती थीं, अब तो उसकी ननंद और फुफस भी आगई थीं और हर वक्त ब्याह का ही काम पसरा रहने लग गया था।

रामप्रसाद की बहन सुन्दरी की बाबत तो हम पहिले ही लिख चुके हैं कि वह बहुत बड़े अमीर घर ब्याही गई थी, पर उसकी बूवा गेंदो की ससुराल ऐसी अमीर नहीं थी और वह बेचारी तो बालपन से ही विधवा होगई थी, सन्तान भी उसके कोई नहीं थी, चार पांच हज़ार रुपये की नक़दी पल्ले जरूर थी जिसके ब्याज से ही वह अपना गुज़ारा किया करती थी, इनके आते ही दुलारी की मां ने इस अपनी बूढ़ी फूफस की खूब खुशामद करनी शुरू की। ब्याह का रत्ती २ काम सब उस ही को पूछ पूछकर करने लगी और हर वक्त यह ही कहने लगी कि अब की लाज तो बूवाजी तुम्हारे ही थामे थमेगी, नहीं तो तुम्हारे भतीजे के पास तो कुछ भी नहीं रहा है। वह तो क़ोरा

कल्लर मेंखड़ा है, गेंदो उसकी इन सब बातों को अव्वल तो चुपचाप सुनती रही, फिर आहिस्ता २ यह कहने लगी कि मेरे पास क्या है जो मैं देदूं। इस पर दुलारी की मां ने कहा नहीं बूवाजी है तो तुम्हारे पास सब कुछ, पर तुम्हें तो यह डर है कि रुपये वापिस नहीं मिलेंगे, पर बूवा जी तुम्हारा भतीजा तो ऐसा नहीं है जो तुम्हारे रुपये रख ले, सौ घर मारेगा और तुम्हारे रुपये देगा। इस प्रकार की बातें बनाकर आख़िर को उससे एक हज़ार रुपये ले ही लिये।

अब उसने सुन्दरी को भी ताने मारने शुरू करदिये कि वह तो अमीर घर जाकर और राज पाट पाकर अपने ग़रीब भाइयों को बिलकुल ही भूल गई है। दुनियां में ऐसी २ बहनें भी तो हैं जो भाइयों पर वार वार पानी पीती हैं, दुख सुख में सब तरह का सहारा लगाती हैं और यह तो लखपति करोड़ पति बहन है, ऐसी बहिन तो अगर सारा ही ब्याह अपने पाससे करदे तो क्या कुछ घाटा आता है ? भाई भतीजों की मुहब्बत हो तो सबही कुछ हो सकता है, पर आजकल कौन किसी की परवाह करता है, दुनिया सब अपने मतलब की है, कोई किसी का नहीं है, पर एक बात मैं भी कहे देती हूं, कि भाई भतीजे भी ऐसे नहीं हैं जो बहन का पैसा रखलें, तन बेचैंगे, जान बेचैंगे, और जो लेंगे वह कौड़ी २ चुकावेंगे।

सुन्दरीइन सब बातों को चुपचाप सुनती रही और कुछ भी न बोली, पर जब वह सुनते २ तंग आगई तो मौक़ा पाकर कहने लगी कि भाभी तू जो मुझे सुना सुनाकर यह बात कह रही है, तो क्या मैं अपने आपही यह सब हाल नहीं देख रही हूं, पर करूं क्या मैं तो कुछ कर ही नहीं सक्ती हूं। बेशक मेरी

सुसराल वाले लखपती भी हैं और करोड़पती भी हैं जो कहो सब ही कुछ हैं, पर वे स्त्रियों के हाथ में तो एक पैसा भी नहीं देते हैं, स्त्रियों को तो दमड़ी के साग के वास्ते भी दूकान पर ही कहला कर भेजना पड़ता है। फिर बोल मैं क्या करदूं और किस तरह अपना दिल चीरकर दिखा दूं।

दुलारी की मां-अच्छा बीबी जो तेरे पास रुपया नहीं है तो ज़ेवर तो है, ज्यादा नहीं होगा तो भी पचास हज़ार का तो होगा, जो देना हो तो उस ही में से दे दे। मैं उसे किसी के यहां रखकर रुपया ले आऊंगी, और व्याह का काम चलाऊंगी, फिर जब आठ दस दिन पीछे दुलारी अपनी सुसराल से वापस आ जायगी, और पचासों हज़ार का ज़ेवर लायगी, तब उसमें से कोई ज़ेवर रख आऊंगी और तेरा ज़ेवर ले आऊंगी। फिर गौने से पहले २ तो दुलारी का ज़ेवर भी छुड़ा ही दूंगी॥ अपनी भाभी की यह बात सुनकर सुन्दरी को कुछ जवाब न आया, इस कारण लाचार एक ज़ेवर निकाल कर देना ही पड़ा, जिसको गिरवी रखकर उसकी भाभी बारह सौ रुपये ले आई।

अब गुमानीलाल की सुनिये कि यदि रामप्रसाद ने १० मन घी कहा था तो वहां से २५ मन आगया, इसही तरह १५ बोरी खांड को लिखा था तो ३० बोरी भेजदीं। आटा अगर ५० बोरी मंगाया था तो २०० बोरी भेज दिया और लिख भेजा कि यह सब माल बहुत सस्ता मिल गया है इस वास्ते ज़्यादह भिजवा दिया है, जो बच रहैगा उसको बेच डालना। नफ़ा ही रहेगा और अगर न बेचना चाहो तो यहां भेजदेना।

सोना चांदी गोटा ठप्पा और कपड़े लत्ते की बाब्रत हम

पहिले ही लिख चुके हैं कि गुमानीलाल के मुनीव ने दिसावर से बहुत ही ज़्यादा ख़रीदवा दिया था, इस प्रकार सब ही सामान बहुत ज़्यादा होगया, अब रामप्रसाद की स्त्री की आंखें फूलीं और बोली कि लड़की के भाग से सामान तो सबकुछ होगया है और बर भी बढ़िया ही मिल गया है, तो अब ब्याह भी बढ़िया ही होना चाहिये ।

रामप्रसाद-चाहिये तो सब कुछ पर पीछे से इस सामान के दाम कहां से चुकावेंगे ।

स्त्री-तुम्हारी तो सदा यहही आदत रही है, मौक़े को तो देखा नहीं करते हो और इधर उधर की सोच करने लगजाया करते हो। भगवान पर भरोसा रक्खो, वह ही सब कारज साधने वाला है, हमारी क्या ताक़त थी जो इतना सामान इकट्ठा करलेते, यह तो उसही की कृपा हुई है, वह ही भगवान दाम भी चुकती करादेगा, वह तो ग़रीबों का प्रतिपालक दीनानाथ है ।

इस प्रकार स्त्री के आग्रह से आहिस्ता २ आंख मीचकर बहुत ही ठस्से की तय्यारियां होनी शुरू हो गयीं और उन का यह बढ़िया सामान देखकर बाज़ार से भी माल उधार मिलने लग गया और बिरादरी के लोग भी कमर बांध कर काम काज में सहायता देने को आने लगे। होते २ हलद का दिन आ गया और बिरादरी की सब स्त्रियां उनके घर आ मौजूद हुई, परन्तु जब मां ने दुलारी को हलदी चढ़ाने के वास्ते चौकी पर बिठाना चाहा तो उसने साफ़ इनकार कर दिया, और कह दिया कि मैं पहले भी कह चुकी हूं और अब भी कहती हूं कि ब्याह नहीं कराऊंगी। दुलारी की मां ने बूआ

ने दादी ने और कुटुम्ब की सब ही स्त्रियों ने उसको बहुत कुछ समझाया परन्तु वह एक न मानी। तब स्त्रियों ने उसको ज़बरदस्ती खींचकर चौकी पर बिठाना चाहा, परन्तु उस समय तो उसमें इतना बल आगया था कि वह सब ही स्त्रियों को धकेल देती थी और शेरनी की तरह गरज कर कहती थी कि तुमको शरम नहीं आती है जो स्त्री होकर भी स्त्री की सहायता नहीं करती हो, उन पर जो ज़बरदस्ती हो रही है उसको दूर हटाने की कोशिश नहीं करती हो, बल्कि उलटा आप ही ज़बरदस्ती करने को खड़ी होगई हो।

स्त्रियां–बेटी, औरत की ज़ात तो परमेश्वर ने ऐसी ही नमानी बनाई है कि कुछ बोल ही नहीं सक्ती है, सिर नीचा करके सब कुछ सहन करनी पड़ती है, इस ही में औरत की इज्ज़त है और इस ही में उसकी बड़ाई है, और अपने ब्याह सगाई के मामले में तो औरत की ज़बान ही नहीं उठ सक्ती है।

दुलारी–परमेश्वर ने तो औरत की ज़ात नमानी नहीं बनाई है परन्तु पुरुषों ने अपना ज़बरदस्ती से ही इसको नमानी बनादी है, उनके ज़ुल्मों को सहते सहते ही तुम नमानी होगई हो, मनुष्य से पशु समान बनगई हो। चुपके चुपके सहन करना और सांस तक न खींचना ही अपना धर्म समझ बैठी हो।

दुलारी की यह बातें सुनकर बिरादरी की औरतें तो अलग हट गई और आहिस्ता आहिस्ता टलकर घर चलदीं परन्तु कुटुम्ब की स्त्रियां बराबर डटी ही रहीं और पकड़कर जबर-दस्ती हल्दी लगा देने को कहने लगीं। इस पर मां और बूआ आगे बढ़ीं परन्तु दुलारी ने दूर से ही ललकारदिया कि

ख़बरदार मेरे बदन को हल्दी मत लगाना मैं हर्गिज़ ब्याह नहीं कराऊंगी। इस पर भी जब वह न मार्नी और ज़बरदस्ती हल्दी लगाने ही लगीं तो दुलारी ने अपनी सगाई का सब मामला खोलकर उनको लजाना चाहा सुन्दरी और गेंदो को सब हाल सुनाया परन्तु वह तो शरमिन्दा होने के स्थान में उल्टी क्रोधित होगई और दौड़ी २ बाहर जाकर रामप्रसाद को बुला लाई और गुस्से के साथ कहने लगीं कि दुलारी ने तो आज हमको बिरादरी की औरतों के सामने दो कौड़ी का भी नहीं रक्खा है जो मुंह आया बका है, इसको तो कुछ भी ओपरा असर नहीं है, किन्तु इसका तो हदडा ही खोया गया है। कुछ भी लाज शरम नहीं रही है (हाथ मलमल कर) हाय, हाय, भले घरों की लड़कियां क्या इस तरह बेहया बना करती हैं और अपने मां बापों को बदनाम किया करतीं हैं। कलयुग क्या आया हद ही हो गई अब तो।

रामप्रसाद-(लकड़ी दिखाकर) बोल क्या कहती थी तू, अब मेरे सामने बोल।

दुलारी-मैं कहती हूं कि स्त्री पुरुष को अधिकार है कि वह चाहे तो ब्याह कराकर गृहस्थी बनजावे और चाहे ब्रह्मचारी बनकर धर्म में लग जावे, इसही अधिकार के अनुसार मैंने भी जनम भर ब्रह्मचारिणी रहने का निश्चय कर लिया है।

रामप्रसाद-अच्छी बात है, अब बताता हूं तुझे ब्रह्मचारनी बनना, तेरी मां तो तेरे सिर से भूत उतारने का उपाय करचुकी पर अब देख मैं पल भर में ही सारा भूत उतारे देता हूं। यह कहकर उसने दुलारी को एकदम लाठियों से पीटना शुरू कर दिया और पीटता ही रहा जबतक कि दुलारी की मां और

बूआ दुलारी के ऊपर पड़कर अपने बदन पर ही वह लाठियां न खाने लगीं। इस मार से दुलारी बिल्कुल ही बेहोश होगई थी, इस कारण अब उसकी मां और बूआ ने उसके बन्दन को हल्दी लगाकर हल्दी चढ़ाने की रीति पूरी करही दी।

१३--क़लई खुलगई।

एक दो दिन के बाद उस नगर में धरमपुर से एक बरात आई जिस में गुमानीलाल का मुंह लगा नौकर बारू भी आया और रामप्रसाद की ही बैठक में ठहरा। इस बारात में जो रंडियां आई थीं उनमें चांदतारा नाम की एक वह रंडी भी थी जो बरसों गुमानीलाल के यहां रहचुकी थी, पर अब दो चार महींने से चित्त से उतर गई थी। वह बारू को राज़ी करके फिर गुमानीलाल के मन चढ़ना चाहिती थी इस वास्ते वह भी सौ बहाने बनाकर बारू ही के पास आ ठहरी। बैठक की सब बात अन्दर हवेली में सुनाई देती थीं और रात को तो साफ़ २ ही सुन पड़ती थीं, इस कारण बारू और उस वेश्या में रातको जो बातें हुईं वह रामप्रसाद और उसकी स्त्री ने सबकी सब सुनीं, जिनसे यह बात साफ़ साफ़ खुल गई कि गुमानी-लाल पहले दरजे का व्यभिचारी और दुराचारी है, जो वेश्यायें भी रखता है, शराब भी पीता है, मांस भी खाता है, कुटनियों के द्वारा घर घिरस्तनों को भी बुलाता है और अब दस हज़ार के बदले उत्तमचन्द की लड़की से भी ब्याह कराना ठहराया है।

रामप्रसाद--बहुत बड़ा धोखा हुआ हमारे साथ तो।

स्त्री-मैं तो यूं कहूं कि हे भगवान् जैसा धोखा कमला ने

हमारे साथ किया वैसा उसके आगे आवे।

रामप्रसाद-कोसने के वास्ते तो सारी उमर पड़ी है, पर अब तो यह सलाह करलो कि कोई दूसरा वर ढूंढें या क्या करें।

स्त्री-तुम्हारी तो सदा उलटी ही बातें रहीं, रीति की तो कभी एक दिन भी न कही।

रामप्रसाद-तो फिर रीति की तुमही बता दो।

स्त्री-अभी कल परसों को तो बरात आने वाली है, सामान सब तयय्यार ही हो लिया है जो बहुत करके सारा का सारा उनहीं की मारफ़त आया है, इस पर तुम कहते हो कि कोई दूसरा वर ढूंढें, दुनियां क्या कहेगी तुमको?

रामप्रसाद-दुनिया चाहे जो कहती रहे पर लड़की की तो जान बच जायगी।

स्त्री-लड़की बेचारी को कौन पूछता है, वह बेचारी तो पहलेही से चिल्ला रही है, पागल तक होगई और धूआधू मार भी खा चुकी है पर सुनता कौन है उस बेचारी की (रोकर) बेटी तेरी क़िस्मत! मेरा इसमें क्या वस।

रामप्रसाद-रोने धोने से कुछ नहीं होगा, सलाह करो अच्छी तरह होश करके।

स्त्री-लड़की को कुवे में धकेलने के सब बन्दोबस्त कर कराकर अब सलाह करने बैठे हो।

रामप्रसाद-अभी फेरे तो नहीं फिर गये हैं जिससे लाचार हो गई हो।

स्त्री-लाचारी तो नहीं है पर बदनामी कितनी होगी, और मुश्किल कितनी पड़ेगी।

रामप्रसाद-तो थोड़ी देर के वास्ते बदनामी भी उठालो और मुश्किल भी झेल लो पर लड़की को तो कूवे में ढकेलने से बचालो।

स्त्री-क़िस्मत में किसी की कोई नहीं घुस सकता है, अच्छा वर ढूढने पर भी जो कोई ब्याह पीछे दुराचारी हो जाय तो कोई क्या कर सकता है।

रामप्रसाद-तो क्या देखती आंखों भी दुराचारी को ब्याहदें।

स्त्री-मर्दों के दुराचार का तो कहीं विचार होते देखा नहीं गया है।

रामप्रसाद-अच्छा तो तुम्हारी यह सलाह है कि दुलारी को इस ही के साथ ब्याह दें।

स्त्री-मेरी क्या सलाह होती, तुम अपना ब्यौंत देख लो, और यह भी सोच लो कि दूसरा बर कोई मुट्ठी में तो रक्खा ही नहीं है, न मिला बरस दिन छेः महीने तक, तब तक यह सामान तो रक्खा ही नहीं रहैगा, दुबारा ही बनवाना पड़ेगा, पर बनवा भी लोगे दोबारा या नहीं यह सब अच्छी तरह सोच लो, अब भी भगवान ने नहीं मालूम किस तरह इकट्ठा करा दिया है, दुबारा तो क्या ही हो सक्ता है।

रामप्रसाद-तू तो दोबारा तय्यार होने को कहती है और मैं यह कहता हूं कि अगर फेरे न फिरे तो हमको तो गुमानी-लाल ही जीता न छोड़ैगा, डिगरी के फैसले को रद करके

उसमें तो सारी जायदाद और घरबार नीलाम करावेगा, और माल असबाब की नालिश करके मुझे पकड़वाकर जेलखाने भिजवावेगा ।

स्त्री-तो एक काम करो, इन अपने लड़कों को तो ज़हर देते जाओ और मेरे गले में बागली बांध जाओ मैं अपना मांगूंगी और खाऊंगी ।

रामप्रसाद-बड़े भारी जाल में फांसा है हमको तो इस गुमानीलाल ने, अब तो किसी तरह भी इस जाल में से निकास नहीं हो सकता है, (सांसभरकर) अच्छा बेटी तेरी क़िस्मत ! अब कुछ नहीं हो सका है, अब तो उसही के साथ फेरे फेरने होंगे, कौन जानता है जो तेरी क़िस्मत से उसही के आचारण ठीक होजावें, और तुझे देखकर दूसरा व्याह कराना भी बन्द करदे ।

स्त्री-ऐसी क़िस्मत कहां है हमारी लड़की की ।

रामप्रसाद-ख़ैर, अब तो परमेश्वर के भरोसे पर फेरे फेरदो ।

स्त्री-मेरा तो मन पकड़ा गया, किस तरह हां करदूं, और फिर यह लड़की भी तो अपनी जान खोदेगी, जिसका सुनसुन कर ही यह हाल हो रहा है वह जब वहां जाकर अपनी आंखों यह सब बातें देखेगी तो ज़रूर ही मर रहैगी, हर्गिज़ भी जीती न बचेगी ।

रामप्रसाद-उसकी क़िस्मत, अब हम क्या करलें इस में ।

स्त्री-क़िस्मत तो है ही, पर अच्छा न हुवा उसके वास्ते ।

रामप्रसाद्-अब कोई दूसरी सलाह हो तो वैसी कहदो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।

स्त्री-मैंने कभी दूसरी सलाह करी हो तो कहूं, मैं तो हांजी हांजी करना जानती हूं, तुम मर्द हो जो तुम्हारी सलाह में आवे करो।

रामप्रसाद्-अच्छा तो फिर हमारी सलाह तो यह ही है कि जो होगया सो होगया, अब इसमें कुछ हेर फेर करना ठीक नहीं है।

स्त्री-मैं तो कुछ भी हेर फेर करने को नहीं कहती हूं, पर क्या करूं अन्दर वाला नहीं मानता है, देखती आंखों अपनी बच्ची को कुएं में ढकेलने का साहस सा नहीं होता है।

रामप्रसाद्-कैसी चुड़ैल से पाला पड़ा है जो न इस तरह मानती है और न उस तरह।

स्त्री-मुझ पर क्यों नाहक़ गुस्सा करते हो, जो तुम्हारी मर्ज़ी में आवे सो करो, मैं नहीं बोलूंगी अब किसी भी बात में।

१४-दुलारी निकल भागी।

जिस दिन बारात आने वाली थी उससे पहिली रात को रत जगा हुवा। बिरादरी की सब ही जवान स्त्रियां आ पहुंची और नाच गाकर खूब धमा चौकड़ी मचाने लगीं। वहीं कुछ स्त्रियां अलग बैठकर इस प्रकार बात करने लगीं।

कृपादेई-देखोजी दुनियां का तमाशा, मां बाप तो धन के

लालच में अपनी बच्ची को महा कुकर्मी बुड्ढे के साथ ब्याह रहे हैं, लड़की इससे बचने के लिये सदा को कारी रहने का प्रण कर रही है और इस तरह भी न बचा जाय तो जान तक खो देने को तय्यार हो रही है, और यह बिरादरी की औरतें अपना अलग राग अलाप रही हैं। खूब आनन्द के साथ नाच गा रही हैं, बुड्ढा मरे व जवान अपने हलवे मांडे से काम, इनकी बला से चाहे कुछ होता रहे, इन्हें तो अपने नाचने कूदने से ध्यान।

गुणीकी मां-हमरा तो सच मानो आने को भी मन नहीं चाहता था, पर करें क्या बिरादरी में तो बिन आये भी नहीं सरता है, नहीं तो यह क्या कोई ब्याहों में ब्याह है जो इस तरह खुशियां मनाई जावें।

कृपादेई-हमें तो भगवान जाने रुलाई आती है उस बेचारी की दशा पर।

पारो की नानी-किसी से कहने की बात नहीं है, पर मैंने पक्के तौर पर सुना है कि वह अपनी जान खो देगी पर उसके साथ फेरे नहीं लेगी।

कृपादेई-तो क्यों जी क्या उसकी जान बचने का कोई उपाय ही नहीं हो सक्ता है?

पारो की नानी-हो क्यों नहीं सकता है, कोई हिम्मत कर के चुपके से साथ लेजाकर अपने मकान में छिपा ले, और बारात चली जाने के पीछे निकाल दे। क्यों गुणी की मां, तू लेजा इसको अपने साथ, तुम्हारा तो मकान भी ऐसा बड़ा है जिसमें दस आदमी छिप रहैं। तोभी पता न लगे,

गुणी की मां-कृपादेई तू भी जान बूझकर ऐसी बात कह दिया करती है, मेरी सास को नहीं जानती जो एक बाल भी सिर पर नहीं रहने देगी और चुटिया पकड़ कर घर से बाहर निकालेगी नहीं तो मुझे क्या इन्कार था? मैं तो दुलारी को अपने हृदय में छिपा लेता।

कृपादेई-हां, वह तो पूरी जल्लाद है, क्या जाने तू किस तरह उसके साथ निबाह करती है।

पारोकी नानी-मैं ही अपने घर रखलेती, पर मेरा घर तो ऐसे बगड़ में है, जहां पचासों आदमी रहते हैं, इस वास्ते वहां तो किसी तरह भी छिपकर नहीं रहा जासकता है, हां कृपादेई अपने घर ले जावे तो ठीक हो, इनका घर दूर भी है और अलग को भी है; वहां तो कोई कानों कान भी नहीं जानेगा, कौन आया और कौन गया।

कृपादेई-चाची तू तो नहीं जानती है पर गुणी की मां तू ही बता मेरा कुछ बस चलै है अपने घरमें। बेहया बनकर क्या जाने किसतरह दो दिन के वास्ते अपनी मांको देखने आजाती हूं, सो उसके भी चलते सांस हैं, आज मरी कल दूसरा दिन फिर कौन बुलावे और कौन आवे।

गुणी की मां-हांजी इसकी भावज तो बड़ी ही ज़हरी है, काला नाग है वह तो, हर वक्त फुंकारती ही रहती है, परमेश्वर बचावे उससे तो, अपनी सास को तो उसने सचमुच ही ठीकरे में पानी पिला रक्खा है, तब इसको तो वह क्याही समझती है।

पारो की नानी-अच्छा तो एक बात मेरी समझ में आई है जो कृपादेई भी पसन्द करले, यह जो मुन्धन रहती है तुम्हारे

पड़ौस में, ख़बर नहीं ब्राह्मणी है या बनायानी है या कायथनी है उसके यहां कोई भी नहीं आता जाता है। बेचारी इतनी बड़ी हवेली में सारा दिन अकेली हा पड़ी रहती है, उसके यहां इसको छोड़ दो, कोई स्वप्न में भी तो नहीं जानेगा कि वहां छिप रही होगी।

कृपादेई-हां, सलाह तो अच्छी बताई, वह तो निस्संदेह बहुत ही भली औरत है, दुलारी को देखते ही छाती से लगा लेगी और किसी को भी ख़बर न होने पावेगी।

इस तरह यह सलाह ठहरकर उन्होंने चुपके से दुलारी को अपने पास बुलाया और यह सब मामला सुनाया, जिस पर वह राज़ी होगई और भोर के तड़के सब स्त्रियों के जाने से पहले ही कृपादेई उसको अपने साथ लेगई, पर उस वक्त तक मुन्शन के घर का दरवाज़ा नहीं खुला था, इस कारण गली में ठहरना पड़ा और कृपादेई को बदनामी का डर मालूम होने लगा, तब दुलारी ने उसको अपने घर चली जाने के वास्ते कहा और यक़ीन दिलाया कि मैं बिल्कुल नहीं घबराऊंगी और दरवाज़ा खुलते ही मुन्शन के घर चली जाऊंगी और अपनी सब व्यथा कहकर उसको राज़ी भी करलूंगी। इसपर कृपादेई उसको उसही गली के एक टूटे से ख़ाली मकान में बिठाकर चली गई और दर्वाज़ा खुलने पर दुलारी मुन्शन के मकान में पहुंच गई, जिसको देखकर वह चकित सी होकर पूछने लगी कि तू कौन है और सुबह ही सुबह कैसे आई है।

दुलारी-मैं अत्यन्त दुखारी मुसीबत की मारी तुम्हारी शरण लेने आई हूं।

मुन्शन-अच्छा तो मैं उनके वास्ते चाय बनाकर भेज दूं तब सुनूंगी तेरी सब बात। इतने तू एक तरफ़ को होकर उस मकान में जा बैठ। फिर चाय से निबट कर दुलारी के पास आई और उसकी सब व्यथा सुननी चाही।

दुलारी-जो तुम्हें रोटी बनाने की भी जल्दी हो तो वह भी बना लो, मैं बैठी रहूंगी, मुन्शी लोगों के यहां रोटी जल्दी ही बन जाती हैं इस वास्ते कहती हूं।

इस पर मुन्शन ने रोटी बनाई, मुन्शी जी को खिलाई और जब वह कचहरी चले गये तो दुलारी के पास आई और कहने लगी कि चल पहले रोटी खाले फिर बात करना।

दुलारी-मैं नहीं जानती तुम्हारे हाथ की रोटी खा सक्ती हूं या नहीं। इस पर मुन्शन पूरियां उतार लाई, दुलारी को खिलाई फिर पीछे आप रोटी खाकर उसकी व्यथा सुनने को आई।

दुलारी-मेरे मां बाप मेरा व्याह ऐसे के साथ करना चाहते हैं जो महा दुराचारी व्यभिचारी है और उमर में भी ४० बरस से कम नहीं है। आज ही उसकी बरात आने वाली है, पर मैं हर्गिज़ भी उसके साथ व्याह नहीं कराऊंगी, जनम भर क्वारी रहकर सारी उमर स्त्री जाति के उद्धार में ही बिताऊंगी, इस ही वास्ते घर से निकल आई हूं और तुम्हारी शरण लेना चाहती हूं।

मुन्शन-(घबराकर) बड़ा ढेठ किया है तू ने तो।

दुलारी-अपने कारण मैं किसी को भी कुछ दुख देना नहीं

चाहती हूं, इस ही से हाथ जोड़कर कहती हूं कि अगर मुझे यहां ठहराने में तुमको ज़रा भी कोई खटका या घबराहट हो तो मैं तुरन्त ही यहां से चली जाऊं।

मुन्शान-नहीं अब तो मैं तुझे हर्गिज़ भी नहीं जाने दूंगी, चाहे कुछ हो जाय, मैं तो सिर्फ़ यह सोचती थी कि ऐसा न हो मुन्शीजी को ख़बर हो जाय और वह नाराज़ होने लग जांय, उनका कुछ ऐसा ही स्वभाव है।

दुलारी-हैं, हैं, तुम तो कांप रही हो, पर तुम इतना क्यों घबराती हो, मैं तो अभी चली जाती हूं। यह कह कर वह जाने लगी,।

मुन्शान-(हाथ पकड़कर), नहीं अब तो मैं नहीं जाने दूंगी अपनी जान पर खेल जाऊंगी और तुझे बचाऊंगी।

दुलारी-मेरे ठहरने से तुम पर कोई आफ़त आती ज़रूर नज़र आती है इस वास्ते मेरा ठहरना बिल्कुल भी मुनासिब नहीं है।

मुन्शान-नहीं आफ़त क्या आनी है मुझे तो वह बात बात में ही मार छेत लेते हैं, जो इस बात में भी मार लेंगे तो क्या हो जायगा, परसों दाल में नमक ज़्यादा होगया था बस इतनी ही बात पर देगची चूल्हे से उतारकर मेरे सर पर दे मारी (सिर पर से ओढना उतारकर) देखले कैसे बड़े २ फफोले पड़ रहे हैं।

दुलारी-हाय हाय, तुम्हारी तो सारी पीठ और गर्दन जली पड़ी है।

मुन्शन-मेरे साथ तो नित्य यह ही रहता है। यह इतनी बड़ी हवेली है जिसमें सारा दिन अकेली पड़ी रहती हूं, कोई पंछी भी यहां आकर नहीं फटकता है, इसमें पड़े २ जब बहुत ही जी घबराता है और क़िस्मत की मारी ऊपर चढ़कर गली मुहल्ले की तरफ़ झांक लेती हूं तो इतनी सी बात पर ही मारते मारते भुस बना देते हैं और अधमूई सी कर देते हैं।

दुलारी-दस बजे कचहरी जाते होंगे, और चार बजे आते होंगे। इस तरह तुमको तो छै घन्टे तक बिल्कुल अकेले ही रहना होता होगा।

मुन्शन-नहीं जी, छै घन्टे क्या, वह तो तड़के ही उठकर बाहर चले जाते हैं, रोटी के वक्त आते हैं और खाते ही चले जाते हैं। फिर कचहरी से तो चार बजे ही आजाते हैं पर घर तो रात को नौ दस बजे ही आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। कहां रहते हैं और क्या करते हैं, इसकी बाबत मैं अपनी ज़बान से कुछ नहीं कहना चाहती हूं।

दुलारी-हा स्त्री जाति, तेरी तो बहुत ही भारी दुर्दशा हो रही है। यह कह कर वह उठकर चलनें लगी।

मुन्शन-(हाथ पकड़ कर) मैं कह चुकी हूं, तुझे हर्गिज़ नहीं जाने दूंगी। मैं ऐसे बाप की बेटी नहीं हूं जो शरण आये को जाने दूं।

इस प्रकार बातें करते २ पांच बज गये और अचानाचक किसी काम के लिये मुन्शीजी अन्दर घर में चले आये और दुलारी को देखते ही पूछने लगे कि यह कौन है जिससे त इस तरह घुल २ कर बातें कर रही है।

मुन्शन-(घबराकर) पड़ौस की लड़की है वैसे ही चली आई है।

मुन्शी-नहीं कुछ दाल में काला ज़रूर है, साफ़ साफ़ बता नहीं तो तू मुझे जानती है।

मुन्शन-अच्छा तो चाहे मारो चाहे छोड़ो सच्ची बात तो यह है कि इस लड़की का बाप एक बुड्ढे से इसका ब्याह कर देना चाहता है, यह उससे ब्याह कराना चाहती नहीं है इस वास्ते छिपकर यहां आ बैठी है।

मुन्शी-अच्छा तो यह वह लड़की है जो बाबू गुमानीलाल से ब्याही जाने वाली है, ऐसे करोड़पति को छोड़कर और किसको पसन्द किया है इसने ? सच कहा है औरत की ज़ात बड़ी ही नीच होती है, इस वास्ते नीच ही को पसन्द करती है, फंस गई होगी कहीं किसी नीच से, तभी तो भागी २ फिर रही है, और हां इसके ऊपर तो देवी भी आया करती है, यह तो वैसे भी पूरी खिलार है। पर हरामज़ादी मैं तुझसे यह पूछता हूं कि तू ने किस तरह नाता गांठा इससे, जो सारे शहर को छोड़कर तेरे ही पास आई।

मुन्शन-मेरे साथ बेचारी का क्या नाता होता, मैं तो आज से पहले इसको जानती भी न थी, किसी ने बता दिया होगा कि यहां छिपजा, तब चली आई, आखिर कहीं तो जाती ही।

मुन्शी-सच कह गये हैं अगले लोग कि तिरिया चरित्तर को कोई भी नहीं जान सकता है, स्त्री को चाहे सात तालों के अन्दर बन्द रक्खो तो भी वह बदमाशी किये बिदून नहीं रह सकी है।

मुन्शन-ऐसा मैंने क्या क़सूर किया है जो इतना गुस्सा कर रहे हो।

मुन्शी-क़सूर नहीं किया है जो ऐसी बदचाल लड़की से याराना गांठा है और घर में छिपाया है।

मुन्शन-देखो जी तुम मुझे जो चाहे सो कहलो, मैं तुम्हारे बस में हूं, पर किसी बेगानी लड़की को कुछ कहोगे तो जान खोदूंगी, और कुछ हो अब तो मैं इसे शरण दे चुकी हूं, इस वास्ते कहीं न जाने दूंगी।

मुन्शी-और जो इसके पकड़ने को थाने की दौड़ चढ़ आई तो उनसे भी लड़ियो, बदमाश कहीं की, बड़ी निकली है शरण देनेवाली।

मुन्शन-देखो मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ूं हूं, पैरों पड़ूं हूं, जो होगया सो होगया, अब तो मैं इसको शरण दे चुकी हूं, इस वास्ते जिस तरह हो सके इसको निभाओ।

मुन्शी-(मन ही मन) माल तो बढ़िया है और आप ही आप परमेश्वर ने भेजा है, पांच चार दिन तो कहीं भागकर जा भी नहीं सक्ती है और न कुछ किसी प्रकार का शोर ही मचा सक्ती है इस वास्ते थाम ही क्यों न लूं (अपनी स्त्री से) अच्छा जो तुझे अपनी बात ही निभानी है तो इसको बाहर की कोठरी में बिठाकर बाहर का ताला बन्द कर देंगे, वहां खाना पानी दे दिया करेंगे, यहां ज़नानों में इसका रहना तो हम हर्गिज़ भी मंजूर नहीं कर सक्ते हैं, उसमें तो सौ फ़ज़ीहते हैं।

मुन्शन-(मुन्शी जीकी नीयत ख़राब देखकर) देखो, आज

तक मैंने तुम्हारा सामना नहीं किया है तुम रंडियों में जाते हो और यहां भी बुलाते हो, क़ाबू लगे तो चूहड़ी चमारी तक को भी पिलच जाते हो, मैं यह सब बातें अपनी आंखों देखती रही हूं और कभी कुछ भी नहीं बोली हूं, पर आज मुझे बोलना पड़ैगा, और बोलना क्या अगर तुमने ज़रा भी कोई बेजा बात करी तो अपनी जान पर ही खेल जाना होगा।

मुन्शी-ओ हो, औरत ज़ात होकर तुझे इतना हौसला, अब तू हमारा सामना करैगी और हमारे चाल चलन को मुंह पर लाने के जोग बनैगी, तेरी यह मजाल, यह कह कर वह उसको तड़ा तड़ जूतों से पीटने लग गया, और दुलारी मौक़ा पाकर तुरन्त ही बाहर निकल आई, और मन ही मन यह कहती चली गई कि पुरुषो तुम पर तो किसी भी प्रकार का कोई अंकुश नहीं रहा है, जिससे तुम्हारा तो बहुत ही ज़्यादा पतन होगया है, घर की स्त्री को पैर की जूती बनाकर उसको अपने आचार व्यवहार पर रोक टोक करने का अधिकार न देकर तुम तो बिल्कुल ही उद्दंड होगये हो और पशुओं से भी ज़्यादा नीचे गिर गये हो।

१५-बारात आपहुंची।

पाठक अब ज़रा रामप्रसाद के घर का भी हाल सुनिये कि तड़क में जब कंगना बांधने के वास्ते दुलारी की खोज हुई और वह न मिली तो बड़ी भारी चिन्ता हुई, कुनबे की सब ही स्त्रियों ने घर का कोना २ ढूंढ़ मारा पर वह कहीं भी न मिली, हां इतना पता ज़रूर लगा कि कृपादेई और गुणी की मां के साथ बातें कर रही थी और पारो की भाबी भी वहां बैठी थी, कई

स्त्रियां दौड़ी २ उनके यहां भी गई पर उन सब के यहां से तो यह ही जवाब मिला कि हम तो उसको वहीं बैठी छोड़ आई थीं, आख़िर जब कहीं भी पता न चला तो दुलारी की मां ने धड़ाधड़ अपनी छाती पीट ली और स्त्रियों को कोस २ कर कहने लग गई कि उत्ती रांडों ने बहका २ कर नहीं मालूम मेरी लड़की में क्या भूत भर दिया है और कहां छिपा दिया है, नहीं तो वह राम की बंदी तो एक से दो भी कहना नहीं जानती थी, जो मैं कहती सो ही मानती थी, ऐसी भोली लड़की तो किसी की हो ही लो, पर इन नाशगई खसम-पीटी रांडों का सत्यानाश जाय जिन्होंने उसे बहकाया है। हाय, मेरी तो उन्होंने सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी, अब मैं किस तरह किसी को मुंह दिखाऊंगी, मैं तो अब कूये में डूब कर ही मरूंगी, यह कहती २ वह बाहर की तरफ़ दौड़ी। स्त्रियों ने उसको बड़ी मुश्किल से पकड़ा और समझाया कि तू तो बाल बच्चों वाली है, तुझे तो ऐसी बात हर्गिज़ भी नहीं विचारनी चाहिये।

दुलारी की मां—हाय, मैंने कैसी २ कोशिश से ऐसा बढ़िया वर ढूंढा था, कैसा २ ज़र काट कर दान दहेज़ तय्यार किया था, कैसा बढ़िया पत्तल परोसा बनाया था, सब मिट्टी में मिला दिया, एक दम पानी में बहा दिया, हाय मेरी कोख से ऐसी जड़ पाड़ा लड़की पैदा हो, आग न लग जाय ऐसी कोख को। यह कह कर उसने अपना पेट ही पीट लिया।

इधर जब रामप्रसाद को यह ख़बर लगी तो वह एक दम दौड़ा हुआ अन्दर आया, पर अपनी स्त्री को रोती पीटती देखकर बाहर ही लौट गया, सिर पीटकर चारपाई पर आ पड़ा और पड़ा पड़ा इधर उधर करवटें ले ले कर यह ही

कहने लगी कि लुट गया लोगो में तो, गया में तो दोनों ही जहान से, मेरा तो धर्म ईमान भी गया और जान माल भी गया, अब तो मैं जेलखाने में ही पड़ा पड़ा सड़ूंगा और अपने स्त्री पुत्रों से घर घर भीख मंगवाऊंगा, हाय दुलारी क्या तुझे इस ही लिये पाली पोसी थी कि तू इस तरह धोखा दे जायगी, बाप की पगड़ी में ख़ाक डाल कर जायगी, हाय तू मर क्यों न गई पैदा होते ही, तुझे प्लेग क्यों न खागई, हैज़ा क्यों न होगया, मुझे यह दिन तो न देखने पड़ते, अब किस तरह किसी को मुंह दिखाऊंगा, मुझे तो कोई दो पैसे का ज़हर लादे जिसे खाकर सो रहूंगा और फिर उठने का नाम भी नहीं लूंगा। लोगों ने उसको बहुत समझाया, सैकड़ों आदमियों को दुलारी के ढूंढने के वास्ते दौड़ाया, गली २ शोर मचाया, घर घर पुछवा कर मंगाया, पर कहीं भी पता न मिलसका, इतने में बारात भी आ पहुंची, हाथी घोड़े बग्गी टमटम, रथ बहली, नालकी पालकी, आदि अनेक प्रकार की सवारियों में बैठे हुवे बाराती आन बानके साथ आ पहुंचे। सात तायफ़े रंडियों के, तीन मंडलियां नक्कालों की, दो मंडली कत्थकों की, दो नाट्य-कारों की, दो जादूगरों की, दो भानमतियों की, तीन भजन गाने वालों की, तीन अंग्रज़ी बाजे पचास पचास आदमियों के, चार बैंड बाजे, तीन रौशन चौकी, तीन जलतरंग और अन्य भी अनेक बाजे वाले गाने वाले नाचने वाले और अन्य भी अनेक प्रकार से रिझाने वाले साथ थे। बहुत ही कम करते करते तीन सौ गाड़ियों की बारात होगई थी, २१ मोटरकार, सात हाथी और ५० घोड़े इनसे अलावा थे, सब बाराती हंसते खेलते खुशी २ आरहे थे और बादलपुर की मशहूर रंडी बिजली का नाच देखने के वास्ते तड़पे जा रहे थे, जो पांच हज़ार रुपये रोज़ पर आई थी और देश भर में प्रसिद्ध हो रही थी।

बारात के पहुंचते ही शोर मच गया कि लड़की तो रात से ग़ायब है, फेरे किससे होंगे। इस ख़बर के सुनते ही सब बाराती सुन्न होगये, जितने मुह उतनी बातें होने लगीं, कोई कहता था कि लड़की बड़ी सुन्दर है, उस पर कोई जिन्न आशिक़ होगया था वह ही उड़ा लेगया है, कोई कहता था कि नहीं उसका तो किसी से लगाव था, उसही के साथ भाग गई है, किसी का कहना था कि पागलो वह तो पक्की धर्मात्मा है, इस दुराचारी से ब्याह नहीं करना चाहती थी इस ही से किसी कुवे में डूब मरी है, कोई कहता था कि नहीं तुम नहीं जानते हो वह तो सारी उमर भगवत भजन में ही बिताना चाहती है इस ही वास्ते कहीं अदृश्य होगई है, कोई कहता था कि वह तो साक्षात देवी का अवतार है, उससे कौन ब्याह करा सक्ता है, कोइ कहता कि वाह तुम क्या जानों असल बात यह है कि मोटी चिड़िया देखकर उसका बाप कुछ अधिक रुपया गुमानीलाल से झटकना चाहता है, इस ही वास्ते लड़की को अलहदा कर दिया है। इस प्रकार सब अपनी२ बाणी बोल रहे थे और खिचड़ीसी पका रहे थे।

गुमानीलाल को इस ख़बर के सुनने से बहुत ही ज़्यादा चिन्ता हुई, मुंह लगने वालों में से किसी ने तो यह सलाह बताई कि अब अगर वह लड़की मिल भी जावे तो भी न ब्याही जावे किन्तु बारात ही वापस लेजाई जावे। किसी ने कहा कि नहीं अब तो चाहे कुछ होजाय ब्याह करके डोला ले चलने में ही बात है, किसी ने कहा कि नहीं फेरे तो ज़रूर फेर लिये जायँ पर डोला यहीं छोड़ दिया जाय। इस प्रकार अनेक सलाहें होकर आख़िर यह ही बात ठहरी कि जिस तरह भी होसके लड़की को ढूंढ निकल वायी जाय और फेरे फिरवा

कर यहीं छोड़ दिया जाय। इस पर अव्वल तो गुमानीलाल के आदमी रामप्रसाद को लालच देने को आये परन्तु जब उससे बात करने से निश्चय होगया कि वह तो वास्तव में ही कहीं भाग गई है तो वे भी उसकी ढूंढ में लगे। शहर में जंगल में और आस पास के गांओं में सब ही तरफ़ आदमो दौड़ाये और बड़े २ इनाम ठहराये, सारा दिन इस ही फ़िकर में बीता, बारातियों को खाना और जानवरों को दाना घास भी रामप्रसाद के यहां से न मिला। गुमानीलाल को आप ही इसका बन्दोबस्त करना पड़ा, रामप्रसाद तो मुंह सिर लपेटे पड़ा ही रहा।

१६--ज़बरदस्ती के फेरे।

शाम को जब दुलारी मुन्शी जी के यहां से निकली तो किसी ने उसको पहचान कर पकड़ लिया और शोर मचा दिया कि दुलारी मिल गई मिल गई, तुरन्त ही शहर के हज़ारों आदमी और बराती दौड़ पड़े और हाथों हाथ उठाकर रामप्रसाद के मकान पर ले आये, जिसको देखते ही रामप्रसाद ने चिल्लाकर कहा कि दूर हटाओ इस कलंकनी को, मेरे घर पर हर्गिज़ मत लाओ, मैं तो इसका मुंह भी देखना नहीं चाहता हूँ, इस प्रकार रामप्रसाद तो पड़ा पड़ा बकता ही रहा और लोग दुलारी को अन्दर घर में ले गये, जहां दुलारी की मां ने एक दुहत्तड़ बड़े ज़ोर से उसकी कमर पर मार कर कहा कि नासड़े मरे, कुलकलंकनी, हमारी तो इज़्ज़त खोदी, बाप दादे की पगड़ी तो उतार कर मिट्टी में मिला दी अब क्यों आई, इस पर लोगों ने समझाया कि मार पीट तो पीछे करना अब तो तुम ज़रा सावधानी के साथ इसकी चौकसी रक्खो, नहीं तो

फिर भाग जायगी, इसके थोड़ी देर पीछे, रामप्रसाद भी गंडा-सा हाथ में लेकर अन्दर आया और दुलारी को ललकार कर कहा कि बोल अब क्या सलाह है, सीधी तरह व्याह कराने पर राज़ी होती है या गंडासे से अपने दो टुकड़े कराना चाहती है।

दुलारी-(हांपती हुई) नहीं मैं राज़ी नहीं हूं।

रामप्रसाद-(गुस्से में भरकर) अच्छा तो आज तेरा ख़ातमा ही करे देता हूं, मुझे फांसी तो आवेगी ही पर इस कलंक से तो छूट जाऊंगा।

दुलारी की मां-(गन्डासा उसके हाथ से छीनकर) मैं आप बहला फुसलाकर समझा लूंगी, तुम तो अब बाहर जाओ और बारात के खाने पीने का बौंत बनाओ।

होते २ फेरों का वक्त आगया परन्तु जब दुलारी को न्हिलाने के वास्ते चौकी पर बिठाना चाहा तो उसने साफ़ इन्कार कर दिया, आख़िर पुरोहित की सलाह से बिना न्हिलाये ही फेरों के कपड़े पहनाने चाहे पर उसने वह भी न पहने, इस पर रामप्रसाद ने आकर चार पांच दंडे उसको ऐसे ज़ोर से मारे कि लोगों को ख़ून का मुक़दमा होजाने का भय होगया, इस वास्ते उन्होंने दौड़कर उसको पकड़ लिया और मारने से रोक दिया, दुलारी इस मार से बेहोश होकर गिर पड़ी थी, इस कारण पुरोहित और मामा ने उसको फेरों के कपड़ों में लपेट लिया और गठरी सी उठाकर फेरों वाले पटरे पर ला पटका, इतने में उसको कुछ होश आगया और वह अपने आप को उनके हाथों से झटक कर बोली कि बिरादरी के इतने आदमियों में से क्या कोई भी ऐसा मर्द नहीं है जो अपना

कर्तव्य पालन करे और मुझे इस जुल्म से बचावे, यह बात सुनकर चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया और सब कोई एक दूसरे के मुंह की तरफ़ देखने लग गया।

आखिर दो आदमी जो दूर खड़े थे और कहीं परदेश के ही रहनेवाले मालूम होतेथे बोले कि पंचायत क्यों नहीं बोलती है और क्यों इस कन्या का न्याय नहीं करती है, इसकी बात सुनो और जो तुम्हारे परमेश्वर को भावे सो न्याय करो, इतने में गुमानीलाल उठकर चलने को तय्यार होगया और ख़ुशामदी लोग घबराकर उससे पूछने लग गये कि आप क्यों उठे।

गुमानीलाल–मैं बाज़ आया इस ब्याह से, मैं तो पहले ही बारात वापस लेजाना चाहता था, मगर तुम लोगों ने मुझे दबाया और समझाया कि इसमें दोनों ही तरफ की बिरादरी की जग हंसाई है, तब मैं तुम लोगों का कहना मानकर ज़हर की सी घूंट पीकर बैठ गया था, मगर मालूम होता है कि तुम लोग इस बहाने मेरा फ़ज़ीता ही कराना चाहते हो, इस वास्ते अब मैं नहीं ठहरना चाहता हूं और इस ब्याहसे बाज़ आता हूं।

खुशामदी–इनका आप क्यों खयाल करते हैं, यह तो कोई ग़ैर ही आदमी हैं जो बेमतलब हो बकने लग गयेहैं, (लोगोंसे) क्यों जी यह लोग अपनी बिरादरी के तो नहीं हैं।

सब लोग–न तो अपनी बिरादरी के हैं और न यहां के रहने वाले ही है, मालूम नहीं कौन हैं और कहां के हैं।

खुशामदी–तो इनको निकाल क्यों नहीं देते हो यहां से, इनका यहां क्या काम।

इस पर कई लोगों ने उनको धक्के देकर निकाल दिया, और वह सीधे थानेदार के पास पहुंचकर और सारा हाल सुनाकर बोले कि आपको तुरन्त ही वहां पहुचना चाहिये और लड़की को इस भारी जुल्म से बचाना चाहिये नहीं तो सम्भव है कि वह अपनी जान खोदे।

थानेदार-आप उस लड़की के क्या होते हैं।

दोनों आदमी-हम तो परदेशी हैं, कुछ भी सम्बन्ध नहीं है

थानेदार-तो लड़की के मां बाप के मुक़ाबिले में तो मैं कुछ भी नहीं कर सक्ता हूं, ।

एक-मगर मां बाप तो इस देश में बहुतेरे ऐसे भी हैं जो दो चार हज़ार रुपयों के बदले अपनी लड़की को साठ साठ सत्तर सत्तर बरस के बुड्ढे से ब्याह देते हैं और जल्दी ही रांड बना देते हैं।

दूसरा-अजी मैंने तो एक अमीर आदमी को यहां तक देखा है कि वह ब्याह कराता है और बरस दो बरस के बाद उस औरत को घर से निकाल देता है और फिर नई ब्याह लाता है, चार बार इसही तरह कर चुका है, तो भी लोग अपनी लड़की उससे ब्याह देने को तय्यार हैं, इसही कारण अब पांचवां ब्याह करोने वाला है।

थानेदार-मां बाप का कुछ न पूछिये बहुतसी ऊंची जातियों में तो मां बाप जन्मते ही अपनी बेटी को अपने हाथ से गला घोट कर मार डालते हैं, इसी कारण सरकार ने इस जुल्म रोकने के वास्ते एक अलग महकमा बनाया है जिसमें मैंने भी दस बरस नौकरी की है, मगर हमारा ही जी

जानता है किस तरह हम लोग लड़कियों को उनके मां बापों के हाथसे बचाते थे और किस तहर वह भी हमारी आंखों में धूल डाल कर अपनी लड़कियों को मारही डालते थे,

एक--अच्छा थानेदार साहब अगर आपको इस ब्याह में दखल देने का इख्तियार नहीं है तो लड़की की जान बचाने के तो आप ज़िम्मेदार हैं, इस कारण मौकेपर तो जरूर ही चलिये और जो मुनासिब हो करिये,

थानेदार--अगर आप लड़की के कुछभी तआल्लुक़दार होते तो मैं आपकी रपट लिख कर ज़रूर साथ होलेता मगर आपतो बिल्कुल ही ग़ैर आदमी हैं इस वास्ते आपके ब्यान पर कैसे कोई काररवाई होसक्ती है,

लाचार वह लोग नाकाम वापस चलेगये--कारण असली इसका यह था कि गुमानीलाल के आदमी पहले ही थानेदार की पूजा करगये थे, २००) नकद चढ़ागये थे, पर गुमानीलाल से ५००) बतादिये थे,

अब इधर सुनिये कि दुलारी चिल्ला २ कर कह रही थी कि मैंने तो अपना जीवन स्त्री सुद्धार के वास्ते अर्पण कर दिया है इस वास्ते मेरा ब्याह तो किसी तरह भी नहीं हो सक्ता है, ऐसा कह कह कर वह बहुत ज़ोर के साथ अपने आप को छुड़ा रही थी, अपनी जान तक लड़ा रही थी, और फेरे नहीं होने देती थी,

खुशामदी--क्या नगर भरमें कोई भी ऐसा नहीं रहा है जो खड़ा होकर इस फ़ज़ीते को बन्द करादे और फेरे फिरवादे,

इस पर रामप्रसाद ने उठ कर तीन चार दंडे दुलारी की टांग में ऐसे मारे कि वह धड़ामसे ज़मीन पर गिर पड़ी,

धरमचन्द-(बिरादरी का एक आदमी) जब यह लड़की ईश्वर भक्ती में ही अपना जीवन बिताना चाहती है और ब्याह कराने से भागती है यहांतक कि जान देने तक को तय्यार हो रही है तो ऐसी दशामें उसपर क्यों ऐसी ज़बरदस्ती की जा रही है,

इस पर बरात के दस आदमी एकदम उठकर चिल्लाने लगे और कहने लगे कि मालूम होता है रामप्रसाद से तुम्हारा कुछ बैर है, इसी वास्ते ऐसी बातें बनाते हो, नहीं तो भाईसाहब तुम भी बेटा बेटी वाले हो, घर घर यह ही मटियाले चूल्हे हैं, अगर एक भी लड़की को ऐसा हौसला दे दिया गया तो फिर देखना लड़कियां क्या क्या कर दिखाती हैं, वह तो धरम के ही बहाने ऐसी २ बातें बनावेंगी कि लोगों को इज्ज़त थामनी भारी होजायगी, आप हैं किस हवामें, और आप ज़रा यहतो सोचें कि क्या बाबू गुमानीलाल को कुछ औरतों का घाटा है, चाहें तो आजही रातकी रातमें चार व्याह करालें, पर वह तो बिरादरी के सिर मौड़ हैं सरदार हैं इस वास्ते दोनों तरफ़ की बिरादरी की इज्ज़त थामने के वास्ते ही ऐसी महाउद्धत लड़की से फेरे कराने को तैय्यार हो रहे हैं, तुमको तो भाईसहाब उनका एहसान मानना चाहिये और जिस तरह होसके इस फ़जीतें को दबाना चाहिये, इस पर रामप्रसाद की बिरादरी के सब लोग कहने लगे कि वेशक बाबू गुमानीलाल इस ही लायक़ हैं और हम सब उनके ताबेदार हैं, यह

कहकर और रामप्रसाद के पास जाकर ज़ोर से चिल्ला उठे कि उठाओजी चार आदमी इस लड़की को और फेरे फेर दो, क्यों फ़जूल बेहयाई फैला रक्खी है, यह कहकर उन्होंने दुलारी को तोड़ मरोडकर गठरीसी बनाकर उठा लिया, न तो उसके हाथ पैर ही हिलने दिये और न ज़बान ही खुलने दी और सात बार गुमानीलाल के साथ अग्नी के गिर्द घुमा दिया।

इन सात फेरों के बाद जब उन्होंने दुलारी को धरती पर रक्खा तो वह मुर्दे के समान बिल्कुल ही बेजानसी हो रही थी, तुरन्त ही पंखा हिलाया गया, गुलाब केवड़ा छिड़का गया परन्तु उसको होश नहीं आया, ऐसी हालत देखकर बिरादरी के लोग तो उठकर चल दिये, गुमानीलाल भी बहुत ही घबराया, तुरन्त ही वहां से उठआया और मोटर भेजकर होशियार डाक्टरों को बुलाया, जिनके इलाज से दस बजे दिन के दुलारी को कुछ होश आया, तब ही सब लोगों के दम में दम आया, और तब ही बरातियों ने कोशिश करके रंडियों का नाच शुरू कराया।

तीसरे दिन बारात बिदा हुई, परन्तु जब दुलारी को डोले में बिठाने लगे तो वह तड़ककर बोली कि मेरा ब्याह नहीं हुवा है, इस बास्ते मैं डोले में नहीं बैठूंगी मैं कंकर पत्थर के समान कोई निर्जीव वस्तु नहीं हूँ जिसको उठाकर मेरे मां वाप किसी को दे सक्त हों, न मैं ढोर डंगर हूं जिसका रस्सा चाहे जिसको पकड़ा सक्ते हों, मैं तो सजीव मनुष्य हूं जिसने अपना जीवन स्त्री उद्धार के वास्ते अर्पण कर रक्खा है, इस कारण मेरा ब्याह तो किसी प्रकार हो ही नहीं सक्ता है, इस शरीरको ज़बरदस्ती पकड़कर सात बार नहीं चाहे सौ बार फेरे दे दिये जावें तोभी विवाह नहीं होजाता है, मैं पहले भी बार बार कह चुकी हूं और अब

फिर ललकारकर कहती हूं कि मैं कारी हूं और उमर भर कारी ही रहूंगी, स्त्रियोंने सदा मे अपना शील बचाने के वास्ते अपनी जान देदी है पर अपने शील पर आंच नहीं आने दी है इसही प्रकार मैं भी जान देदूंगी और अपने शील को बचाऊंगी, तुम चाहे कुछ भी ज़बरदस्ती करलो पर मैं किसी की पत्नी नहीं बन पाऊंगी ।

दुलारी की यह बात सुनकर रामप्रसाद और गुमानी लाल को बड़ा भारी सोच पैदा हुआ, आखिर डाक्टरों के द्वारा उसको बेहोशी की दवा दिलाई गई जिससे मुर्दा सी होकर वह डोले में डाली गई और गुमानी लाल के घर पहुंचाई गई, और वहां फिर दवा दारू करके होश में लाई गई. होश तो उसको आगया परन्तु डाक्टरों ने यह भी बड़े ज़ोर के साथ जता दिया कि इसके दिल पर भारी सदमा पड़ा हुआ है जिस से ज़रा सी भी ठेस लगने पर, कुछ भी ज़बरदस्ती होने पर इसके प्राण ही निकल जावेंगे, इस पर वह अलहदा मकान में ठहराई गई और दो दासियां उसकी सेवा के वास्ते छोड़ी गई, जो उसको फुसलाती रहें और जिस तरह भी हो सके गुमनीलाल की स्त्री होकर रहनेके लिये रज़ामन्द करदें ।

१७--जगत चर्चा ।

दुलारी के इस ब्याह का सब हाल बहुत कुछ नमक मिरच लगाकर अनेक समाचार पत्रों में छपा, जिससे घर घर और नगर २ उसका चर्चा होने लगा, एक जगह की बात चीत हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ इस जगह भी दर्ज करते हैं जो चर्खा कातती हुई स्त्रियां तीसरे पहर आपस में कर रही थीं ।

एक-अच्छा लो हम एक नई बात सुनावें, आज वह अख़बार पढ रहे थे कि एक लड़की फेरों के समय सब के सामने खुले दहाने अपने बाप से लड़ी कि इस चालीस बरस के बुड्ढे से तो मैं हर्गिज़ भी व्याह नहीं कराऊंगी।

दूसरी-बसजी तो अब तो कलजुग के आने में कुछ भी संदेह नहीं रहा, जो लड़कियां भी अपने मां बापों के साथ इस तरह लड़ने लगीं।

तीसरी-क्योंजी ज़बान कैसे खुली होगी उस नासड़े गई की, धरती में ना गाड दी ऐसी निर्लज्ज को।

चौथी-हमतोजी अपने वक्तों की बात जानें हैं कि जब किसी लड़की के व्याह की बात चलती थी तो शरम के मारे वह लड़की उठकर कहीं दूर चली जाती थी।

पांचवी--वह ज़माने गये अब तो लड़कियां पटापट बोलती हैं और साफ़ २ कहती हैं कि इससे व्याह कराऊंगी इससे नहीं।

छटी-आज कल की कुछ न पूछो धरती आकाश एक होगया है आजकल तो, एक ब्राह्मण था हमारे गांव में सुल्लढ़ मिस्सर, बेचरा ग़रीब आदमी था, मिसरानी उसकी बड़ी लड़ाकी थी, सारा ही शहर कांपता था उससे तो, चम्पा उसकी लड़की थी, जो दिनभर शहर का चक्कर ही लगाती रहती थी, ज़ोरावर ऐसी कि दो दो तीन तीन आदमियों के सिर भिड़ाकर मार दे, ग़रीबी से लाचार होकर उसके बापने १५ सौ रुपया लेकर उसका नाता एक ६० वर्ष के बुड्ढे से कर दिया, जब चम्पा ने सुना तो पहले तो वह अपने बाप से लड़ी, वह न माना तो शहर भर में कहती फिर गई कि व्याह के वक्त एक ऐसा तमाशा

दिखाऊंगी जो आजतक कभी किसीने भी न देखा हो और न सुना हो।

बसजी जब बरात आली और फेरों के वक्त चम्पा को फेरों के वास्ते मर्दों में लाये तो उसने उस बुड्ढे बर को लातों और मुक्कों से मारना शुरू कर दिया, मारती जाती थी और कहती जाती थी कि बाबाजी पोती को ब्याहने आये हो, पहले इस ब्याह का मज़ा तो चख लो, बसजी मौड़ तो बेचारे का कहीं जापड़ा और वह धाड़ मार कर चिल्लाने लग गया कि बचाओ लोगो मुझे इस राक्षसनी से, सुल्लड़ मिस्सर चम्पा के पकड़ने को उट्ठा तो उसने उसकी छाती में ऐसी लात मारी कि वह भी लुड़कनियां खाता हुआ दूर जा पड़ा, और भी जो कोई उट्ठा उसका यहही हाल हुआ, बस फिर क्या था, हुल्लड़ मिचगया, सब लोग उठ कर भाग पड़े और बुड्ढे ने भी उसके साथ ब्याह करने से हाथ जोड़ दिये, और अपने रुपये वापस मांगे, पर सुल्लड मिस्सर ने एक पैसा भी हटा कर न दिया, आखिर बुड्ढे ने अपने रुपयों के वास्ते सर्कार में अर्ज़ी दी, पर सर्कार ने भी उसकी कुछ न सुनी, उसकी अर्ज़ी ख़ारिज ही करदी, सुना है उस के पास तो यह ही जमा पूंजी थी जो उसने घरबार बेच कर इकट्ठी की थी, इस वास्ते उसने तो इन रुपयों के मारे तडफ २ कर जान ही देदी।

दूसरी-आज कल तो सब ऐसी ही दीदा दलेर पैदा होती हैं, हमारे गांव में भी एक लड़की फेरों के वक्त कोठरी के किवाड़ बन्द कर के बैठ गई थी, मां बाप ने बहुतेरा हाथ जोड़े पैरों में सिर दिया कि बेटी हमारी

लाज रखले और किवाड़ खोल कर फेरे फिरवाले, पर उसने नाहीं किवाड़ खोल, यह ही कहती रही कि इस बुड्ढे से तो मैं हर्गिज़ भी ब्याह नहीं कराऊंगी, आख़िर जब कोठरी का दर्वाज़ा तोड़ा और उसको ज़बरदस्ती बाहर निकाली तो फेरे फिरे।

तीसरी-हमारी तरफ़ भी एक लड़की फेरों के वक्त किसी दूसरे के मकान में जा छिपी थी, ढूंढ़ते २ जब उसका पता लगा और मां बाप उसको लेने को वहां गये तो मकान वाले ने भी कह दिया कि तुम्हारी लड़की इस बुड्ढे बर से व्याह कराना नहीं चाहती है और अपनी जान बचाने के वास्ते मेरे आश्रय आगई है, इस वास्ते अब मैं उसको तुम्हारे सुपुर्द नहीं कर सकता हूं, बसजी लाचार बरात तो वापिस होगई और बाप ने अपनी लड़की के मिलने के वास्ते नालिश करदी पर वहां से भी उसको लड़की न मिली।

चौथी-तब ही तो लड़कियों का इतना हौसला बढ़ गया है, हमारे यहां तो एक लड़की ने अपने आपही सर्कार में अर्ज़ी दे दी थी कि मेरा बाप जिससे मेरा व्याह करना चाहता है वह मेरे जोग नहीं है, उसमें भी सर्कार ने लड़की की ही तरफ़दारी की थी और वह व्याह नहीं होने दिया था।

पांचवी-हौसला सा हौसला, अब तो लड़कियां ऐसा २ ढेठ करती हैं कि सुन सुन कर छाती दहलती है, एक लड़की के बाप ने तीन हज़ार रुपये लेकर उसके फेरे फेर दिये, अब उस लड़की की चतुराई देखो कि जब डोले में बैठी तो चुपचाप वह सारा रुपया अपने साथ रख लिया, पीछे मां बाप ने सारा घर ढूंढ़ मारा, पर कहीं रुपया हो तो मिले, आख़िर बाप बेचारा

दौड़ा हुवा लड़की के पास गया तो उसने साफ़ कह दिया कि हां रुपया तो सब मैं उठा लाई हूं, न लाती तो खाती क्या तेरा सिर, जमा पूंजी तो जो कुछ यहां थी सब तूने छीन ली थी, अब जब मेरा काबू लगा मैं उड़ा लाई।

छटी-कैसा जिगरा होता होगा इन लड़कियों का, जो इस तरह बाप के सामने दूबदू हों।

सातवीं-किसी का कुछ कसूर नहीं है, कलजुग ही करा रहा है यह सब कुछ।

आठवीं-तो क्यों जी तुम्हारी समझ में वह मां बाप तो कुछ भी बुरा काम नहीं करते हैं जो अपनी बेटियों को रुपये के लालच में बुड्ढों के हाथ बेच देते हैं।

सब स्त्रियां-(तनककर) क्यों वह बुरा क्यों नहीं करते हैं, वह तो चंडालों और कसाइयों से भी ज़्यादा बुरे हैं, उन वारों की तो कोई शकल भी न देखे।

आठवीं-तो जब वे कसाई मां बाप अपनी लड़कियों का गला काटने के वास्ते छुरी हाथ में उठाते हैं, उनको किसी बुड्ढे के साथ ब्याहने को तय्यार होजाते हैं, तो उनकी बेटियों को अपना गला कटवाने के वास्ते खुशी २ अपनी गर्दन आगे कर देनी चाहिये, हंसते २ उस बुड्ढे से ब्याह करा लेना चाहिये और अगले ही दिन रांड होजाने के वास्ते मां बाप का गुण गाना चाहिये, या अगर हो सके तो उन मां बापों के पंजे से अपनी जान बचा लेनी चाहिये, वह ब्याह ही नहीं होने देना चाहिये।

स्त्रियां-(धीमे स्वर से) अपनी खुशी तो कौन उमर भर की ऐसी भारी मुसीबत में पड़ना चाहता है पर करें क्या लड़कियों का तो कोई बस ही नहीं चल सक्ता है।

आठवीं-जिनका बस चला, अर्थात जिन्होंने लड़ भिड़ कर या भाग दौड़ कर अपनी जान बचाली तो क्या उनको नहीं बचानी चाहिये थी।

स्त्रियां-नहीं उन्होंने अपनी जान बचाली तो बुरा तो नहीं किया पर हमारा कहना तो यह है कि कलजुग आया तबही तो लड़कियों को इतना ढेठ हुआ, नहीं तो अपने ब्याह के मामले में तो लड़कियां आंख भी ऊपर को नहीं उठा सक्ती थीं।

आठवीं सतयुग में जब स्वयम्बर होता था, देश देशान्तर से आ आकर अनेक वर इकट्ठे होते थे, कन्या वरमाला लेकर उनके बीचमें आती थी, एक एक के सामने जाती थीं उनकी बंसावली सुनती थीं, गुणों को परखती थीं और फिर अन्त में उनमें से एक को पसन्द करके उसके गले में वरमाला डालती थीं, तब कैसे ढेठ होता था उन कन्याओं का, क्या तुम्हारी समझ में वह भी निर्लज्ज ही होती थीं जो अपने मां बापों और कुटम्बियों के सामने भरी सभा में आप ही अपना वर पसन्द करती थीं और आप ही उसके गले में वर-माला डालकर उसको अपना पति बनाती थीं, तुम चाहे ऐसी कन्याओं को बेशरम और निर्लज्ज कहो परन्तु शास्त्रों में तो उनकी बड़ी ही प्रशंसा लिखी है और सीता आदि पूज्य स्त्रियों ने इस ही प्रकार अपनी पसन्द से अपनी शादी की है, सतयुग में तो बहुत करके लड़कियां आप ही अपना वर ढूंढती थीं और इस विषय में खुलम खुल्ला अपने मां बापों से बातें करती थीं, यह

तो कलयुग में ही लड़कियों से सलाह लेना बन्द होगया है और उनका बोलना बुरा समझा जाता है।

स्त्रियां-अच्छा तो यह स्वयम्बर की रीति बुरी नहीं थी तो बन्द क्यों हो गई,।

आठवीं-रीति तो यह महा प्रशंसनीय और अति उत्तम ही थी परन्तु पशुओं की तरह पुरुषों में भी ज़बरदस्ती और छीना झपटी का भाव आने से ही यह रीति बन्द करनी पड़ी है, स्वयम्बर में जहां सैकड़ों बर इकट्ठे होते थे और सब ही उस कन्या को व्याह लेजाना चाहते थे वहां तुम जानो कन्या तो एक ही के गले में वर माला डालती थी, एक ही को अपना पति बनाती थी, तब जो बाक़ी रह जाते थे, वह बहुत पहले समय में चुपचाप वापस चले जाते थे, परन्तु फिर होते २ ऐसा होने लगा कि जो बाक़ी रह जाते थे वह ज़बरदस्ती उस लड़की को छीन कर लेजाना चाहते थे, लड़की का पिता और पति उनकी इस ज़बरदस्ती को रोकते थे तो वह अपना ज़ोर दिखाते थे और लड़ाई दंगा करने लग जाते थे, पुरुषों के इसही पशुवत व्यवहार से स्वयम्बर की यह शुभ प्रथा बन्द हुई है और इसके स्थान में महा दुखदाई छोटी उमर की शादी चल पड़ी है, और छोटी उमर में शादी होने से ही व्याह की बाबत लड़कियों की सलाह लेना और उनका बोलना बन्द होगया है और होते २ बेशर्मी और निर्लज्जताका काम समझाजाने लगाहै।

१८--दुलारी की दासियां।

अब दुलारी की व्यथा सुनिये कि अलग हवेली में ठहराकर

दो दासियां जो उसके फुसलाने को छोड़ी गई थीं वह ऐसी महा नीच प्रकृति की, ऐसे दुष्ट स्वभाव और महान पतित आत्मा की, ऐसे महा खोटे और निर्लज्ज विचारों की थीं कि दूसरे को दुखी देखकर ही उन्हें आनन्द आता था, किसी को रोना तड़पता सुनकर ही उन्हें आह्लाद होना था, और कुशील और व्यभिचार की गंदी बातों में ही उनका जी लगता था, दुलारी को उनकी यह बात कान में पड़ने से बड़ा भारी दुख होता था, तो भी वह उनसे घृणा नहीं करती थी, बल्कि उन को दुष्ट प्रकृति और गंदे स्वभाव को दूर करने का ही उपाय सोचा करती थी, प्यार मुहब्बत के साथ उनको उपदेश भी देती रहा करती थी।

होते होते यह दासियां भी उसको अपना हितू समझ कर उससे अपने दुख दर्द की बातें कहने लग गईं, तब दुलारी ने एक दिन उनकी सारी ही जीवन कथा सुननी चाही और प्रथम गौरा दासी ने इस प्रकार सुनाई कि मैं एक महाविद्वान ब्राह्मण की लड़की हूं जो धर्म कर्म में भी बहुत प्रसिद्ध थे, मैं और एक मेरा भाई दो ही हम उनकी सन्तान थे, भाई मेरा बहुत ही तरस २ कर पिता की चालीस बरस की उमर में पैदा हुवा था, पीछे मैं हुई थी, मेरे भाई को उन्होंने बहुत ही लाड़ से पाला और बहुत ही ज्यादह सिर चढ़ाया जिस से न तो वह कुछ पढ़ ही सका और न कुछ तमीज़ ही सीख सका, रही मैं सो मैं तो कोई चीज़ ही नहीं थी जिस का कुछ ख़याल किया जाता मैं तो जिस प्रकार सब लड़कियां रहती हैं बिलकुल निरादरी ही सी रहती थी और बात बिन बात आठों पहर झिड़के ही खाया करती थी, भाई मेरा जब चाहे मुझे धूधू कूटने लग जाता था और जब मैं मार खाने से रोती थी तो मेरी मां

उलटी मुझे ही धमकाने लग जाती थी कि नासड़े गई मरती नहीं गई है जो भाई के ज़रा हाथ लगाने पर ही इतनी चिल्लाने लगी है, इस प्रकार होते होते में भी ऐसी ढीट होगई थी कि मेरी मां तो मेरे ऊपर बरसते बरसते हलकान हो जाती थी और मैं अन्दर ही अन्दर हंसती रहा करती थी।

फिर जब मैं जवान हुई तो मेरे मां बापने खूब धन लगा कर धूम धाम के साथ एक ब्राह्मण के लड़के से मेरा ब्याह कर दिया जो अभी काशी से ज्योतिश पढ़कर आया था, ससुर मेरा बहुत बुड्ढा हो गया था जिससे चला फिरा भी नहीं जाता था, पर सास बिल्कुल ही जवान थी, जो मेरी असली सास के मरने पर ससुर के बुढापे में ही ब्याही गई थी, जेठ मेरा खेती करता था और देवर वैद्यक पढ़ता था, जेठ मेरा खेती से सौ सवा सौ रुपये साल कमा लेता था और पचास साठ रुपये व्रत जजमानी से आजाते थे इस ही से सारे कुटुम्ब का गुज़ारा चलता था, फिर थोड़े ही दिनों में मेरे पति की ज्योतिश चल पड़ी तो मुझे अलग होने की सूझी एक दिन भी इकट्ठा रहना भारी होगया, इस कारण तुरन्त ही झगड़ा छेड़ दिया और सास और जेठानी से खुल्लम खुल्ला ही लड़ना शुरू कर दिया, मेरे पति को मेरी यह बात ज़हर के समान लगती थी और वह शरम के मारे धरती में गढ़ा जाता था, इसही कारण मुझको धमकाता भी था और मारता भी था, पर मैं तो बचपन से ही मार खाती आरही थी इस वास्ते इन बातों को बिल्कुल भी नहीं गरदानती थी, बेहया बनकर सबही कुछ सहन कर लेती थी और अपनी धुन को नहीं छोड़ती थी।

फिर आहिस्ता २ झूठी सच्ची लगाकर और दिन रात कान भरभर कर उसको भी मैंने अपने ही ढब पर कर लिया और

सास जेठानी को कोरी २ सुनाकर अपना चूल्हा अलग धर लिया, फिर तो जेठानी ने भी शोर मिचाया कि हम ही क्यों सास ससुर का दंड भरें इस वास्ते वह भी अलग होगई, देवर वैद्यक पढने कहीं बाहर चला गया और मांग २ कर अपना पेट भरता रहा, इस प्रकार अलग होने से सबसे ज़्यादा दुख मेरे ससुर को हुवा जिसका तो गुज़ारा होना ही मुश्किल होगया था, क्योंकि व्रत जजमानी में से भी उसको तिहाई चौथाई ही मिलने लगा था, तो भी मुझे तो वह बुड्ढा ज़हर दिखाई दिया करता था जो तीन जवान बेटों के होते भी एक छोटी सी लड़की ब्याह लाया था, कभी २ चोरी छप्पे मेरा पति उनको कुछ दे भी दिया करता था, पर जब मुझे मालूम होजाता था तो मैं तो महना ही मथ डालती थी और बहुत ही भारी फ़ज़ीहता मचाती थी इस कारण होते २ मेरा पति भी मुझ से ऐसा डर गया था कि पिता के पास तक भी जाकर नहीं फटफता था, फिर कुछ दिन पीछे जब ससुर का देहान्त होगया तो सास को तो हमने व्रत में से भी एक पैसा तक देना बन्द कर दिया, अब तो वह बेचारी पीसना पीसकर ही अपना पेट भरती थी और लोगों की रोटियां पकाती फिरती थी, कुछ दिन पीछे देवर भी वैद्यक पढकर आगया और कमा कमाकर आपही अपना ब्याह कर लिया।

पर जैसी कमाई मेरे पति की हुई ऐसी किसी की भी नहीं हुई, इसही कमाई से उसने २०-२५ हज़ार रुपये लगाकर एक बड़ी भारी हवेली भी चिनवाली, एक बड़ा भारी बाग भी लगवालिया और सब ही प्रकार का ठाठ रचलिया, पर अभी यह सब काम पूरे भी नहीं होने पाये थे, कि एकदम उसको अर्द्धंग मार गई, लेने के देने पड़ गये, जो नक़दी थी वह सब उसकी बीमारी में खर्च आगयी, बल्कि मैंने तो अपना ज़ेवर

भी बेच २ कर लगा दिया पर उस को कुछ भी आराम न हुआ आख़िर बरस दिन बीमार रहकर वह तो राम को प्यारा हुआ और मुझ दुखिया को अकेला छोड़ गया।

अब जेठ की बन आई, उसने चट मुक़दमा छेड़ दिया कि हम तीनों भाई तो शामिल रहते थे इसवास्ते हवेली और बाग़ सब हमको ही मिलना चाहिये और इस औरत का तो सिरफ़ रोटी कपड़ा बंध जाना चाहिये।

लोजी, पति के मरने का ग़म तो मुझे जो था सो थाही, पर यह ग़म उससे भी बढ़िया खड़ा होगया, आख़िर मैंने भी जो कुछ मेरे पास था सब बेच वाचकर खूब कोशिश के साथ मुक़दमा लड़ाया, और अपने पति का भाइयों से अलग रहना साबित कर दिखाया, तब बड़ी मुश्किल से वह मुक़दमा ख़ारिज हुआ।

दूसरी दासी—क्यों बहन अगर यह सिद्ध न हो सक्ता कि तुम्हारा पति अलग रहता था तो क्या तुम्हारी हवेली और बाग सब तुम से छिन जाते।

गौरा, हां, हमारे वकील भी ऐसाही कहते थे।

दूसरी—तब तो यूं समझो कि सर्कार ही भाई भाई का अलग रहना सिखाती है, और वह ही स्त्रियां बुद्धिमान हैं जो लड़भिड़ कर पतिको देवर जेठों से अलग करा देती है।

दुलारी—नहीं बुद्धिमान तो नहीं हैं, क्यों कि जो स्त्रियां देवर जेठों के शामिल रहती हैं और उन को अपना समझती हैं तो फिर ऐसी मुसीबत पड़ने पर वे देवर जेठ भी उसको

अपना ही समझते हैं और सब तरह से इसकी प्रतिपाल करते रहते हैं, और जो अपनी चलती में देवर जेठों से अलग हो जाती हैं, उनको ग़ैर समझती हैं, तो वे भी उसको ग़ैरही समझने लगजाते हैं और मौका पड़ने पर बैर ही दर्साते हैं, जैसे को तैसा यह कहावत तो प्रसिद्ध ही है।

गौरा—अच्छा जी अब आगे सुनो कि बाग़ और हवेली मुझे मिलतो गये पर बाग़ तो तुम जानों अभी नया ही लगा था जिससे अभी तो कुछभी आमदनी नहीं हो सक्ती थी, बल्कि उस पर तो अभी बहुत कुछ लगाने की ही ज़रूरत थी, पर लगाऊं कहां से, मेरे पास तो कुछ भी नहीं रहा था, इस वास्ते उसका तो सूख साख कर यूंही सत्यानाश हो गया, रही हवेली सो गांव में मकान किराये पर चढ़ने का तो रिवाज ही नहीं है, इस वास्ते उस से भी एक कौड़ी की आमदनी नहीं हो सक्ती थी, लाचार बरस छै महीने तो बचा कुचा असबाब बेच कर काटे, फिर बाग़ और हवेली बेचने का इरादा किया पर कोई भी मोल लेने को खड़ा न हुआ।

हमारे गांव में पहले इसी तरह एक रांड ने आठ हज़ार में अपनी जायदाद बेची थी, उसके पति की सात पीढ़ी में भी कोई नाम लेवा और पानी देवा नहीं रहा था, पर इस जायदाद के बिकने पर कहीं से एक आदमी आ खड़ा हुआ और सर्कार में दावेदार हो गया कि मैं इस रांड के पति के कुटुम्ब में दसवीं ग्यारहवीं पीढ़ी में हूं, और रांड के मरने पर जायदाद का हक़दार हूं इस कारण रांड को कोई इख़्तियार इस जायदाद के बेचने का नहीं है, इस पर सर्कार से वह बेच रद्द होगई और मोल लेने वाले के आठ हज़ार रुपये

मारे गये, तब से हमारे गांव में रांड के पास से कोई भी जायदाद मोल नहीं लेता है।

आखिर जब मैं बिल्कुल ही भूखों मरने लगी तो अपने बाप के यहां गई, पर वहां तो मेरे से भी ज़्यादा बुरा हाल था, मां बाप तो मर ही चुके थे एक बड़ा भाई था जो लाड़प्यार के कारण बिल्कुल ही मूर्ख और उजड्ड बन गया था, यहां तक कि जजमानों के भी कुछ काम नहीं आता था, मेरी भावज ही यजमानों में जाती थी और आधा चौथाई वसूल करके लाती थी। वह भी मार छेतकर सब वह ही छीन ले जाता था और भांग तम्बाकू में उड़ाता था, ऐसी दशा में वहां मैं क्या निभ सकती थी, दो दिन ठहरकर फिर सुसराल ही जाने की सूझी और लाचार यही मन में ठानी कि अब की वार तो जिस तरह भी होगा, हाथ पैर जोड़कर जेठ देवर में ही घुसूंगी और देवरानी जेठानी की ही टहल करके अपने दिन काटूंगी, पर रास्ते में गुमानीलाल की दासी लछमना मिल गई जो बहुत २ बड़ाई गाकर और झूठ सच बताकर मुझे यहां ले आई, यहां आकर जैसी बीती वह कुछ भी कहने की बात नहीं है, किस घर की बेटी और किस घर की बहू और कैसी नीच अति नीच अवस्था में आकर पड़ी, पर पेट बुरी बला है और विधवाओं की क़िस्मत में तो धक्के ही खाते फिरना बदा है, अब जब छटे महीने सर्कार का सिपाही मकान का चौकीदारा और बाग़ का महसूल वसूल करने आता है तो फिर इन सब चीज़ों की याद आ जाती है और कलेजे में आग सी लग जाती है, पर कर क्या सकती हूं, दिल मसोसकर यह ही सोचने लग जाती हूं कि रामजी तो हमसे रूसा ही था, पर इस नाश गई सर्कार ने भी हमारे वास्ते ऐसा ही क़ानून बना दिया जिससे पति की अपने

हाथ की पैदा करी हुई जायदाद में भी रांडों को पूरा पूरा अधिकार न मिले, और वे भटकती ही फिरती रहें।

दुलारी—एक ज़माना ऐसा था जब रांडों को जीती ही आग में जला देते थे और कन्याओं को जन्मते ही गला घोटकर मार डालते थे उस समय स्त्री तो घास के तिनके के बराबर भी नहीं समझी जाती थी तब उसके वास्ते कानून में ही क्या अधिकार दिये जा सकते थे, अब सकराने रांडों का ज़िन्दा जलाना और कन्याओं का गला घोटकर मार डालना तो बन्द कर दिया है बाकी सब क़ानून ज्यों का त्यों चला आता है।

फिर दूसरी दासी गुलाबदेई ने अपनी कथा इस तरह सुनानी शुरू की कि मैं तो बनिये की बेटी हूं, बाप के घर कपड़े की दूकान होती थी, और ससुराल में लेन देन का काम था, मेरा पति अपने बाप के एक ही बेटा था और एक बेटी थी यमुना, जो मेरे ब्याह के वक्त पांच वर्ष की थी, तीन वरस पीछे मेरा गौना हुआ, गौने के दो वर्ष पीछे घर में प्लेग घुस गई, अव्वल मेरा पति मरा फिर दो दिन पीछे सास मरी फिर उसके तीन दिन पीछे ससुर मरा, अब रह गई मैं अभागन और एक वह लड़की यमुना, रो पीटकर सबर किया और लेन देन का सब काम अपने हाथ में लिया, फिर एक पढ़ा लिखा वर ढूंढ़कर यमुना का ब्याह कर दिया, पर मैं क्या जानूं थी वह ही मेरी जान का दुश्मन हो जायगा, लोजी ब्याह के होते ही यमुना के पति ने नालिश करदी कि अपने बाप के सारे माल की मालिक तो यमुना ही है, इस पर सर्कार ने भी उस ही की बात मानकर सब माल अस्बाव और घरबार तो यमुना को दिलवा दिया और मुझे एक छोटीसी कोठरी में रहने का हुकम

हो गया, पांच रुपये महीना मेरे रोटी कपड़े का यमुना के ज़िम्मे बंध गया, बसजी मैं तो धरती में गड़ गई और शरम के मारे वह गांव ही छोड़ आई।

दुलारी–ऐसी ही मैं सुनाऊं, अभी हाल की बात है कि हमारे मामा के गांव में एक ठाकुर रहते थे। भरतसिंह, नाम था अच्छे ज़मींदार थे, उनके एक बेटा था धरमसिंह उसका ब्याह करते ही ठाकुर का देहान्त हो गया, पीछे एक कन्या का जन्म देकर धरमसिंह और उसकी स्त्री भी मर गई, बेचारी छोटीसी कन्या को उसकी दादी ने आर्थात् धरमसिंह की मां ने ही पालना शुरू किया और ठाकुर की जयदाद पर अपना नाम चढ़वा लिया, पीछे एक दूर के कुटम्बी ने उस बुढ़िया से किसी बात पर नाराज़ होकर अर्ज़ी देदी कि ठाकुर की जायदाद की हक़-दार तो ठाकुर की स्त्री नहीं हो सकती उसकी मालिक तो उसकी पोती ही है, पर दादी ने उस जायदाद पर अपना ही नाम चढ़वा लिया है जिससे ज़ाहिर है कि वह पोती की जाय-दाद को आपही हड़प करना चाहती है। इस पर सर्कार से ठाकुर की सारी जायदाद और माल अस्बाब उस बुढ़िया से छिनकर उसकी मालिक वह पोती ही बनादी गई और वह पोती भी उससे छीनकर किसी दूसरे को ही पालने के वास्ते देदी गई और बुढ़िया की रोटी पोती के ज़िम्मे करदी गई, बेचारी बुढ़िया को इस बात का बहुत ही रंज हुआ और उसको भी शरम के मारे गांव ही छोड़ना पड़ा।

इससे भी ज्यादा अंधेर की बात और सुनो, हमारे ही कुटम्ब का मामला है कि पहले तो मेरा चाचा वीरभान मरा फिर उसके दो ही दिन पीछे उसका बेटा दयाराम मर गया'

जिसके ब्याह को अभी दो ही महीने हुए थे और गौना भी नहीं हो पाया था। अब आश्चर्य की बात सुनो कि दयाराम की बहू के बापने नालिश करदी कि बीरभान के माल की मालिक तो उसकी स्त्री नहीं है बल्कि उसके बेटे की ही बहू है, इस पर सर्कार से भी ऐसा ही हुक्म होगया, अर्थात् दयाराम की मां से सारा माल अस्बाब छिनकर दयाराम की बहू को मिल गया और दयाराम की मां का रोटी कपड़ा बहू के ज़िम्मे हो गया।

अब सबसे ही ज़्यादा आश्चर्य की बात सुनो कि रामलाल एक बनिया था, लेन देन किया करता था गिरधारीलाल उसका एक बेटा था जो कुछ दिन पीछे मर गया, रामलाल बेचारा जब बुड्ढा होगया तो लेन देन का सब काम गिरधारी की बहू ने सभांल लिया और सास ससुर की टहल सेवा में ही दिन बिताना शुरू कर दिया, चार पांच बरस इस ही तरह बीते फिर उसके सास ससुर भी मर गये, अब झगड़ा उठा कि इनके सब माल अस्वाब और लेन देन का मालिक कौन है।

गौरा-और मालिक कौन होता वह उनके बेटे की बहू मालिक थी कि नहीं वह तो नहीं मर गई थी।

दुलारी-नहीं वह मालिक नहीं मानी गई बल्कि यह बात निकली कि अव्वल तो बुड्ढे की लड़की अर्थात् गिरधारी की बहन मालिक हो सकती है और जो कोई लड़की न हो तो कुटम्बी मालिक हों, परन्तु न तो गिरधारी की कोई बहन थी और न कोई कुटम्बी ही था, तब गिरधारी के बाप की बहन वा उसके भी बाप की बहन आदि की तलाश हुई कि वह ही मालिक हो जावे, परन्तु वहां तो गिरधारी की बहू के सिवाय कोई भी नहीं था, तो भी गिरधारी की बहू मालिक नहीं मानी

गई, लाचार सर्कार ही मालिक हुई। उसकी तो सिर्फ़ तीन रुपये महीने की तनख़्वाह मुक़र्रर होगई।

गौरा-बसजी हद होगई तब तो इसे तो न्याय न कहो विधवाओं के वास्ते जुल्म की तलवार कहो।

दुलारी-यह सब अन्याय तब ही से चला आता है जब स्त्रियां अति ही तुच्छ मानी जाती थीं और विधवा होने पर जीती ही जला दी जाती थीं।

गौरा-हमारी समझ में तो यह आता है कि ऐसे ही ऐसे जुल्म भरे क़ानून से तंग आकर विधवाओं ने पति के साथ जल मरने की रीति निकाली होगी, जिससे एक दम ही सब झगड़ा छूट जाय और उमरभर के धक्के न खाने पड़ें।

दुलारी-ऐसा तो है ही !

गौरा-तो हमारी समझ में तो इस महा भटकावे की ज़िन्दगी से तो वह जलमरना ही अच्छा था, नहीं मालूम सर्कार ने क्यों इस रीति को बंद करके विधवाओं के त्रास को बढ़ा दिया है। एकदम जलमरने की जगह सारी उमर का जलना क्यों उनके वास्ते पसंद किया है।

दुलारी-उमरभर के त्रास भुगतने की जगह सर्कार ने तो उनके वास्ते दूसरा विवाह कर लेने का रास्ता खोल दिया है।

गौरा-तो फिर रांडों का विवाह ही क्यों नहीं हो जाता है।

दुलारी-बिरादरी के लोग अभी तक इसको अच्छा नहीं समझते हैं।

गौरा-अच्छा नहीं समझते हैं तो रंडवे होने पर अपना क्यों दूसरा ब्याह करा लेते हैं।

गुलाबो-आप तो सत्तर बरस का बुड्ढा होने पर भी, मुंह में दांत और पेट में आंत न रहने पर भी ब्याह करालेते हैं और स्त्री के तो बाल विधवा होजाने पर भी, दस बरस की ना समझ बच्ची होने पर भी उसके ब्याह की आज्ञा नहीं देते हैं। उमर भर रांड बिठाना ही पसन्द करते हैं, मैंने अपनी आंखों देखा है एक बुड्ढे की दोनों गालें तो अन्दर को घुस रहीं थीं, चहरे पर झुर्रियां पड़गई थीं, बदन की खाल लटकी पड़ रही थी, गर्दन डग डग हिल रही थी, कमर तिर्छी हो गई थी, तो भी उसको ब्याह की सूझ रही थी। हाट हवेली बेच कर पांच हज़ार देने को फिर रहा था और सात हज़ार पर बेटी ब्याह देने वाला भी मिल गया था, उसही बुड्ढे के पोते की बहू अभी बेचारी गौने भी नहीं आई थी कि रांड होगई, उसके भाई को उस पर तरस आया और उसका दो बारा ब्याह कराना चाहा तो यह ही बुड्ढा पंचायत लेकर वहां पहुंचा और बहुत ही कुछ शोर मचाया कि ऐसी अन होनी करके मेरे बुढापे में क्यों खाक डालते हो। पर उस लड़की के भाई ने उसकी एक न सुनी और बेचारी का ब्याह करही दिया, अब वह चैन से अपनी ज़िन्दगी बिता रही है, हमारी तरह भटकती नहीं फिर रही है, अपना धर्म नहीं गंवारही है।

गौरा-रांडों के ब्याह होजाने में नहीं मालूम इन बिरादरी वालों का क्या बिगड़ता है जो इतनी हाय हाय करने लग जाते हैं।

दुलारी-बिगड़ता तो कुछ नहीं है भला ही होता है, क्यों कि जिस घर एक भी रांड होती है वह उसके रोने धोने लड़ने

झगड़ने और नित्य की थूका फज़ीहती रहने से वह घर तो साक्षात ही नरक कुंड बन जाता है और उस घरके सब ही लोगों को ज़िन्दगी बितानी भारी पड़जाती है। रांड का ब्याह होजाने से तो यह सारी ही बला टलती है और उसकी भी ज़िन्दगी सुख शान्ति में गुज़र जाती है, इस कारण सब तरह से नफ़ा ही नफ़ा है, परन्तु नवीन बात होने से एक झिझक सी हो रही है जो अब आहिस्ता २ कमती होती जा रही है।

गौरा–हमारी समझ में तो रांड क्या और सुहागन क्या, कुंवारी क्या और ब्याही क्या, सबही स्त्रियां जहाज़ में बिठाकर और बीच समुद्र में लेजाकर गड़प से डबोदी जावें, चलो छुट्टी हुई, आंख फूटी पीर गई न रहैगा बांस न बजैगी बांसुरी। जब स्त्रिया ही नहीं रहैंगी तो जुल्म ही किस पर होगा, मर्दों को जो यह स्त्रियां कांटा सा खटकती हैं उनका कांटा भी निकल जायगा और स्त्री जाति भी नित्य के जुल्मों से बच जायगी।

दुलारी–क्यों हिम्मत करके मनुष्य जाति का ही ऐसा सुधार क्यों न कर लिया जावे जिससे स्त्री और पुरुष दोनों ही सुख चैन से ज़िन्दगी बिताने लगजावें और कोई भी किसी प्रकार का जुलम और ज़बरदस्ती न करने पावे।

१९–मोल की जोरू।

अब गुमानीलाल का हाल सुनिये कि इस ब्याह के पांच सात दिन पीछे ही उसने उत्तमचन्द को बुला भेजा और अलग हवेली में ठहराकर खूब ठस्से के साथ ब्याह रचा दिया। बिरादरी के लोगों को प्रसन्न करने के वास्ते जीमन ज्योनार भी

बहुत ही बढ़िया की गई और रंडियों का नाच भी बड़े ठाठ के साथ कराया गया। इस प्रकार सब ही की पूरी २ प्रसन्नता के साथ गुमानीलाल का विवाह उत्तमचन्द की अलबेली कन्या चन्द्रमुखी से होगया, और उत्तमचन्द्र भी रुपयों की भारी गठरी बांधकर अपने गांव को चल दिया।

इधर चन्द्रमुखी ने गुमानीलाल के घर आकर दो चार दिन पीछे ही पर निकालने शुरू कर दिये, झोंपड़ों की रहने वाली ने महलों में आकर रंग बदला। बड़ी भारी तंगी और कंगाली में पलने वाली को एकदम राज पटरा मिल गया तो उसकी आंखें फूल गईं, अभिमान के शिखर पर चढ़कर बिल्कुल ही आपे से बाहर होगई और सबको तुच्छ तिनके के बराबर समझने लग गई। सगे सम्बन्ध की और बिरादरी की जो औरतें इस नई बहू को देखने आतीं तो वह उनको कुछ भी आदर न देती नखरे से बात करती, उनका गहना कपड़ा देखकर नाक भौं चढ़ाती और कहती कि यह भी कुछ पहनने की चीज़ हैं। फिर अपना गहना कपड़ा दिखाती कि मुझे तो यह भी नहीं भाते हैं मैं तो इनसे भी बढ़िया २ बनवाऊंगी और तब तुमको दिखाऊंगी, इस ही प्रकार अपनी बड़ाई दिखाने के वास्ते उनके सामने अपनी दासियों पर खूब ही हकूमत जताती, बे मतलब ही उनको ताड़ने लग जाती और कहती कि मैं ऐसी दासियां नहीं रक्खा करती हूं, चुटिया पकड़कर निकाल दिया करती हूं। इस प्रकार की धमकियां दिखाती और मारने चढ़जाती, स्त्रियां उसके ओछेपन को देखकर मन ही मन हंसती चली जातीं और फिर न आतीं, होते २ भली औरतों का उसके यहां अना ही बन्द होता गया और ऐसी औरतों का आना शुरू हो गया जो झिड़के पर झिड़के खातीं थीं और फिर भी उसके मुंह

पर उसकी बड़ाई ही गाती रहा करती थीं और हां में हां मिलाती थीं।

नई हकूमत के चाव में दासियों का तो उसने दस ही दिन में नाक में दम कर दिया था, काम बिन काम आठ पहर उनको खड़ी नलियों नचाती थी और क़सूर बिन क़सूर उन पर तो हर वक्त बरसती ही रहा करती थी, गुमानीलाल से भी उनकी झूटी सच्ची चुग़ली खाती थी, उसको भी उनसे नाराज़ कराती थी, इस प्रकार वह बेचारी दासियां बहुत ही ज्यादा डर गई थीं और गुमानीलाल की कुछ परवाह न करके बहूजी की ही हां में हां मिलाने लग गई थीं। होते २ फिर उसने अपने सिर पर भूत चढ़ना शुरू कर दिया और अन्य भी निर्लज्जता के अनेक कर्तव्य दिखाकर गुमानीलाल को भी अपने क़ाबू में कर लिया।

व्याह को अभी एक महीना भी नहीं बीतने पाया था कि एक दिन उसने दूकान के गुमाश्ते को बुलाकर आज्ञा चढ़ाई कि दूकान पर कुछ भी रुपया मत रक्खा करो सब यहां मेरे पास जमा करते रहो और जो ज़रूरत पड़े तो यहीं से लेते रहो। इस पर गुमाश्ते ने डरते २ उत्तर दिया कि रुपया तो इस समय २७ हज़ार मौजूद है पर बाबूजी की अज्ञा के बिदून ऐसा नहीं हो सकता है।

चन्द्रमुखी-तू दो कौड़ी का आदमी हमारा नौकर होकर इस तरह सामना करता है, मुझको नहीं जानता है जो एक दम कान पकड़ कर निकलवा दिया करती है।

गुमाश्ता-नौकर ज़रूर हूं पर सेठानी जी ऐसी बेइज़्ज़ती तो मैंने आजतक किसी से भी नहीं कराई थी।

चन्द्रमुखी—क्या बेइज़्ज़ती लिये फिरता है, मैं जूतियों पिटवाया करती हूं तेरे जैसों को।

इतनी बात सुनकर गुमाश्ते ने कुछ भी बोलना उचित न समझा और चुपके ही वापस चला गया। शामको जब गुमानी लाल कचहरी करके घर आया तो चन्द्रमुखी ने उसके सामने रो रो कर बहुत ही बुरा हाल बनाया और कहा कि आज तुम्हारा गुमाश्ता यहां घर में घुस आया था, और मुझसे कुचेष्टा करना चाहता था, मैंने उसको तो जूतियों पिटवाकर निकलवा दिया है तो भी बड़ा भय हो रहा है कि मैं किस तरह इस घर में रह सकूंगी और किस तरह अपनी जान बचा सकूंगी, मैं तो अब हीरे की कणी चाट कर सो रहती हूं और सब झगड़ा ही खतम कर देती हूं।

इतनी बात सुनकर गुमानीलाल गुस्से में भरगया और कहने लगा कि उस हरामज़ादे को तो मैं धरती में गड़वादूंगा और यहां का ऐसा कड़ा इन्तज़ाम करदूंगा कि कोई हवेली के दर्वाज़े तक भी न फटकने पावेगा। इस पर चन्द्रमुखी ने गुमानीलाल को बहुत ही ज़्यादा फटकारा और कहा कि तुम्हारा तो सब हाल मैं रत्ती २ सुन चुकी हूं इस वास्ते तुम पर तो मैं ज़रा भी भरोसा नहीं करसक्ती हूं, जो पुरुष आप ही दुराचारी और व्यभिचारी हो वह अपनी स्त्री के शील की क्या क़दर कर सका है, जिन नौकरों और कारिंदों की मारफ़त तुम रंडियां बुलवाते हो, जिनके सामने तुम बेहया और बेशरम बनकर इन कलमूहियों से कलोल करने में नहीं लजाते हो वह कब तुमसे दब सक्ते हैं और कब अपनी बदमाशी से बाज़ आसक्ते हैं। ऐसा न होता तो मुझे यह दिन देखना ही

क्यों पड़ता, यह कहकर वह रोपड़ी और ज़हर खाकर मर रहने को ही डराने लगी।

इस प्रकार की बेहयाइयों से उसने गुमानीलाल को भी नचा दिया था और उसके सब नौकरों को भी क़ाबू में कर लिया था जो उसके नाम से ही थर थर कांपते थे, उसकी उचित अनुचित सबही तरह की आज्ञाओं को सिर धरते थे और उसकी बुरी भली सबही क्रियाओं को छिपाने लग गये थे, बल्कि उसकी ख़ातिर सब तरह का झूठ बोलने में ही; दिन को रात और रात को दिन कहने में ही अपनी जान की सलामती समझते थे।

इस प्रकार खुद मुख़्तार होकर वह बिल्कुल ही मन माना करने लगी, नगर की अनेक नीच और निर्लज्ज स्त्रियां उसके पास आने लगीं और हर हरवक्त नीचता की ही बातें रहने लगीं, इस प्रकार गुमानीलाल की सारी ही शेखी किरकिरी होगई थी और दिन रात बहूजी की उचित अनुचित आज्ञाओं का पालन करते रहने पर भी उसको चैन नहीं मिलती थी, क्योंकि वह स्त्री ज़रासी देर में कुछ से कुछ बखेड़ा खड़ा करदेती थी और अपनी निर्लज्जता के द्वारा दम की दम में जैसा चाहे स्वांग रचलेती थी, बाबूजी की सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला देती थी।

अब वह अपनी पहली स्त्री शान्तिकुमारी को याद करता था जो एक इज़्ज़तदार घराने की बेटी थी। इस ही कारण अपनी इज़्ज़त आबरू बचाने के वास्ते चुपचाप उसकी सब सख़्तियां झेलती थी और चूं तक भी नहीं करती थी। सारांश यह कि शान्तिकुमारी को तो उसने अपनी बांदी गुलाम बना

रक्खी थी और अब इस चन्द्रमुखी ने उसको ही अपना गुलाम बना लिया था, पहले वह जो चाहे करता था और शान्तिकुमारी कुछ भी नहीं बोल सक्ती थी और अब चन्द्रमुखी जो चाहे करती है और गुमानीलाल कुछ नहीं बोल सक्ता है। इस प्रकार गुमानीलाल की क़िस्मत का पासा बिल्कुल ही उलट गया है।

२०--दुलारी का छुटकारा।

दासियों की दुख भरी बातें सुनकर दुलारी उनको बहुत २ तसल्ली दिया करती थी। अपनी इस क़ैद से छूट जाने पर उनको भी इस पापमय जीवन से छुड़ाकर दिलाकर उत्तम जीवन बिताने की उम्मैद बंधाती रहती थी। इस प्रकार होते होते जब उनको दुलारी की पूरी पूरी भक्ती होगई और दुलारी को भी उन पर पूरा २ विश्वास होगया तो उसने ज़िले के हाकिम के नाम चिट्ठी लिखकर उनके द्वारा डाक में डलवादी, जिसमें लिखा था कि तीन महीने से गुमानीलाल ने मुझको अपने मकान में बन्द कर रक्खा है, आप स्वयम यहां आवें और मेरा न्याय करके मुझे छुटकारा दिलावें।

इस चिट्ठी के पहुंचने पर ज़िले का बड़ा हाकिम तुरन्त ही वहां आया, गुमानीलाल को बुलाया और चिट्ठी को दिखाया। गुमानीलाल (कांपते हुवे) हां यह तो मेरी स्त्री की चिट्ठी है जो पागल होगई है।

हाकिम-अच्छा तो हम उस पागल से ही मिलना चाहते हैं।

इस पर गुमानीलाल डरता कांपता हाकिम को दुलारी के

पास ले गया और दुलारी ने अपना सारा हाल ज्यों का त्यों सुनाया।

हाकिम-यह स्त्री पागल नहीं हो सकी है।

गुमानीलाल-हज़ूर इस देश की कोई भी लड़की अगर वह पागल न हो तो अपने ब्याह के मामले में माँ बाप के सामने इस तरह की ज़िद नहीं कर सकी है जैसी इसने की है।

हाकिम-तब तो तुमने जान बूझकर ही पागल स्त्री से ब्याह कराया।

गुमानीलाल-हजूर यह स्त्री असल में पागल नहीं है लेकिन बातें पागलों की सी करती है।

हाकिम-ख़ैर जो कुछ हो, यह बात तो दीवानी की अदालत ही तै करेगी कि इस प्रकार ज़बरदस्ती फेरे फिर जाने से असलियत में विवाह होगया है या नहीं, और यह स्त्री तुम्हारी जोरू बन गई है या नहीं, लेकिन इतना कहे बिदून नहीं रहूंगा कि तुम्हारा इसका सम्बंध अनमेल ज़रूर है, और जब यह स्त्री तुम से विवाह कराने में इतने ज़ोर के साथ इनकार करती थी तो इसके मां बाप ने इसपर ज़बरदस्ती ही नहीं की है बलिक बड़ा भारी ज़ुल्म किया है। तुम्हारे जैसे प्रतिष्ठित और नगर के आनरेरी मजिस्ट्रेट को तो हर्गिज़ भी ऐसे ज़ुल्म में शामिल नहीं होना चाहिये था। कमलावती पर दवाब डालने के वास्ते किसी बदमाश से उसके पति राधेलाल पर झूठा मुक़दमा दायर करादेने का जो इल्ज़ाम यह स्त्री तुम्हारे ऊपर लगाती है, उसके सच होने का शुबह भी इसही वजह से पक्का

होता है। इस कारण मैं ज़रूर पूरी २ खोज कराऊंगा, और अगर यह बात सच निकली तो तुम पर फ़ौजदारी का मुक़द्दमा भी ज़रूर चलाना पड़ैगा। इसही के साथ यह ज़ाहिर कर देना भी ज़रूरी समझता हूं कि अगर कोई स्त्री किसी की ब्याहता भी सिद्ध हो जावे तो अदालत ज़बरदस्ती उस स्त्री का हाथ उसके पति को नहीं पकड़ा देती है पति की ज़बरदस्ती तो उसपर कभी भी नहीं हो सकती है, इसकारण मुझे तो यह भी संदेह होता है कि स्त्री को मकान में बन्द रखने में भी तुमने अपने अधिकार से बाहर ही काम किया है जिस से बहुत सम्भव है कि तुम पर इसकी बाबत भी मुक़द्दमा चलाया जावे।

हाकिम इतनीही बात कहिने पाया था कि गुमानीलाल घबराकर बीच में ही बोल उठा कि यदि मेरे सब अपराध क्षमा करदिये जांवें तो मैं इस स्त्री के ऊपर से अपना साराही दावा उठालूं।

हाकिम–क्या तुम्हारा यह मतलब है कि जिस प्रकार यह स्त्री तुमको अपना पति नहीं मानती है इसही तरह तुम भी इसको अपनी पत्नी न समझो, मानों तुम्हारा इसका ब्याह ही नहीं हुआ है।

गुमानीलाल–जीहजूर, अगर मेरे पिछले सारे क़सूर मुआफ़ कर दिये जावें तो मैं निस्संदेह ऐसा ही करने को तय्यार हूं।

हाकिम–तुम जो मुनासिब समझो करो, हम कुछ वादा नहीं करसकते हैं, हां अपना इतना ख़याल ज़रूर ज़ाहिर करदेना चाहते हैं कि अगर तुम इसको अपनी पत्नी ही रखना

चाहोंगे तो इस बात को सिद्ध कर देने के वास्ते अव्वल तो तुमको अदालत में नालिश अवश्य करनी पड़ेगी और वहां से डिगरी पाने पर भी यह स्त्री तुम्हारी पत्नी होकर रहना मंजूर नहीं करगी और अदालत इसको ज़बरदस्ती तुमको सौंप नहीं देगी, अर्थात् डिगरी होने पर भी यह तुम को नहीं मिल सकेगी।

गुमानीलाल-हजूर तो हमारे माई बाप हैं, इसवास्ते यह सब कुछ मेरे भले के ही वास्ते समझा रहे हैं, मुझे तो यह भी पूरा पूरा भरोसा है कि हजूर मुझे सबही झगड़ों से बचालेंगे और कुछ भी आंच न आने देंगे।

हाकिम-मगर हम कुछ वादा नहीं करते हैं, हां इतना ज़रूर कहे देते हैं कि हमसे जहांतक हो सकेगा तुम को ख्वामख्वाह झगड़े में नहीं डालेंगे, तुम ऐसा ज़्यादा मत घबराओ।

गुमानीलाल-मेरे ऊपर तो सदा ही हजूर की क्षत्र छाया रही है, आपके होते मुझे क्या घबराहट हो सकती है, मैं तो अब खुशी से इस स्त्री से अपना सम्बन्ध हटाता हूं और आगे को इससे कुछ भी वास्ता नहीं रखना चाहता हूं।

हाकिम-हम तुम्हारे इस विचार की प्रशंसा करते हैं और इस स्त्री को आज़ाद करते हैं।

गुमानीलाल (हाथ जोड़कर) हजूर मेरी एक अन्तिम प्रार्थना यह भी है कि यह स्त्री कुछ दिनों तक इस ज़िले में न रहे, कहीं दूर देश में चली जावे, इसके यहां रहने से तो लोग बेमतलब भी मेरी हंसी उड़ावेंगे, इसके दूर देश जाने का सब ख़रच देने को मैं तय्यार हूं।

दुलारी–मैं नहीं चाहती कि मेरे कारण किसी की कुछ हानि हो इस वास्ते दूर देश जाना मैं मंजूर करती हूं।

इस समय दोनों दासियां दुलारी के पैरों पड़कर रो रोकर कहने लगीं कि देवी हमको भी साथ लेचल, हम भी तुम्हारी सेवा में रहकर अपना जीवन सफल करेंगी।

गुमानीलाल–अगर यह स्त्री इन दासियों को भी अपने साथ ले जाना चाहे तो इनका भी सफ़र ख़रच मैं देने को तय्यार हूं।

इस प्रकार यह तीनों ही स्त्रियां चलदीं, हाकिम स्वयम स्टेशन तक इनके साथ गया और साहसपुर का टिकट ले दिया गया।

२१–दुलारी सेविका।

साहसपुर पहुंच कर यह तीनों स्त्रियां एक धर्मशाला में जा टिकीं और उस दिन मुसाफ़िरों की सेवा करके उदर पूर्णा करली, अगले दिन नगर में घूम फिर कर दोनों दासियां तो दो जगह बच्चे खिलाने पर नौकर हो गईं और दुलारी ने एक बीमार स्त्री की सेवा करने की नौकरी करली।

इस बीमार स्त्री का नाम बसन्तीदेवी था, जिसने अभी दो महीने हुए एक पुत्र को जन्म दिया था, अपनी दोरानी जेठानी आदि किसी से भी उस स्त्री की नहीं बनती थी, सबही को ग़ैर समझती थी और अपने पति को भी यह ही शिक्षा देती रहती थी, झूठी सच्ची लगाकर उनसे उसका मन फाड़ती

रहती थी और कभी २ लड़ाई भी करा देती थी, ऐसी दशा में कौन उसके काम आसक्ता था और यदि कोई काम आना भी चाहे तो वह कैसे उनसे काम लेसक्ती थी और कैसे उनपर विश्वास कर सकती थी, इस कारण उसने तो बच्चा पैदा होने के समय दूर देश से अपनी बड़ी ननंद को ही बुलाया था, सब काम उसही से कराया था।

ननंद बेचारी बहुत डर डरकर काम करती खाने पीने के लिये जो कुछ उसकी भावज मांगती वह ही देती और हवा पानी और सर्दी गर्मी का प्रबन्ध भी जैसा वह कहती वैसाही करदेती। कुटम्ब की बड़ी बूढ़ी स्त्रियों की यह मजाल तो कहां थी कि ज़च्चा को समझावें और नुक़सान देने वाली बातों से बचावें, वह तो आगे पीछे उसकी ननंद को ही समझाती थी और ज़च्चा के सब नियम बताती थी, जिस पर वह बेचारी अपनी लाचारी जताकर यह ही कहने लग जाती थी कि दस दिन के लिये आई हूं क्यों उसे नाराज़ करूं और बुरी बनकर निकलूं, मैं तो जो वह कहती है वह ही कर देती हूं और उस ही की हां में हां मिलाती रहती हूं।

इस प्रकार ज़च्चा की उचित सेवा न होने से उसको प्रसूत की अनेक बीमारियां होगई थीं और टांगों में बाय होकर चलना फिरना भी बन्द होगया था। ननंद बेचारी दो महीना ठहरी और जितनी बन पड़ी सेवा भी करती रही परन्तु एक तो उसके साथ उसके तीन बच्चे थे जिन की देखभाल में ही उसका बहुत समय लग जाता था, इसके सिवाय उसकी भावज को उसके इस रेवड़ का पालन पोषण भी भारी हो रहा था इस वास्ते उसको तो अब यहां से जाना ही पड़ा, या यूं कहो कि भावज ने उसको निकाल ही दिया।

उसके बच्चों से तंग आकर उसने अपनी ननंद को भेज तो दिया परन्तु उसके चले जाने पर उसके नाक में दम आगया, अब बच्चा तो अपनी मां के पास पड़ा २ बिलबिलाता रहता था जो उसको न उठा सकती थी और न बिठा सकती थी, रोटी इस के पति को बनानी पड़ी जो कच्ची पक्की जैसी बन सकती बनाता वह ही आप खाता और वह ही ज़च्चा को खिलाता, जिससे ज़च्चा की बीमारी और भी ज़्यादा बढ़ गई और पति को भी कुपच की बीमारी होगई। कुटम्ब की स्त्रियां ऐसी नहीं थीं जो बिल्कुल ही आंखों पर ठीकरी रख लेतीं और चुपचाप बैठी रहतीं, वह तो बराबर आती थीं बच्चे को भी गोद में उठाना चाहती थीं और रोटी बनाने को भी तय्यार होती थीं परन्तु बसन्ती को कब उन पर विश्वास हो सकता था और साथ ही यह भी डर लगा रहता था कि वह उमरभर एहसान जतावेंगी और ताने दे दे मारेंगी, इस वास्ते वह तो सौ मुसीबत उठाती थी पर उनसे ज़रा भी काम नहीं कराती थी।

इस ज़च्चा का पति विष्णुदत्त कचहरी में ६० रुपये महीने का नौकर था, इस कारण बहन के चले जाने पर पहले तो उसने १० दिन की छुट्टी ली जिसकी तनख्वाह नहीं कटी फिर एक महीने की छुट्टी बिला तनखाह के मिली, जिससे उसको खर्च की भी मुश्किल पड़गई, और आगे को तो छुट्टी भी मिलने की उम्मेद न रही। नौकरी ही छुट जाने की फ़िकर होने लगी, अब दुलारी के रख लेने पर यद्यपि दुलारी ने सब काम अपने हाथ में ले लिया था परन्तु रोटी वह उसके हाथ की नहीं खा सकते थे इस वास्ते रोटी तो अब भी विष्णुदत्त को ही बनानी पड़ती थी।

बसन्ती के इलाज में नित्य नये से नये हकीम डाक्टर आते

थे और गंडे तावीज़ भी बनवाये जाते थे खोटे ग्रहों को हटाने के वास्ते जप भी विठा रक्खे थे तो भी उसको कुछ फ़ायदा नहीं होता था। दिन दिन रोग बढ़ता ही जाता था कारण यह कि न तो वह ठीक तरह से दवा ही खाती थी और न परहेज़ ही करती थी। दुलारी ने कई दिन तक बहुत ही कोशिश की कि वह हकीम वैद्य के बताये अनुसार पर वर्ते परन्तु वहां उसकी कौन सुनता था, वह तो कभी कुटम्बियों को दोष देकर कोसने लग जाती, कभी अपने पति का क़सूर निकाल कर बुरा भला कहती, कभी अपनी क़िस्मत को ही रोने लगजाती, यह ही उसका काम था, और यह ही उसकी बीमारी का एकमात्र इलाज था जो हो रहा था। लाचार एक दिन दुलारी ने उसके पति को कहा कि हकीम डाक्टर को बुलाने और दवा मोल लाकर डाल देने से क्या होता है जब कोई खाता ही नहीं है।

विष्णुदत्त-तो मैं क्या कर सकता हूं, स्त्रियां तो सब ही ऐसी होती हैं जो दवा नहीं खाती है और परहेज़ भी करना नहीं जानती हैं।

दुलारी-तो हकीम डाक्टर को ही क्यों बुलाकर लाते हो?

विष्णुदत्त-इनकी तो प्रकृति ही कुछ ऐसी होती है कि यूं भी चैन नहीं लेने देती हैं।

दुलारी-प्रकृति तो ऐसी नहीं है, हां पुरुषों ने अपनी ज़बर-दस्तियों से इन को ऐसी ज़रूर बनादी है।

विष्णुदत्त-नित्य के सब ही कामों में तुम्हारी आश्चर्य जनक होशियारी और बुद्धिमानी देखकर मुझे तो पहिले ही यह निश्चय होगया था कि तुम कोई साधारण स्त्री नहीं हो

और किसी दैवी कारण से ही यहां नौकरी करने आगई हो, इस वास्ते तुम्हारी बात मैं बहुत ध्यान से सुनना चाहता हूं और समझना चाहता हूं कि किस प्रकार पुरुषों की ज़बरदस्ती से स्त्रियां ऐसी होगई हैं।

दुलारी-मैं अधिक लिखी पढ़ी तो नहीं हूं, किन्तु स्त्रियों की दशा पर बहुत कुछ विचार करती रही हूं जिससे बहुत कुछ समझ गई हूं और समझती जा रही हूं। यह तो आप जानते ही हैं कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपने पैर की जूती और अत्यंत ही दीन हीन वस्तु समझ रक्खा है इस ही कारण पुत्र की उत्पत्ति पर तो खुशियां मनाते हैं और कन्या के पैदा होने पर रोने लगजाते हैं, उसको बिल्कुल ही निरादरी करके रखते हैं और ईंट पत्थर वा कूड़ा करकट के समान ही समझते हैं, फल जिसका यह होता है कि वह भी अपने को नीच अति नीच ही समझने लगजाती है और प्रकृति भी उनकी नीच ही बनजाती है, खाने पीने को भी उनको गिरा पड़ा मोटा झोटा ही मिलता है और तन्दुरुस्ती का भी उनके कुछ खयाल नहीं होता है, यह ही कारण है, कि बड़ी होकर भी वह दवा नहीं खाती हैं और परहेज़ करना भी नहीं जानती हैं।

विष्णुदत्त-परन्तु कन्याओं को तो केवल पुरुष ही घृणा की दृष्टि से नहीं देखते हैं, स्त्रियां भी तो उनको ईंट पत्थर ही समझती हैं और निरादरी ही रखती हैं।

दुलारी-जब बचपन में कन्याओं को यह निश्चय हो जाता है कि हम बिल्कुल ही नीच और निकम्मी चीज़ हैं तो बड़ा होने पर स्त्री बनकर वह भी कन्याओं को नीच ही समझने लग जाती हैं और घृणा ही करने लग जाती हैं।

विष्णुदत्त–अच्छा यह बात तो तुम्हारी शायद ठीक भी हो परन्तु स्त्रियां आपस में द्वेष क्यों रखती हैं, लड़ती क्यों रहती हैं, और राक्षसों और चांडालों की तरह बेधड़क कोसने क्यों लग जाती हैं।

दुलारी–मेरी समझ में तो इसमें भी सारा दोष मर्दों का ही है, पिछले ज़माने में पुरुष अनेक स्त्रियां ब्याह लाते थे, और भेड़ बकरी की तरह उनका रेवड़ इकठा करने में ही अपनी बड़ाई मानते थे, इस कारण सौतिया डाह की आग घर घर धधकती रहती थी, और सौतनों में आपस में खूब ही लड़ाई रहती थी। अनेक स्त्रियां ब्याहने की यह प्रथा हज़ारों बरस तक रही है जिसके कारण स्त्रियों में आपस में द्वेष रखने और कलह करती रहने की आदत ही पड गई है। रही कोसने की चाल, सो वह भी इस ही से चली है, वह ही एक पुरुष की अनेक स्त्रियां अपने पेट से पैदा हुए पुत्र का तो जीना मनाती थीं और सौत के पुत्र का मर जाना चाहती थीं, चाहती ही नहीं थीं, बल्कि ऐसे २ गुप्त उपाय भी करती थीं जिससे सौत के पुत्र मर जायं और मरे नहीं तो पति के मन से तो अवश्य ही गिर जायं, द्वेष की यह प्रचंड अग्नि उनके हृदय में हर वक्त ही जलती रहा करती थी जिससे वह हर वक्त ही मन मन में सौत के पुत्र को कोसती रहा करती थीं, इस ही से होते होते स्त्रियों में कोसने की आदत ही होगयी है और छूटने में नहीं आती है। इसही सौतिया डाह में स्त्रियां ऐसे जंतर मंतर और टोने टोटके भी कराती रहती थीं जिससे सौत के पुत्र मर कर फिर उनके उदर से पैदा हो जायं, इस ही डर से वह सौतें अपने पुत्र को सौत के पास नहीं जाने देती थीं, फिर होते होते स्त्रियों में इस डर का एक प्रकार का अभ्यास सा ही होगया

हैं, और अब अपने बच्चों को दौरानी जेठानी के पास भी नहीं जाने दिया जाता है। इस ही से प्रसूत के समय भी दौरानी जेठानी पर भरोसा नहीं किया जाता है बल्कि दूर देश से ननंद फुफस को ही बुलाया जाता है, क्योंकि उस समय में स्त्रियां अपनी सौत के बच्चा जनने के वक्त बड़ी २ दुष्टता करती थीं और उसको हानि पहुंचाने में कोई भी कसर नहीं रख छोड़ती थीं, कहानियां तो यहां तक कही जाती हैं कि जच्चा ने जो बच्चा जना है वह तो उसकी सौत ने उठा लिया है और उसकी जगह पत्थर रखकर, पत्थर जनना ही प्रसिद्ध कर दिया है।

विष्णुदत्त-तो तुम्हारे कथन के अनुसार तो स्त्रियों के सारे ही खोटे स्वभाव सौतिया डाह ही के कारण पड़े हैं, और इस सौतिया डाह के पैदा कराने के दोषी उस समय के पुरुष ही हैं जो अनेक स्त्रियां व्याह कर सौतिया डाह उत्पन्न होने के कारण जोड़ते रहा करते थे।

दुलारी-ऐसा तो है ही, अभी आप देखते हैं कि स्त्रियां बहुत ही ज़्यादा मायाचारिणी और वज्र के समान कठोर हृदया हो रही हैं. कारण इसका भी वह ही पुराना सौतिया डाह ही है। उस समय प्रत्येक सौत यह ही चाहती थी कि मैं तो पति के मन चढ़ जाऊं और अपनी सौतों को बुरी बनाऊं, इस मतलब के लिये उनको नित्य ही नया मायाचार रचना पड़ता था, अपने दोषों को छिपाने और सौतों पर झूठे दोष लगाने के वास्ते सब ही प्रकार के मकर फ़रेब बनाने होते थे, छल कपट की चाल चलनी पड़ती थी, धोका और फ़रेब की घातें खेली जाती थीं और महा निर्दयता और क्रूरता के साथ अपनी सौतों और सौतों के पुत्रों का सत्यानाश करा देने के

उपाय मिलाने होते थे, ऐसी दशा में स्त्रियों का ऐसा खोटा स्वभाव हो जाना तो प्राकृतिक ही है।

विष्णुदत्त—तब स्त्रियां कोमल हृदया क्यों प्रसिद्ध हैं ?

दुलारी—वास्तव में तो स्त्री की जाति कोमल हृदया ही है परन्तु पुरुषों ने हज़ारों बरसों तक बहुत २ स्त्रियां व्याह कर उनमें सौतिया डाह भड़काकर उनको निर्दय और वज्र हृदया बना दिया है, यहां तक कि कोसना तो उनकी एक मामूली सी बात हो गई है। जल गया, मर जाना आदि शब्द तो वह प्यार में भी कहा करती हैं और कोसना तो वह ईंट पत्थर आदि बेजान चीज़ों को भी दे देती हैं, पुरुष तो जब किसी कुत्ता बिल्ली व ईंट पत्थर पर नाराज़ होते हैं तो चटापट अश्लील गालियां देने लग जाते हैं और स्त्री नाराज़ होती हैं तो कोसने लग जाती है, जिससे साफ़ जाहिर है कि पुरुषों को तो अश्लीलता का अभ्यास हो गया है और स्त्रियों को क्रूरता का, कारण इन सब बातों का वह ही अनेक स्त्रियां व्याह लाने की पुरानी चाल ही है। जिस प्रकार स्त्री एक ही पति रख सकी है इस ही प्रकार यदि पुरुष भी एक से अधिक स्त्री न रख सक्ता तो न तो उसको ही अश्लीलता का अभ्यास होता और न स्त्रियों को ही कठोर हृदय बनना पड़ता।

विष्णुदत्त—परन्तु हम तो यह देखते हैं कि जब कोई मौत हो जाती है, तो कुटुम्बी पुरुष तो एक आध आंसू बहाकर ही चुप हो जाते हैं पर कुटुम्ब की स्त्रियां धड़ाधड़ छाती पीट डालती हैं और महीनों तक ऐसे कीरने डाल २ कर रोती हैं कि सुनने वालों की भी छाती फटने लग जाती है, तब वह कठोर हृदया कैसे कही जा सक्ती हैं।

दुलारी-यह सब स्वांग तो मायाचार के सिवाय और कुछ भी नहीं है, जिसका उनको चिरकाल से पूरा २ अभ्यास हो गया है, आपने अभी अपने ही कुटुम्ब में देखा है कि सूर्य नारायण की बीमारी में कुटुम्ब की स्त्रियां कुछ भी सहायता नहीं करती थीं, बीमार की टहल सेवा और उसकी स्त्री की सहायता करना तो दूर रहा, अगर अपने पास कोई चीज़ हो और बीमारी में दर्कार हो तो चाहे वह चीज़ पैसे दो पैसे की ही हो तो भी इन्कार कर देती थीं, और नहीं देतीं थीं। इसके अलावा अपने पुरुषों को भी बीमार की टहल सेवा के लिये जाने से रोकती थीं और सख़्ती के साथ कहती थीं कि तुम्हारे दुख सुख में भी कोई काम आया है जो तुम जाओ और मुसीबत उठाओ, बीमार पड़ी २ तुम्हारी स्त्री ने भी इसही प्रकार तुमको रोका है और बीमार के पास नहीं जाने दिया है, परन्तु उसके मरने पर वह ही सब स्त्रियां नित्य जाती हैं और धड़ाधड़ रोपीट कर आती हैं, तुम्हारी बीमार पड़ी २ स्त्री भी जाने के लिये ज़िद करती थी और डोली तक में बैठकर जाना चाहती थी, अब तुमही बताओ कि यह स्त्रियां कोमल हृदया हैं वा कठोरहृदया और मायाचारिणी।

विष्णुदत्त-अच्छा तो अब यह भी बताओ कि स्त्रियों का त्रियाचरित्र क्यों प्रसिद्ध है।

दुलारी-कारण इसका भी वह ही बहुत स्त्रियां ब्याह लाने की खोटी प्रथा ही है, पुरुष चाहे जितनी स्त्रियां ब्याह लावे नेह तो वह एक ही से लगा सकता है अन्य सबको तो निरादरी छोड़ना पड़ता है। इस कारण यदि कोई ग़ैर मर्द किसी समय उनमें से किसी स्त्री को कुशील की तरफ़ झुका ले तो

आश्चर्य ही क्या हो सकता है, परन्तु पुरुष तो सदा यह ही चाहते रहे हैं कि हमतो स्वच्छन्द होकर उचित अनुचित जो चाहें करते रहें किन्तु स्त्रियां ईंट पत्थर की तरह जड़ पदार्थ ही रहें, इस कारण जब कभी किसी स्त्री की तरफ़ से कोई अनुचित बात सुनने में आई तो पुरुषों ने दुहाई मचाई और सारी स्त्री जाति को ही बदनाम करने लग गये। नहीं तो स्त्रियां तो सदा शील को ही अपना भूषण समझती रही हैं और इसकी रक्षा के वास्ते अपनी जान तक देती रही हैं, बालविधवायें तक अपनी उमर शील संयम में बिता देतीं हैं और पुरुषों में तो सत्तर बरस के बुड्ढे को भी व्याह करने की सूझती है, फिर भी स्त्रियां ही बदनाम की जाती हैं और त्रियाचरित्र की दुहाई मचाई जाती है यह पुरुषों की ज़बरदस्ती नहीं तो और क्या है।

विष्णुदत्त-पुरुषों की ज़बरदस्ती तो तुमने सिद्ध करदी, अब तुम कृपा करके अपनी बाबत भी बतादो कि कौन हो एक रामदुलारी का नाम तो समाचार पत्रों में भी पढा है जो देवी प्रसिद्ध हो रही है और गुमानीलाल जैसे करोड़पति की स्त्री बनना नहीं चाहती है।

दुलारी-(नीची गर्दन करके) हां वह मैं ही हूं।

विष्णुदत्त-(चौंककर) तो देवी तुमने ऐसी अवस्था क्यों बनाई जो दासियों की तरह मेरे घर रहपाई।

दुलारी-मैंने अपना जीवन स्त्री सुधार के लिये अर्पण कर दिया है, परन्तु मैं अभी तुरन्त ही गुमानीलाल की कै़द से छूटकर आ रही हूं इस वास्ते कोई प्रबन्ध नहीं कर पाई हूं।

इस पर विष्णुदत्त ने उसको अपने यहां दासी के तौर पर रखने का बड़ा पश्चात्ताप किया उसको बहुत बड़ा मान सन्मान दिया और नगर के सब ही परोपकारी पुरुषों से मिलाया। नगरभर में देवी के आने की धूम होगई, दुलारी एक अलहदा बड़े मकान में ठहराई गई और उसकी दोनों दासियां उसकी सेवा के वास्ते छोड़दी गईं, स्त्री सुधार का काम शुरू होगया और इतना भारी काम होने लगा कि दुलारी को कान खुजाने की भी फुरसत न रही।

२२–सभा की स्थापना।

दुलारी अब भी विष्णुदत्त के यहां जाती थी और उसकी स्त्री को समझाती थी कि इस प्रकार तो तुम्हारे पति की नौकरी भी छूट जायगी और कच्ची पक्की रोटी खाने से तुम्हारी बीमारी भी बढ़ जायगी और बच्चे की भी जान पर आजायगी इस कारण अभिमान को छोड़कर और द्वेष को त्यागकर जिस तरह भी होसके अब तो तुम अपने कुटम्ब की स्त्रियों से ही सब प्रकार की सहायता लो और उनके पहसान को सिर धरो। वैसे न मानें तो खुशामद करो, अपना कुसूर मानकर उनसे क्षमा मांगो, और आगे के वास्ते अपनायत कायम करो और आपस में सहायता लेने देने का व्यवहार जारी करो। इस ही प्रकार वह उसके कुटम्ब की स्त्रियों को भी समझाती थी और मिलजुल कर रहने और दूसरे के काम आने के लाभ जताती थी और साथ ही इसके परोपकार भी सिखाती थी। आख़िर उन सबने उसकी बात को माना और विनाश होते घर को थामा।

अब नगर की अनेक स्त्रियां भी दुलारी के पास आती थीं और दुलारी भी स्त्रियों में फिर कर उनको अनेक प्रकार का उपदेश दे आती और बहुत कुछ अनुभव भी प्राप्त कर आती थी, परन्तु जितना २ भी वह उनका हाल मालूम करती जाती थी उतनी ही अधिक २ दुर्दशा स्त्रियों की खुलती जाती थी, उनकी मूर्खता, नीचता और दुष्टता से सब ही घर नरककुंड बन रहे थे और स्त्री और पुरुष सब ही पूरा पूरा त्रास भोग रहे थे, और त्राह त्राह कर रहे थे। दुलारी ने इन सब दुखों के कारणों को अच्छी तरह खोजकर उपकारी पुरुषों को इकट्ठा किया और शान्ति के साथ समझाया कि तुम लोग स्त्रियों को चाहे जितना निरादर की दृष्टि से देखो, उनको अपनी बांदी गुलाम और पैर की जूती समझो, मूर्ख और गुण हीन रक्खो परन्तु काम तो तुम्हारे घर का सब उनही के हाथ रहेगा, और उनही की मूर्खता और दुष्टता के अनुसार चलेगा। राज्य तो तुम्हारे घर में उनकी नीचता और निर्लज्जता का ही रहेगा घर तो तुम्हारा ही नरक स्थान बनेगा अर्थात तुमको भी नरक में ही रहना पड़ेगा, इसके अलावा तुम्हारी सन्तान भी तो उनही के उदर से पैदा होगी, उनही की गोद में पलेगी, वह ही उनका उठान करेंगी और वह ही उनको भली बुरी मति देंगी वह ही उनकी बुरी भली आदत बनावेंगी, इस कारण तुम्हारी सन्तान तो वैसी ही बांदी गुलाम और पशु समान बनेंगी जैसी वह तुम्हारी स्त्रियां हैं, यह ही तुम नित्य देख रहे हो और रो रो सब आफ़तें झेल रहे हो किंतु इनके सुधार की कुछ भी चेष्टा नहीं करते हो, इनको दूरदर्शी, बुद्धिमान, और ऊंचे और उत्तम भावों वाली नहीं बनाना चाहते हो।

पुरुष-हमतो इनको बहुतेरा ही समझाते हैं कड़ी २ गालियां

देकर धमकाते हैं और कभी २ मारने पीटने भी लग जाते हैं परन्तु इनकी तो प्रकृति ही कुछ ऐसी नीच होती है कि ज़रा भी नहीं लजाती हैं, सदा अपनी नीचता ही चलाती रहती हैं।

दुलारी-जब वह ईंट पत्थर के समान बिल्कुल ही निरादरी रक्खी जाकर बचपन में ही नीच बनादी जाती हैं, तब पराये घर जाकर गालियां सुनने और मार पीट खाने से वह क्या शरमा सकती हैं, इससे तो उनकी धृष्टता बढ़ती ही चली जाती है। इनका तो असली सुधार तबही होसकता है जब बचपन से ही उनको लड़कों के समान मान सन्मान दिया जावे, उन ही के समान इनका लालन पालन करके इनके उच्च भाव बनाये जावें और विद्या से विभूषित करके इनकी बुद्धि को चमकाया जावे।

इस प्रकार की अनेक बातें समझाकर दुलारी ने पुरुषों को उकसाया और समझाया कि स्त्रियों के नीच होने से पुरुषों का ही घर बिगड़ता है उनको ही महा दुख निकलता है, इस कारण पुरुषों को तो अपना महान कर्तव्य समझकर बहुत ही ज़ोर के साथ स्त्री सुधार का बीड़ा उठाना चाहिये, जिससे उनके घर स्वर्गधाम बनने लगजावें और वह सब स्वर्ग का सुख उठावें। होते २ स्त्री दशा सुधारनी नाम की एक महती सभा स्थापित होगई जिसके उद्देश्य प्रारम्भ में इस प्रकार ठहराये गये।

१-गृहस्थरूपी गाड़ी के स्त्री और पुरुष दो ज़रूरी पहिये हैं, जिनमें से किसी एक के भी ख़राब होजाने से गृहस्थ उत्तम रीति से नहीं चल सकता है। इस कारण स्त्री और पुरुष दोनों ही को समान समझना चाहिये दोनों को ही समान आदर

देना चाहिये और दोनों ही को उत्तम बनाने की कोशिश करनी चाहिये, ।

२-यदि कन्या न हों तो पुरुषों को स्त्रियां न मिल सकें और संसार समाप्त होजावे, इस कारण कन्याओं का पैदा होना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि लड़कों का पैदा होना, इस लिये कन्याओं के पैदा होने की भी वैसी ही खुशी मनानी चाहियै जैसी पुत्रों की ।

३-सब ही पुरुषों का यह मुख्य कर्तव्य और भारी ज़िम्मेदारी होनी चाहिये कि वह अपनी कन्याओं को पूरा पूरा सन्मान देकर उनमें लज्जा साहस और आत्मसन्मान पैदा करावें ऊंचे से ऊंचे भाव बनावें और सब गुण सिखावें ।

४-गुणवान पुरुष को उसके समान गुणवान कन्या ही व्याही जावे, और गुणवान कन्या के वास्ते उस ही समान गुणवान वर मिलाया जावे, गुणहीनों की जोड़ी गुणहीनों से ही मिलाई जावे ।

५-जो माता पिता पुत्रों के समान अपनी कन्या का सम्मान न करते हों उसको निरादरी ही रखते हों ऐसे माता पिताओं का भी सन्मान न किया जावे, उनको निरादर की ही दृष्टि से देखा जावे ।

६-विवाह में कन्या के माता पिता आदि कुछ भी न खर्चने पावें, न तो कोई दान दहेज़ ही देपावें, और न सगे सम्बंधियों वा विरादरी में ही कुछ भाजी बटवावे, और न कन्या के वास्ते ही कोई नवीन वस्त्र वा आभूषण बनवावें वह तो वरपक्ष के

आते ही कन्या का पाणिग्रहण कराकर जैसी की तैसी को बिदा करके फ़राग़त पावें।

७-विवाह से पहले अर्थात् क्वारपन में कन्या को कोई आभूषण न पहनाया जावे और वस्त्र भी उनको बिल्कुल सादा ही पहनाये जावें, ब्याह पीछे ससुराल वाले चाहे जैसा बढ़िया वस्त्राभूषण पहनावें।

८-गौना, तीसरा, चौथा आदि रीतियां बिल्कुल ही तोड़दीं जावें, स्त्री जब कभी अपने बाप के यहां जावे तो न तो कोई चीज़ रीति के तौर पर वहां लेकर जावे और न वहां से कोई चीज़ रीति के तौर पर लेकर ही आवे।

९-पुत्र का विवाह हो वा पुत्री का मामा के यहां से भात आदि रीति के तौर पर कुछ भी न आवे, इस ही प्रकार स्त्री के गर्भ रहने वा सन्तान जनने पर उसके पिता के यहां से साध-खिचड़ी छूछक आदि किसी भी रीति के तौर पर कुछ न भेजा जावे।

१०-वरपक्ष वालों को तो वैसे ही स्त्री के मां बाप का एह-सानमन्द रहना चाहिये कि उन्होंने उत्तम रीति से अपनी कन्या का लालन पालन करके और उसको गुणवान बनाकर हमारे सपुर्द करदिया।

११-कन्या पक्षवालों को भी वर पक्ष से नक़दी वा किसी प्रकार का माल असबाब आदि नहीं लेना चाहिये बल्कि एह-सानमंद होना चाहिये कि हमारे स्थान में अब वह हमारी पुत्री का लालन पालन करेंगे और सब भार उठावेंगे।

१२—कन्या का विवाह १६ वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले और पुरुष का २१ वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले न किया जावें।

१३—विवाह तब ही हो जब वर कन्या को और कन्या वर को मंजूर करलेवे।

१४—वर कन्या से १० बरस से अधिक आयु का न होने पावे।

१५—कन्या का विवाह कुंवारे से ही होपावे, ब्याहे वा रंडुवे से न होने पावे।

१६—न तो स्त्री ही एक समय में एक से अधिक पति बना-सके, और न मर्द ही एक वक्त में एक से अधिक स्त्री रख सके जिस प्रकार एक से अधिक पुरुष के साथ सम्बंध रखने वाली स्त्री व्यभिचारिणी समझी जाती है इस ही प्रकार एक से अधिक स्त्री रखनेवाला पुरुष भी अच्छा न समझा जावे।

१७—स्त्री और पुरुष दोनों ही के वास्ते सुशील रहना ज़रूरी है।

१८—यदि कोई स्त्री कुशीली होजावे तो उसके पति को चाहिये कि उसको अलग करदेवे और उसके फिर पूर्ण सुशीला होजाने पर बड़ी कड़ी शर्तों पर ही क्षमा करके उसको अपने पास रक्खे, इस ही प्रकार यदि पुरुष कुशीला होजावे तो स्त्री को अधिकार है कि उससे अलग रहने लगजावे और जब तक कि पुरुष पूर्ण शीलवान होकर उससे क्षमा न मांग लेवे उसके पास न आवे

१९—स्त्री के मरजाने पर पुरुष किसी विधवा को ब्याहले और पति के मरजाने पर स्त्री किसी रंडुवे से विवाह कराले।

२०–जिस प्रकार १६ बरस की आयु होजाने पर कन्या का विवाह करदेना अत्यंत ही ज़रूरी है इस ही प्रकार रांड और रंडुओं का व्याह होजाना भी ज़रूरी समझा जावे।

२१–परन्तु कन्या हो वा रांड, कुवारा हो वा रंडुवा, सबही को अधिकार है कि वह अपना जीवन धर्मार्थ व परोपकारर्थ अर्पण करदें और व्याह न करावें, परन्तु यह बड़ी ही कठिन तपस्या है जिसका निभाना आसान नहीं है, इस कारण बहुत ही सोच समझकर अंगीकार करना चाहिये और जब अपना मन डगमगाता नज़र आवे तब ही व्याह करा लेना चाहिये।

इन उद्देश्यों को प्रचार देने के वास्ते दुलारी ने सभा की तरफ़ से अनेक छोटी २ पुस्तकें बनवाई, अनेक लेख समाचार पत्रों में छपवाये, नगर नगर और ग्राम ग्राम उपदेशक भिजवाये और पंचायतें कराई, सभायें बनवाई और अन्य भी अनेक प्रकार की सर तोड़ कोशिशें की, जिससे जल्दी ही उसको सफलता भी प्राप्त होगई, स्त्री और पुरुषों की जो बुरी दशा हो रही थी वह बहुत कुछ सुधरने लगी।

२३–दुलारी को जेलख़ाना।

दुलारी इन उद्देश्यों के प्रचार में लग ही रही थी कि एक दिन उसने एक समाचार पत्रमें "एक अभागी कन्या का कोढ़ी से व्याह" नामका विज्ञापन पढ़ा जिसमें लिखा था कि माता पिता के मरजाने से मैं एक दूर के सम्बंधी के हाथ पड़ गई हूं जो मुझे एक बूढ़े कोढ़ी के साथ व्याह देने वाला है, जेठ बदि १३ व्याह की तिथि नियत होगई है, यदि किसी के हृदय में

दया और साहस हो तो कुठारपुर आकर मेरी जान बचावे और पुन्य कमावे। इस विज्ञापन के पढ़ते ही दुलारी एक दम कांप उठी और तुरन्त चलने को तय्यार होगई, उस वक्त रात के दस बजे थे, आध घंटे पीछे रेल जाती थी, इस वास्ते बिना कोई असबाब साथ लिये वैसे ही चलदी, यह देखकर दासियां भी वैसे ही उसके साथ होलीं।

चलते २ जब कुठारपुर १५ मील रहगया तो रेल का पय्या पटरी से उतर गया और रेल का चलना बन्द होगया। नहीं मालूम कब पय्या पटरी पर चढ़े और कब रेल चले, यह विचार कर वे रेल से उतर पड़ीं, रात का समय था कोई सवारी उस समय मिल नहीं सकी थी इस कारण पैदल ही चलदीं, परन्तु तीन चार ही मील गई थीं कि चोरों से घिर गईं, जिन्होंने दुलारी और गौरा की साड़ी उतार कर इनको बिल्कुल ही नंगी बूची करदिया। गुलाबो उस समय मल मूत्र त्यागने के वास्ते रास्ते से एक तरफ़ हो रही थी इस वास्ते वह बचरही, लाचार उसकी साड़ी के तीन टुकड़े करके तीनों ने लंगोटी सी बांधली और आगे चलदीं।

दो चार मील और आगे चलने पर सुबह होगई, मुसाफ़िर इनको ठगनियां समझकर कतराने लगे, अब यह भी इतनी थक गई थीं कि आगे क़दम नहीं रक्खा जाता था, इस वास्ते सड़क पर ही पड़गईं और कुछ देर बाद उठकर फिर चल पड़ीं और गिरती पड़ती एक घंटा रात गये कुठारपुर पहुंच ही गईं, जहां उस वक्त बारात जोम रही थी और एक बजे फेरे होने निश्चय हो चुके थे। इन्होंने अन्दर स्त्रियों में जाना चाहा तो लोगों ने नहीं जाने दिया और कुछ खाना देकर वहां से हटा दिया,

इन्होंने पास ही एक कूवेपर बैठकर खाना खाया और पानी पिया तब इनको कुछ होश आया।

वहां कुछ कंगाल स्त्रियां फेरों के समय पैसे मिलने की आशा से इकट्ठी होनी शुरू हो रही थीं, जिनसे यह बातों में लग गईं। उनमें से भग्गो नामकी एक पिसनहारी ने उस लड़की का हाल इस तरह बताया कि वह खजूरवाला गांव की रहने वाली है प्रसन्नी उसका नाम है, बाप उसका अच्छा अमीर आदमी था, जो लेन देन करता था और कुछ ज़मींदारी भी रखता था। पीछे वह प्लेग में मरगया, प्रसन्नी का एक छोटा भाई रामदयाल है, दोनों को उनकी विधवा मां ने पाला, पर दोही बरस पीछे वह भी मरगई। इन बच्चों के बाप चार भाई थे, उनमें से एक की तो रांड बैठी है और दूसरे का जमनादास नाम का एक लड़का है, तीसरा गुरू बख्श अभीतक जीता है, रांड तो अपने बाप के ही घर रहती है, और जब आती है तो लड़ती भिड़ती ही आती है, रहे इन बच्चों का चाचा और चाचा का बेटा, उन्होंने तो इनको खूब ही लूटा, जो कुछ जमा पूंजी इनकी मां ने छोड़ी थी सब हज़म कर लिया, वह तो ज़मींदारी को भी हड़प कर जाना चाहते थे और इनकी जान तक के लागू होगये थे, पर इन बच्चों की बूआ चम्पा इनको यहां अपने घरले आई, रहे तो यहां भी दास दासियों के समान ही पर इनकी जान तो बच गई। बरस दिन पीछे इनकी बूआ भी मरगई, पीछे इनके फूफाने इनके चाचा पर नालिश करके इनका कुछ माल भी उगलवाया और ज़मीन पर भी कब्ज़ा पाया, अब वह ही इनका फूफा अपना ब्याह कराने की फ़िकर में हुवा, ५० के क़रीब उमर आगई है, कौन ऐसे बुड्ढे को अपनी लड़की दे, और जो कोई देना भी चाहता है तो सात हज़ार

मांगता है। तीन चार हज़ार तो दे भी दे पर बड़ी जातियों में तो लड़कियों का मोल ही बहुत बढ़गया है, तब लाचार उसने प्रसन्नी के बदले में ही अपने ब्याह का जोड़ मिलाया है।

यह जो ब्याहने आया है रामानन्द जिसका नाम है, अपने गांव में तो वह भी अमीर ही बजता है, उमर भी ४०, ५० के बीच में ही है, सुना है इसको गर्मी की बीमारी होगई थी, उस ही से फिर कोढ़ चूने लगा, इसकी औरत कोभी यह ही बीमारी लग गई थी पर वह तो चलबसी और इसको ब्याह करने की सूझी, पर कोढ़ी को कौन अपनी लड़की दे, अब और सुनो कि इस ही रामानन्द के भी एक भाई था, जिसका कोई बेटा तो है नहीं एक विधवा बेटी है जिसके सास ससुर सब मरगये हैं एक छोटी ननंद रामप्यारी रह गई है जिसकी सगाई उसने प्रसन्नी के फूफा भैरोंदयाल से करदी है और उसके बदले में भैरोंदयाल ने प्रसन्नी का ब्याह रामप्यारी की भावज के चाचा इस रामानन्द से ठहरा दिया है जिसकी यह बारात आई हुई है, इस ब्याह के पंद्रह दिन पीछे भैरोंदयाल का भी ब्याह होजावेगा और दोनों का बदला चुक जावेगा।

इन दोनों अभागी लड़कियों की यह व्यथा सुनकर दुलारी के हृदय में बहुत ही भारी चोट लगी, और रोकर भग्गो से पूछने लगी कि माई अगर तुम्हारी प्रसन्नी का ब्याह इस कोढ़ी से न होकर किसी योग्य वर के साथ ही हो तो तुम्हारी समझ में कैसी बात हो।

भग्गो-बेटी यह तो अच्छी ही बात हो, पर इसने ऐसे भाग कहां किये हैं जो घर आई बारात टलजाय। हाय हाय कैसी फूलसी लड़की बुड्ढे कोढ़ी को ब्याही जाती है इस बात के

विचार करने से मेरी तो छाती भर भर आती है, पर ऊंची जात वालों में तो ऐसी ही बातें होती रहा करती हैं। अभी एक ऊंची जात की रांड ने बच्चा जनकर और अपने हाथ से मारकर जंगल में फेंक दिया है कैसा सुन्दर बच्चा था मुझे तो उस बच्चे को देखकर भी रुवाई ही आती थी और हाथ जोड़कर बार बार यह ही कहती थी कि भगवान चाहें नरक में भेज देना पर किसी ऊंची जात में पैदा न करना जिससे ऐसे ऐसे महा कुकर्म करने पड़ें।

दुलारी-जो इस तुम्हारी प्रसन्नी को कोढ़ी से ब्याही जाने से बचाने के वास्ते कुछ भाग दौड़ करनी पड़े तो करोगी भी।

भग्गो-हां हां जो इसकी जान बचे तो मैं तो रातों रात दस कोस तक भागी चली जाऊं और जिसको कहो उसको बुलाकर लाऊं, पर इसका कौन बैठा है जो आवे और इसकी जान बचावे।

गौरा-स्वयम देवी आई है इसके बचाने को तो।

भग्गो-कहां है वह देवी और तुम कौन हो।

दुलारी-अभी हम नहीं बता सकी हैं कि कौन हैं, पर तुम चुपके से प्रसन्नी से जाकर कहदो कि घबरावे नहीं, उसकी जान बच जायगी, पर देखना उसके सिवाय अन्य कोई इस बात को नसुने।

यह कहकर दुलारी और उसकी दासियां तो वहां से चलदीं और भग्गो ने अन्दर जाकर प्रसन्नी से कहदिया कि तेरी जान बचाने के वास्ते तो स्वयम देवी मय्या आने वाली है, अभी अभी तीन भूतनियां कहीं आकाश से उतर कर कूंवे

पर आई थीं जो इतनी बात बताने के वास्ते मुझे तेरे पास भेजकर अदृश्य होगई हैं। प्रसन्नी यह बात सुनकर चकित सी रहगई और उधेड़ बुन में पड़गई, अन्त को उसके मन को कुछ ढारस ज़रूर होगया कि कुछ हो यह व्याह नहीं होने पायेगा, और आखिर को होते २ उसने यह भी विचार कर लिया कि अगर कोई सहायता को भी नहीं आयगा तो स्वयम साहस करूंगी और फेरे नहीं होने दूंगी। इस प्रकार इधरतो प्रसन्नी अपनी हिम्मत बढ़ा रही थी और बाहर भग्गो पिसनहारी सब से काना फूसी करती फिरती थी कि आज फेरों के वक्त देवी आवेगी और प्रसन्नी को अपने विमान में बिठाकर ले जावेगी इस कोढ़ी से फेरे नहीं होने देगी।

उधर दुलारी दासियों के साथ गांव के लोगों के पास गई और दुहाई दी कि तुम्हारे गांव में ऐसा भारी जुल्म होने वाला है, तुमको उचित है कि अपने कर्तव्य को पालो और अपने गांव में ऐसा अधर्म न होने दो। लोगों के हृदय में दुलारी के इस कहने की चोट तो बहुत लगती थी परन्तु प्रसन्नी के फूफा के मुक़ाबिले में किसी का भी हेठ नहीं पड़ता था और इन नंग धड़ंग स्त्रियों का कुछ प्रभाव भी नहीं पड़ता था। इस वास्ते सब ने इनकी बात को वैसे ही टालदी, आखिर यह स्त्रियां वापस चली आई और फेरों के वक्त जब वर और बाराती अन्दर हवेली में गये तो यह भी उनके पीछे २ चली गई। अन्दर पहुंचते ही दुलारी एक दम ललकार कर बोली कि यह विवाह नहीं होगा तुम सब लोग वापस चले जाओ। फिर दासियां भी बोल पड़ीं कि देवी की आज्ञा है, यह व्याह नहीं होगा, नहीं होगा, बिल्कुल नहीं होगा।

इनका यह ललकारा सुनकर प्रसन्नी उछल पड़ी और

देवी मय्या की जय जय कहती हुई एकदम भागकर बाहर आई और दुलारी के पैरों में जापड़ी। जय जयकार की आवाज़ सुनकर मकान के बाहर बैठे हुए कंगले भी देवी के आने का निश्चय करके जय जयकार करने लगगये, जिससे गांवभर में ही जयकारे की गूंज होगई।

दुलारीने प्रसन्नी को उठाकर छातीसे लगया और प्रसन्नी भी गिड़गिड़ा कर यह कहती हुई उसको चिमट गई कि देवी मेरी जान छुड़ाओ, इन क़साइयोंसे मुझे बचाओ जो मुझे बुड्ढे कोढ़ीके साथ व्याहते हैं और कुछ भी दया हृदय में नहीं लाते हैं। इस-पर दुलारी उसको धीरज बंधाने लगी कि अब तुझ पर कोई ज़बरदस्ती नहीं हो सकती है अब तू कोढ़ी के साथ नहीं व्याही जा सकती है, यह दृश्य देखकर बराती हैरान थे कि यह नंग धड़ंग स्त्रियां कौन हैं और गांववाले भी मन ही मन विचार रहे थे कि हमने तो इनको कंगली समझा था, परन्तु यह तो कोई अलौकिक ही शक्ती मालूम होती हैं।

इतने में प्रसन्नी के फूफा ने चिल्लाकर कहा कि कौन हो तुम जो बिना पूछे अन्दर मकान में घुस आई हो, निकल जाओ एकदम यहां से नहीं तो थाने में पकड़वा दी जाओगी, फिर प्रसन्नी से बोला कि हट यहां से और चल अन्दर नहीं तो तेरी हड्डी पसली एक कर दूंगा इस पर रामानन्द भी खूब चिल्ला २ कर कहने लगा कि देखते क्या हो निकालते क्यों नहीं हो एक-दम धक्के देकर इन ठगनियों को। इस पर बरात के कुछ आदमी इनको निकालने के वास्ते उठने ही को थे कि दुलारी कड़ककर बोली कि लोगो तुम भी बेटा बेटी वाले हो, धर्म कर्म रखते हो, ईश्वर से डरते हो, तो क्या तुम अपनी आंखों के सामने ऐसा

अन्याय होता देख सके हो ? मां बाप सब के मरते आये हैं, कौन जानता है किस अवस्था में किसके बच्चे माता पिता विहीन हो जांय, असहाय और अनाथ हो जांय, बेटा बेटी वालो डरो परमेश्वर के ग़ज़ब से, बैठे बैठे तमाशा मत देखो, यह पुरुषों का धर्म नहीं है। साहस करके उठो और क़साई से गऊ को छुड़ाओ, नहीं तो इसका कलंक तुम्हारे ही ऊपर रहेगा और परमेश्वर भी तुम से रूठ जायगा।

दुलारी की यह बातें सुनकर सब ही का हृदय कांप उठा और यह ही विचार होने लग गया कि सब के सब चाहें तो यह ब्याह तो रोक ही दिया जावे, इतने में प्रसन्नी का फूफा गुस्से में भरा हुवा दुलारी की तरफ़ झपटा और किचकिचा कर बहुत ही ज़ोर के साथ प्रसन्नी की बांह पकड़ कर उसको खींचकर वहां से हटाने लग गया। परन्तु दुलारी ने उसको ऐसा चिपटा लिया कि वह किसी प्रकार भी न छुड़ा सका, तब उसने लात घूसों से मारना शुरू कर दिया। दुलारी ने उसकी सब मार खाई पर प्रसन्नी को नहीं छोड़ा, इतने में दासियां बीच में पड़ गईं और सारी मार अपने ऊपर झेलने लगीं, और ज़ोर २ से कहने लगीं कि चाहें जो करलो पर प्रसन्नी का ब्याह इस बुड्ढे कोढ़ी से नहीं हो सकता है। इस पर लोगों ने उठकर प्रसन्नी के फूफा को अलग हटाया और आश्चर्य के साथ इन स्त्रियों से पूछा कि तुम कौन हो जो इस प्रकार अपनी जान तक आड़ रही हो।

दुलारी—हम कोई हों, पर क्या प्रत्येक मनुष्य का यह धर्म नहीं है कि अगर किसी पर जुल्म हो रहा हो तो उसे बचावे, किसी की गर्दन पर आरा चल रहा हो तो उसे छुड़ावे ? लोगो

तुम भी अपने कर्तव्य का पालन करो और प्रसन्नी को इन राक्षसों के हाथ से बचाओ।

इस पर बहुत से लोग उठ खड़े हुवे और यह कहते हुवे वहां से चलने लगे कि हमतो अपनी आंखों इस जुल्म को देख नहीं सक्ते हैं, इस वास्ते जाते हैं पीछे जो चाहे होता रहो।

दुलारी–मर्द होकर मर्दों वाली बातें करो, किसी पर जुल्म होता देखकर भाग जाना यह मर्दों का काम नहीं है, मर्द बनते हो तो अपने सामने इस जुलम को हटाकर जाओ।

दुलारी के ऐसा कहने पर वह ठठक कर कहने लगे कि यह तो ब्याह नहीं है, साक्षात ही महा अन्याय है, इस वास्ते बिरादरी वालों का यहां ठहरने का क्या काम है। इस पर प्रसन्नी के फूफा और रामानन्द ने पैरों में पड़ पड़ कर और हाथ पकड़ २ कर उनको ठहराना चाहा और बहुत कुछ वावैला मचाया कि अगर बिरादरी को यह व्याह मंजूर नहीं था तो पहले ही क्यों नहीं रोक दिया था, जिससे हमारा हज़ारों रुपया तो खर्च न होता और बारात को बुलाने और लाने का ढंढस तो न करना पड़ता। इस प्रकार वह बहुत ही चिल्लाये परन्तु बिरादरी के लोग न ठहरे और फिर बराती भी उठ उठकर चलने लग गये।

अब लाचार रामानन्द की सलाह से प्रसन्नी का फूफा थानेदार को तीन सौ रुपय रिश्वत का देना करके बुला लाया और उसकी मदद से फेरे फेरना चाहा, थानेदार ने दुलारी और उसकी दासियों को देखकर यह ही समझा कि यह कोई आवारा फिरती बदमाश औरतें हैं, जिनको किसी आदमी ने

लालच देकर भेजा है जो आपही प्रसन्नी को व्याहना चाहतीं है। ऐसा समझकर उसने इन तीनों स्त्रियों को पकड़ लिया और आवारा गर्दी में चालान करके बहादुरगढ़ की कचहरी में लेचला और कहचला कि अब तुम मेरे पीछे बेखटके फेरे फेरलेना और कुछ भी डर मत करना, इस पर प्रसन्नी ने शेरनी की तरह गरज कर कहा कि मेरे हाथों में भी हथकड़ी डालो और इनही के साथ लेचलो नहीं तो मैं अपघात करलूंगी और तुम सबको फांसी दिलवाऊंगी। उसकी इस बात से थानेदार भी डरगया और यद्यपि उसको साथ नहीं लेगया परन्तु यह ज़रूर समझा गया कि अभी जल्दी मत करना, बल्कि इन तीनों स्त्रियों को सज़ा होजाने के पीछे तब ही व्याह करना जब प्रसन्नी अच्छी तरह ढीली होजावे।

जिस समय यह स्त्रियां कचहरी में लाई गई तो सबने ही यह समझा कि वास्तव में यह कोई ठगनियां ही हैं, परन्तु जब दुलारी ने हाकिम के सामने बड़े हौसले के साथ तक़रीर करी तो लोग हैरान होगये और यह विचारने लग गये कि यह तो वह ही रामदुलारी मालूम होती है जो समाचार पत्रों में प्रसिद्ध हो रही है, इस कारण उन्होंने वकील बैरिस्टरों को ख़बर पहुंचाई जो तुरन्त ही आये और इन स्त्रियों की तरफ़ से पैरवी करने को तैय्यार होगये, परन्तु उस समय तो मुक़द्दमा समाप्त होकर फ़ैसला लिखा जा रहा था, इस वास्ते कुछ न करसके। तो भी अपील होने का भय करके हाकिम ने इतना ज़रूर किया कि छै छै महीने की कड़ी क़ैद की सजा जो वह करना चाहता था उसके स्थान में दो दो महीने की सादी क़ैद की ही सज़ादी।

वकीलों ने तुरन्त ही जज के यहां अपील करके उनको

ज़मानत पर छुड़ाना चाहा परन्तु जज कचहरी से उठ चुका था अगले दिन इतवार था इस वास्ते उनको दो दिन जेल में ही रहना पड़ा, तीसरे दिन अपील करके बैरिस्टरों ने उनको अपनी ज़मानत पर छुड़ा लिया, और खुद जाकर और कपड़े पहना कर उनको बड़ी इज्ज़त के साथ जेल से ले आये और बाबू शेरसिंह की कोठी में ठहराया, अगले दिन अपील पेश हुई और दुलारी ने खुद सब हाल जज को सुनाया, जिस पर जज ने वह मुक़दमा ज़िले के हाकिम के पास वापस भेज कर स्वयम पूरी पूरी तहक़ीक़ात करने का हुक्म दिया। तहक़ीक़ात होने पर सब हाल दुलारी के कहने के अनुसार ज्यों का त्यों खुल गया, और जज ने उनको बड़ी प्रतिष्ठा के साथ जुरम से बरी करके छोड़ दिया और साफ़ २ लिख दिया कि प्रसन्नी के फूफा को ज़बरदस्ती उसका ब्याह करने का कोई अधिकार नहीं है। उसको चाहिये कि अदालत के द्वारा अव्वल तो वह उसका (रक्षक) वली बने फिर ब्याह करने की इजाज़त लेवे, तब ब्याह कर सके, रामानन्द जैसे बुड्ढे कोढ़ी के साथ ब्याह करने में तो वह बड़ा भारी ज़ुल्म कर रहा था जिसके रोकने का सब ही को अधिकार है, इस वास्ते इन स्त्रियों ने कोई भी अपराध नहीं किया है किन्तु प्रशंसा का ही काम किया है, थानेदार को भी ऐसा ही करना चाहिये था, अर्थात ज़बरदस्ती को रोककर ब्याह नहीं होने देना चाहिये था, परन्तु उसने तो इसके विरुद्ध रोकने वालियों को ही पकड़ कर चालान कर दिया, इस कारण थानेदार ही अपराधी मालूम होता है जिसकी पूरी पूरी तहक़ीक़ात होकर उचित दंड दिलाना चाहिये।

जेल से छूटने के बाद दुलारी ने यहां ठहर कर अनाथ

संरक्षणी सभा क़ायम की जिसका उद्देश्य यह रक्खा गया है कि वह देश भर के सब ही अनाथ बालक बालिकाओं की और उनकी सर्व प्रकार की सम्पत्ति और स्वत्वों की रक्षा करे पीछे से इस सभा ने अपनी अनथक कोशिश से प्रत्येक ज़िले में अपनी एक शाखा सभा बनाई जो अपने ज़िले के सब ही अनाथों की निगरानी रक्खे, जिन अनाथों का कोई सम्बन्धी उनके पालन पोषण का भार अपने ऊपर न लेता हो वा अच्छी तरह पालन न करता हो उनके वास्ते अनाथालय खोले और अनाथों के विवाह की भी पूरी २ देख भाल और योग्य प्रबन्ध रक्खे और १८ बरस की उमर से पहले तो उनका ब्याह ही न होने दे, जिससे जवान होने पर वह स्वयम भी अपनी जोड़ी पसन्द करने के योग्य हो जावें।

२४--विरोधी सभा।

बहादुर गढ़ से फ़राग़त पाकर दुलारी शहज़ादपुर चली गई जहां से उसको बार बार बुलावा आरहा था। शहज़ादपुर भी एक बहुत बड़ा शहर है परन्तु वहां कोई भी सुधार की बात नहीं चलने पाती थी। कारण यह कि वहां मदन गोपाल नाम के एक करोड़ पति सेठ का बड़ा भारी प्रभाव था जो सब गुण पूरे और रंगीले आदमी थे। नित्य नई २ रंडियों का नाचना गाना होता था और शराब का दौर चलता था। इसही के साथ सेठ जी नित्य सुबह उठते ही मंदिर में जाकर ठाकुरों को भोग लगाते, शिवजी को जल चढ़ाते और चरणामृत लेकर आते थे, अनेक प्रकार का धर्मानुष्ठान भी कराते रहते थे। एकादशी और अमावश्या को ब्राह्मण जिमाते और नाना प्रकार के जप भी कराते रहते थे, बरस में दसियों बार रासलीला होती,

गोपी रमण और चीर हरण का दृश्य देखते, ठाकुरों की सवारी बड़ी धूम धाम से निकलवाते, शिवरात्रि का मेला कराते, तुलसा का व्याह रचाते और काली माई पर बकरे और शराब चढ़ाते थे, साधु सन्त भी दो चार सदा उनके यहां पड़े ही रहा करते थे, इस प्रकार सबही रंग के आदमी उनके यहां आते थे और सेठजीकी बड़ाई गाते थे।

परन्तु उनके पास आने वालों को यह भय ज़रूर लगा रहता था कि कोई सुधार की बात इनके कान में न पड़ने पावे जिससे सारा मज़ा ही किरकिरा हो जावे। इस वास्ते पण्डित पुजारी, वैरागी, सन्यासी, शराबी कबाबी, व्यसनी, व्यभिचारी सब ही उसके सामने सुधारकों की बुराई करते रहा करते थे और नगर भर में भी सेठ साहब की बड़ाई गाते थे और सुधारकों से घृणा दिलाते रहा करते थे। इस प्रकार यह सारा शहर ही सेठ साहब के मत का हो रहा था, दस बीस पढ़े लिखे बाबू, दो चार पंडित और बीस तीस साधारण लोग जो इनके तरीके के ख़िलाफ़ थे और कुछ सुधार चाहते थे उनकी नगर के लाखों आदमियों के सामने क्या चल सकती थी, इस वास्ते मन की बात मन ही में रखते और कुछ भी नहीं बोलते थे, परन्तु दो तीन बरस से पंडित वासुदेव नाम के एक लायक़ वकील के आने से यहां भी कुछ समाज सुधार की बात उठने लग गई थी, और मित्र मंडल नाम की एक सभा भी स्थापित हो गई थी, जिसमें अभी तक बड़ी मुश्किल से २५ ही आदमी शामिल हो सके थे। इस मंडल ने सबसे पहली बात सुधार की यह उठाई थी कि वेश्याओं के नाच की [illegible] की जावे और जहांतक हो सके भले आदमियों में इनका [illegible]ाना बन्द कराया जावे।

मंडल की इस बात पर शहर के लोग बहुत बिगड़े और बहुत से पंडितों ने तो शास्त्र की दुहाई देकर यह व्यवस्था ही दे डाली कि जिस प्रकार सतयुग में अप्सरायें देवताओं को नाच गाकर रिझाती थीं इस ही प्रकार इस युग में यह वेश्यायें भक्तजनों को प्रेम रस पिलाकर ईश्वर की भक्ती में लगाती हैं। पंडितों की इस व्यवस्था से वेश्या नृत्य का प्रचार और भी ज़्यादा बढ़ागया था और नगर भर का चलन बहुत ही ज़्यादा बिगड़ गया था। इस ही कारण मंडल ने बड़े तक़ाज़े के साथ दुलारी को बुलाया था कि उसके दैवी तेज से ही यहां के लोगों की दशा सुधर जाय।

दुलारी के आने की बात सुनकर तो चलते पुरज़ों ने बड़ा ही भारी हुलड़ मिचाना शुरू कर दिया, उसको महा कलंकनी बताकर लोगों को उससे घृणा करानी प्रारम्भ करदी, गली २ यह कहते फिर गये कि जो कोई उसका मुख भी देख पावेगा वह सीधा नरक को जावेगा, बल्कि किसी २ ने तो यहां तक घड़ंत घड़ दी कि शास्त्रों में जिस प्रकार कलंकी अवतार पैदा होने का वर्णन है ऐसा ही कलंकनी के पैदा होने का भी कथन है, जिसके सब लक्षण इस दुलारी में मिलते हैं और उसके प्रगट होने का समय भी यह ही निश्चय होता है, इस कारण यह ही वह कलंकनी है जो जहां जहां को जावेगी वह धरती भी पापमय होती चली जावेगी।

ऐसी २ बातों से शहर वाले उसका यहां आना बहुत ही अशुभ समझने लग गये, और जब वह रेल से मोटर में बिठाकर गाजे बाजे के साथ शहर में लाई गई तो उस पर कंकर पत्थर और खाक धूल फेंकी और रात को मोती मुहल्ले की धर्मशाला में धर्म संरक्षणी नाम की एक बहुत बड़ी सभा जोड़ी, जिसमें

शहर के सब ही लोग जमा हुवे, दुलारी ने भी उस सभा में जाने का इरादा किया, जिस पर मंडल वालों ने बहुत रोका परन्तु वह न मानी और जाने के वास्ते तय्यार ही हो गई तब मंडल के लोग लाचार होकर बाबू नन्दकिशोर के पास आकर उन से प्रार्थी हुवे कि आप भी सभा में जांव और दुलारी के साथ किसी प्रकार का दंगा फ़िसाद न होने देवें।

बाबू नंदकिशोर एक नामी बैरिस्टर थे, मध्यस्थ प्रकृति के आदमी थे किसी भी पार्टी में शामिल नहीं थे, सब ही से मिलते थे, सब ही के काम आते थे, शान्ति प्रिय थे और शहर के हाकिम और सब ही प्रतिष्ठित लोग उनका लिहाज़ करते थे। उन्होंने दुलारी को अपने साथ सभा में ले जाना मंजूर कर लिया और रास्ते में से डिप्टी बांकेराय और रायबहादुर गुलाबचन्द एडीशनल जज को भी साथ ले लिया, सभा में ठसाठस आदमी भरा हुवा था, तिल धरने को भी जगह नहीं थी, तो भी इन लोगों के पहुंचने पर छीड़ होती चली गई, सेठ मदन गोपाल ने स्वयम आगे बढ़कर इनका स्वागत किया और उच्च आसन दिया, और बाबू नन्दकिशोर ने दुलारी और उसकी दासियों को सभापति के पास लेजा कर बिठाया और बहुत कुछ सन्मान दिखाया।

थोड़ी देर बाद पंडितों का व्याख्यान शुरू हुवा जिसमें उन्होंने धर्म की दुहाई दे देकर यह ही कहा कि प्राण जायं तो जायं परन्तु हमको अपने बड़ों का धर्म नहीं छोड़ना है, पश्चिम की रीति नीति को ग्रहण करके ईसाई नहीं बनाना है, अपनी कन्याओं और स्त्रियों को निर्लज्ज नहीं बनाना है, यहां के लोग तो शील ही को स्त्रियों का भूषण मानते हैं, जिसके शील नहीं

उसका तो मुंह भी देखना नहीं चाहते हैं, यहां के लोग तो सदा से धर्म पर जान देते आये हैं और अब भी जान देने को तय्यार हैं, आज कल पादरियों ने हमारी स्त्रियों को बहकाने का बड़ा भारी बीड़ा उठाया है और अनेक कुल कलंकनी स्त्रियों को लालच देकर इस काम के वास्ते नियत किया है, इस वास्ते सावधान हो जाओ, अपने २ घरों को बचाओ, नहीं तो सर्वनाश हो जायगा, बड़ों का चलाया हुवा धर्म खाक में मिल जायगा, इत्यादि।

व्याख्यान के समाप्त होने पर दुलारी ने धन्यवाद स्वरूप कुछ कहना चाहा, जिस पर बाबू गुलाबचन्द ने कहा कि हम तो धन्यवाद मात्र ही नहीं किन्तु आपका विस्तृत उपदेश सुनना चाहते हैं। जज साहब के मुख से यह शब्द निकलते ही सेठ मदन गोपाल भी दुलारी से प्रार्थना करने लगे कि अवश्य अपना मनोहर उपदेश सुनाकर सभा को कृतार्थ करो। फिर खुशामद में आकर दो चार पंडितों ने भी उठकर यह ही इच्छा प्रगट की किन्तु दुलारी ने उत्तर में यह ही कहा कि समय बहुत बीत गया है, सब लोग थकित और आकुलित मालूम होते हैं इस कारण इस समय तो धन्यवाद स्वरूप ही कुछ कहा जाता है, कल की सभा में अगर मौका मिला तो विस्तार के साथ कहा जासकता है, आज के व्याख्यानों में पंडित महाशयों ने लोगों को धर्म पर दृढ़ रहने और उसको अपनी जान से भी अधिक प्यारा समझने का उपदेश दिया है। इसके वास्ते मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देती हूं, इस ही प्रकार पंडित महाशयों ने शील की प्रशंसा करके उसको स्त्री का भूषण बताया है, मैं कहती हूं कि भूषण क्या इसके बिदून तो स्त्री स्त्री ही नहीं है किन्तु कुत्ती सूरी और इससे भी अधिक

घृणित और नीच है, पंडित महाशयों ने ऐसी नीच स्त्रियों की शकल देखने की मनाही की इसके लिये मैं उनको जितना भी धन्यवाद दूं वह थोड़ा है। मैं तो लाख जिह्वा से भी उनको धन्यवाद देकर तृप्त नहीं हो सक्ती हूं और प्रार्थना करती हूं कि कल की सभा में वह इस विषय पर और भी ज़्यादा ज़ोर दें और महा व्यभिचारिणी वेश्याओं की शकल देखना तो बिल्कुल ही बन्द करादें।

मेरा तो यह कहना है और केवल मेरा ही कहना नहीं है किन्तु इस बात को तो आप सब मानते हैं कि धर्म तो स्त्री और पुरुष दोनों ही के वास्ते है, दोनों ही को इसका पालन पूर्ण रीति से करना उचित है, दोनों ही को पूर्ण शीलवान होने की ज़रूरत है, मैं आशा करती हूं कि कल की सभा में पंडित गण इस बात को भी स्पष्ट कर देंगे और साफ़ शब्दों में खोलकर बतादेंगे कि जिस प्रकार स्त्रियों का पूर्ण शीलवान होना ज़रूरी है उस ही प्रकार पुरुषों का भी पूर्ण शीलवान होना लाज़िम है, जिस प्रकार कुशीली स्त्री का मुंह नहीं देखना चाहिये इस ही प्रकार कुशीले पुरुष से भी घृणा करनी चाहिये। पंडित महाशयों ने पश्चिम की रीति रस्मों की बुराई करके उनके ग्रहण न करने का उपदेश दिया है, मैं भी उनकी अनेक रीतियों की निंदा करती हूं, विशेष कर विवाह सम्बन्ध जोड़ने की जो उनकी रीति है वह तो बहुत ही घृणित है, मैं प्रार्थना करती हूं कि पंडित महाशय हमारी प्राचीन स्वयम्बर की उत्तम रीति को फिर से चलावें और बाल विवाह की खोटी रीति को बिल्कुल ही हटावें।

इतना कहकर जब दुलारी बैठ गई तो जज साहब ने उसकी बहुत प्रशंसा की और इस पर सेठ साहब ने भी उसकी बहुत

कुछ बड़ाई गाई किन्तु पंडितों के द्वारा अनेक बहाने बनाकर अगले दिन की सभा न होने दी, तो भी दुलारी ने वहां ठहर कर मंडल की तरफ से अनेक सभायें कीं जिससे लोगों के विचार बहुत दुरुस्ती पर आये और मंडल के सभासद् बनकर समाज सुधार में लगगये।

२५–गुमानीलाल का पश्चाताप।

डेढ़ बरस तक इसही प्रकार काम करते रहने के बाद जब दुलारी दक्षिण देश के विजय नगर में काम कर रही थी तो वहां उसको अनेक नगरों में ढूंढता फिरता हुवा गुमानीलाल मिला, आंखें जिसकी अन्दर को गड़ रही थीं, गाल पिचक गये थे, खाल लटक रही थी और बदन में हड्डियां ही हड्डियां रह गई थीं, जिससे अब वह पहचाना भी नहीं पड़ता था और बहुत ही चिन्तातुर हो रहा था। देखते ही वह दुलारी के पैरों में गिरपड़ा और रो रोकर कहने लगा कि मैं वह ही महा पापी गुमानीलाल हूं जिसने तुमको महान दुख दिया है और अब बेशरम होकर अपने अपराध क्षमा कराने आया हूं। दुलारी ने उसको तुरन्त ही अपने पैरों से हटाया और धीरज बंधाकर हाल पूछना चाहा तो उसने यह ही बताया कि मैं अब दुनियां से तंग आगया हूं और यह ही चाहता हूं कि बाकी जीवन परोपकार में ही बिताऊं और अपनी सारी सम्पत्ति भी इसही में लगाऊं, इसही बात की सलाह लेने मैं तुम्हारे पास आया हूं।

दुलारी–मालूम होता है कि किसी असह्य कष्ट के कारण ही आप का ऐसा विचार हुवा है, इस वास्ते मुनासिब है कि पहले तुम्हारी सारी व्यथा सुनूं तबही कुछ सलाह दूं।

गुमानीलाल-(टप टप आंसु बहाकर) देवी मैं तुमको अपनी व्यथा क्या सुनाऊं और कहांतक अपनी फूटी क़िस्मत का गीत गाऊं, मैंने जो वह उत्तम चन्द की लड़की ब्याह ली है उसही ने मेरी सारी इज्ज़त ख़ाक में मिला दी है, वह तो नित्य ही नया गुल खिलाती है और ज़रा नहीं शर्माती है। यदि समझाता हूं धमकाता हूं तो धरती आकाश एक कर देती है, मुहल्ले भर को इकट्ठा करलेती है, और मुंह फट होकर मुझ पर ही झूठे सच्चे दोष लगाने लगजाती है, मेरे गुमाश्तों कारिन्दों नौकरों चाकरों पर भी जो चाहे घृणित से घृणित दोष लगा देती है जिससे उनको भी अपनी इज्ज़त भारी होजाती है, इस ही से वह दस दिन भी नहीं टिकते हैं और नित्य नये ही रखने पड़ते हैं। शहर की सबही चालाक औरतें उसके पास आती हैं और गुप्त रूप से मन माना उपद्रव मचाती रहती हैं जिससे मुझको लोगों के सामने आना भी भारी होगया है और अपघात करलेने को ही जी चाहता है।

यह सब बातें सुनकर दुलारी ने उसको कई दिन तक अपने पास ठहराया संसार का ऊंच नीच समझाया और फिर इस ढब पर लाना चाहा जिससे सबसे पहिले वह अपना सर्व प्रकार का दुराचार छोड़कर सदाचारी बनजावे फिर अपनी स्त्री को क़ाबू में लावे और सदाचारी बनावे, परन्तु गुमानीलाल ने रो रोकर बार बार इसका उत्तर यह ही दिया कि मैंने तो अपना सब दुराचार छोड़ दिया है, सब प्रकार से अपने को क़ाबू में कर लिया है और इससे भी ज़्यादा जिस प्रकार तुम कहो अपने को साधने को तैय्यार हूं परन्तु उस दुष्टा को तो किसी प्रकार भी क़ाबू में नहीं ला सकता हूं और न उसके साथ ही रह सकता हूं।

इस प्रकार जब दुलारी समझाते २ लाचार होगई तो वह गुमानीलाल के साथ उसके नगर को गई और वहां ठहरकर चन्द्रमुखी को शिक्षा देने लगी, जो पहिले तो कुछ भी न मानी परन्तु जब उसको निश्चय होगया कि उस ही से तंग आकर गुमानीलाल अपनी सारी सम्पत्ति परोपकार में लगाने को तय्यार हो रहा है और उसको सर्वथा त्याग कर अपना अगामी जीवन भी ब्रह्मचर्य में ही बिताना चाहता है तो वह डरी और कुछ ढब पर आई। दुलारीभी उसको अनेक प्रकार की नीति दखाकर सीधे मार्ग पर लाई, उसकी शिक्षा में बहुत ही ज़्यादा जान लड़ाई तब छे महीने पीछे वह कुछ क़ाबू में आई, लज्जा शीलता और आत्म सन्मान की क़दर उसके हृदय में जमाई, गुमानीलाल को भी दया समझाकर गृहस्थ में लगाया और स्त्री पुरुषों का सलूक कराकर यह ही निश्चय कराया कि यदि तुम खुद सुशील रहोगे और सुशीलता को ही अपना सर्वस्व समझोगे तो तुम्हारी स्त्री भी तुमसे दबैगी और तुम्हारी इच्छा के अनुसार चलती रहेगी। अबतक तो तुम भी उससे कुछ कम दोषी नहीं रहे हो इस वास्ते जिस प्रकार अपने पिछले दोषों को भुलाना चाहते हो इस ही प्रकार उस के भी दोषों को भूलजाओ और अगामी के वास्ते दोनों ही सुशील बनजाओ और भले मनुष्यों की तरह उत्तम रीति से घर चलाओ, यहां भी भले कहलाओ और आगे को भी अच्छी गति पाओ।

इस प्रकार गुमानीलाल का तो घर सुधर गया और वह अपनी स्त्री के साथ सुखचैन से रहने लग गया, परन्तु यह बात उसके हृदय में कुलबुलाती रही कि जिस प्रकार वेश्याओं के चक्कर में पड़कर मैंने अपना धर्मकर्म डुबोया था इस ही प्रकार और भी तो अनेक पुरुष ऐसे हैं जो इनके फंदे में फंसकर अपना

जन्म कर्म खोते हैं, और जब तक यह वेश्यायें रहैंगी तबतक इस ही प्रकार अनेक पुरुष अपने को नष्टभ्रष्ट करते रहैंगे। इस कारण वेश्याओं का होना ही क्यों न बंद किया जावे, जिस प्रकार मेरा उद्धार हुआ है इस प्रकार सब ही का उद्धार क्यों न किया जावे, ऐसा जोश हृदय में लाकर उसने दुलारी से आग्रहके साथ प्रार्थनाकी और अपने प्रायश्चित्तरूप अपनी आधी सम्पत्ति इस महान कार्य के अर्थ अर्पण करदी जब दुलारी ने वेश्याजन्म सुधारनी नाम की एक सभा स्थापित की जिसके द्वारा इस बात का भारी बीड़ा उठाया कि वेश्यायें बस्ती के अन्दर न रहने पावें, कोढ़ियों की तरह से बस्ती के बाहर ही अपनी आबादी बसावें, और कोई भी भला मानुष्य उनके पास न जावे और न नृत्य आदि के वास्ते अपने यहां बुलावे और जो कोई पुरुष उन वेश्याओं के पास जावे वह नीच समझा जावे, सब कोई उसकी संगित से घृणा खावे और उससे बात करने तक से लजावे।

सभाने अपने इस प्रस्ताव का बहुत ही ज़्यादा प्रचार किया, नगर नगर और ग्राम ग्राम में वेश्याओं को बस्ती से बाहर निकलवाया, और फिर कुछ दिन पीछे कई स्थानों में वेश्या सुधार आश्रम भी स्थापित किये जिनमें वह वेश्यायें आकर रहैं जो दुराचार और व्यभिचार को छोड़कर सदाचारी बनना चाहें, इस समय जगह २ उनकी भारी बेक़दरी होजाने से सबही वेश्याओं को सदाचारी बनने की ज़रूरत पड़ गई थी, इस कारण शीघ्र ही यह सब आश्रम ठसाठस वेश्याओं से भर गये और अन्य अनेक स्थानों में आश्रम खोलने की आवश्यक्ता होगई। इन आश्रमों में आई हुई वेश्याओं को हाथ की मिहनत से रोज़ी कमाना, रूखा सूखा खाना, मोटा झोटा पहिनना,

संतोष से रहना, इन्द्रियों को बश में रखना, विषयासक्त न होना, मनुष्यत्व को जानना और उसको प्राप्त करना, आत्म-सन्मान पैदा करना और उसके वास्ते सर्व प्रकार की आपत्ति झेलना, सब कुछ सहन करना परन्तु अपनी इज़्ज़त आबरू नहीं खोना, आदि उच्च भाव पैदा कराये जाते थे और अनेक प्रकार की दस्तकारी सिखाकर मिहनत मज़दूरी से पेट भरने का अभ्यास कराया जाता था, इसही कारण थोड़े ही दिनों में यह आश्रम अपना खर्च आप ही चलाने लग गये थे और सभा को अधिक आश्रम खोलने का सुभीता होता जाता था।

तीन बरस तक इस आश्रम में रहने के बाद जो वेश्यायें इस योग्य होजाती थीं कि सदाचार के साथ गृहस्थी चला सकें उनको किसी पुरुष से विवाह करलेने की इजाज़त हो जाती थी और विवाह होने के बाद अब वह आनन्द से बस्ती के अन्दर ही आकर रहती थीं और सभ्य ही समझी जाती थीं।

अपनी दासियों के आचार व्यवहार से संतुष्ट होकर दुलारी ने अब उनका भी विवाह करादिया जिस से वह भी अब सुख चैन से रहने लग गई।

दुलारी ने अपनी बाक़ी उमर भी इसही प्रकार स्त्री सुधार और सदाचार के प्रचार में ही बिताई जिसकी विस्तृत कथा यदि पाठकोंने इस प्रथम पुस्तककी क़दर करके हौसला बढ़ाया तो आगामी दूसरी पुस्तक में बर्णन की जायगी। अन्त में यह रामदुलारी अपने शुभ कर्तव्यों के कारण सदाचार की देवी कहलाई और अब तक इसही नाम से प्रसिद्ध चली आती है और जब तक उसकी कीर्ति रहैगी इसही नाम से प्रसिद्ध रहैगी।

राम दुलारी के मिलने का पता—

लाला ज्योतीप्रसाद सम्पादक जैन प्रदीप देवबन्द (सहारनपुर)

लाला अतरसेन, एडीटर देशभक्त, मेरठ।

लाला पन्नालाल, स्टेशनर व बुकसेलर, दरीबां कला देहली।

बाबू फतहचन्द सेठी, प्रकाशक जैन जगत अजमेर,।

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्य्यालय, हीराबाग गिरगांव बम्बई।

बाबू मोतीलाल पहाड्या, मंत्री वैश्य सुधारक मंडल, कोटा (राजपूताना)।

लाला तिलोकचन्द स्टेश्नर और बुकसेलर शाहीदगंज, सहारनपुर ।

सूरजभान वकील, नकुड (सहारनपुर)।

हिन्दी साहित्य भंडार मल्हीपुर (सहारनपुर)